जेम्स बाण्ड 007

डायमंड क्वीन

एस. सी. बेदी

मूल्य तीन रूपये

प्रकाशक —— विरेन्द्र कुमार जैन

मुख्य पृष्ठ सर्जक—— एन० एस० धम्मी

कम्पोजिंग —— राजलोक कम्पोजिंग एजेन्सी, मेरठ।

मुद्रक —— न्यू श्याम प्रिंटिंग प्रेस।

लेखक —— एस० सी० बेदी

डायमंड क्वीन ——उपन्यास—— एस० सी० बेदी

विनय, भगत सीरीज के इस उपन्यास में आप मिलेंगे, 'जेम्स बाण्ड' से भी।

एक रोमांचक उपन्यास

डायमंड क्वीन

एस० सी० बेदी

यंग लेडी पब्लिकेशन

पदम सदन, ईश्वर पुरी,

मेरठ–२

एक···

राजेश की नजरें अलका के चेहरे पर जमी हुई थी।

अलका पलकें झपकाकर बोली— 'तुम तो मुझे इस तरह देख रहे हो, जैसे आंखों में ही निगल जाओगे।'

'क्या करूं अलका, तुम हो ही इतनी सुन्दर कि इच्छा होती है तुम्हें देखता ही रहूं। गोल, लम्बा चेहरा, कमल समान बड़ी-बड़ी आंखें, गुलाब की पंखुड़ियां जैसे पतले होठ, तीखी नाक, भरे हुए गुलाबी गाल, ऐसा लगता है जैसे फूलों की लाली व ताजगी चुरा ली हो। सुराहीदार गर्दन, उभरे हुए पुष्ट उरोज और भरा हुआ बदन। अलका! तुम इतनी सुन्दर क्यों हो?'

अलका खिलखिलाकर हंस पड़ी, फिर बोली—'इसका उत्तर ऊपर वाले के पास जाने के बाद ही प्राप्त होगा।'

राजेश ने उसके होठों पर हाथ रख दिया—'ऐसा मत कहो, ऊपर जायें तुम्हारे दुश्मन।'

अलका खिलखिलाकर हंस पड़ी, फिर उसकी आंखों में आंखें डालकर बोली— 'तुम मुझे बहुत प्यार करते हो राजेश!'

'अपनी जान से भी ज्यादा।'

'ओह राजेश!' अलका ने उसके गले में बाहें डाल दीं उसके होठों पर होठ रख दिये।

राजेश को ऐसा लगा, जैसे वह हल्का-फुल्का होकर उड़ा जा रहा हो।

एक भरपूर चुम्बन लेकर जब वह अलग हुई तो राजेश उसे आश्चर्य भरी निगाहों से देखने लगा।

'क्या हुआ ?'

'सोच रहा हूं, ऐसी हरकत आज से पहले तुमने कभी नहीं की थी।'

'आज तुम पर इतना प्यार आया कि खुद को रोक न सकी, क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगा राजेश ?'

'मुझे याद है एक बार इसी तरह मुझे भी तुम पर बहुत प्यार आया था। उस समय हम एक पार्क में फूलों की झाड़ियों के बीच बैठे हुये थे। तुमने लाल रंग की साड़ी व उसी से मैच करता ब्लाऊज पहना हुआ था। बड़ा सा जूड़ा तुम पर खूब फब रहा था।

उस समय तुम किसी अप्सरा से भी ज्यादा सुन्दर लग रही थी। मैं स्वयं को रोक नहीं सका था और तुम्हारे संगमरमर जैसे जिस्म को बाहों में भरकर तुम्हारे रस भरे होठों का मधु चुराने के लिये अपने होठ तुम्हारे होठों की तरफ बढ़ाये थे, लेकिन तुम छिटक कर अलग हो गई थीं।'

'अभी नहीं राजेश।' तुमने कहा था——

'मगर क्यों ?'

'शादी से पहले यह पाप है। वैसे यह तन–मन तुम्हारा है। जिस दिन ब्याह कर ले जाओगे, तब सब कुछ तुम्हें सौंप दूंगी।'

'राजेश ! उस समय मैंने जो कहा था, गलत नहीं कहा था। उस समय हमारा प्यार नया-नया था। मैं विश्वास कर लेना चाहती थी कि तुम मुझे बीच मंझधार में छोड़ तो नहीं दोगे।'

'और अब ?'

'अब मुझे विश्वास है कि तुम सारी दुनिया छोड़ सकते हो, मुझे नहीं। इसलिये मैं अपना सब कुछ तुम्हें सौंप भी दूं तो कोई अन्तर नहीं पड़ता··· । और···और आज मैं अपना सब-कुछ तुम्हें सौंप देना चाहती हूं।'

अलका ने फिर अपनी गोरी बाहें अब उसके गले में डाल

दीं। राजेश उसकी यौवन से भरपूर गर्म–गर्म सांसें अपने चेहरे पर अनुभव करने लगा।

उसकी नसें तन गईं। ऐसा लगने लगा जैसे नसों में लावा दौड़ने लगा हो।

अलका के गर्म होठों का स्पर्श उसने अपने होठों पर अनुभव किया।

उसकी सांस जैसे उखड़ने लगी थी। वह बोला——'अलका यह ठीक नहीं।'

'क्यों ठीक नहीं, क्या तुम मुझसे शादी नहीं करोगे ?'

'ऐसा तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता।'

'डैडी से मैंने बात कर ली है, वह मुझे तुम्हें सौंपने के लिये तैयार हैं। अतः मैं खुद को तुम्हें सौंप रही हूं तो इसमें क्या हर्ज है ?'

राजेश निरुत्तर सा हो गया। लेकिन उसकी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। उसने आगे बढ़कर उसे बांहों में भर लिया। अलका उससे लिपट गई। राजेश ने कई बार उसे चूम लिया। फिर उसके नाईट गाऊन की डोरी खींच दी।

अलका ने गाऊन व चोली तथा जांघिया स्वयं ही उतार दिया। राजेश ने पहली बार उसके नग्न जिस्म को देखा तो देखता ही रह गया। एक-एक अंग यौवन से भरपूर तथा भरा हुआ था। उभरे हुए पुष्ट उरोज।

राजेश खुद को रोक नहीं सका। उसकी इच्छा उसके अंग-अंग को चूम लेने की हो रही थी। आज तक उसने अपने जिस्म में इतनी उत्तेजना व गर्मी अनुभव नहीं की थी। उसे अपना जिस्म जलता हुआ अनुभव हो रहा था।

'क्या देख रहे हो ?' अलका ने शोख अदा से मुस्कराते हुये पूछा।

'तुम्हारे जिस्म की सुन्दरता को। मैं नहीं जानता था कि कपड़ों के अन्दर तुम इतनी अधिक सुन्दरता छिपाये हुए हो।'

'इस सुन्दरता के मालिक अब तुम हो राजेश। मैं इसे अप-

माने का तुम्हें अधिकार देती हूं।'

अलका ने अपनी बांहें फैला दीं। राजेश ने उसे बांहों में उठाया और पलंग पर लिटा दिया। अलका ने उसे अपने ऊपर खींच कर अपनी बांहों में भीच लिया। राजेश ने उसके होठों को अपने होठों में भींच लिया।

एक भरपूर चुम्बन लेने के बाद जब राजेश ने होंठ हटाये तो वह बोली—'राजेश हम एक महीने के अन्दर-अन्दर शादी कर लेंगे न ?'

'हां··· ।'

वह इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सका। क्योंकि वह इस समय बातें करने की बजाये अलका को जी भरकर प्यार कर लेना चाहता था।

···और वह प्यार करने लगा। प्यार की हर दूरी को वह लांघ गये। फिर निढाल होकर दोनों एक-दूसरे की बगल में लेट गये। दोनों हांफ रहे थे, जैसे बहुत लम्बा सफर तय करके आ रहे हों।

यह भी सफर ही तो था। प्यार का सफर, जिसे दोनों ने एक साथ तय किया था।

तभी काल बैल बज उठी। राजेश चौंक कर बोला—

'अलका ! देखो कौन है।'

अलका ने जल्दी-२ गाऊन पहना और आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया।

एक भयंकर चेहरा दिखाई दिया। कुरूप चेहरा, जिसे देख कर ही आदमी सिहर उठे।

'तुम।'

'हां बेबी, मैं हूं कालिया।' वह गाऊन में से झांकते उसके उरोजों को देखता हुआ बोला।

'लेकिन इस समय तुम्हें किसने आने के लिये कहा था। जानते नहीं, राजेश बाबू इस समय मेरे साथ हैं।'

'अगर मालिक न बुलाते तो मैं कभी न आता।'

'ओह डडी बुला रहे हैं।'

'हां।'

'चलो मैं आती हूं।' कहने के साथ ही अलका ने दरवाजा बन्द कर लिया। कालिया के होठों पर एक भद्दी मुस्कान थिरक उठी। आंखों में एक अजीब सी चमक आकर लोप हो गई। उस का कुरूप चेहरा और भी ज्यादा कुरुप हो गया।

अलका ने मुड़कर देखा—राजेश कपड़े पहन चुका था। कमीज के बटन बन्द करते हुये उसने पूछा—'कौन था ?'

'कालिया कह रहा था डैडी ने बुलाया है।'

'डैडी कोठी में मौजूद हैं।' राजेश एक दम से उछल पड़ा।

'डैडी के नाम से तुम्हें क्यों करेन्ट सा लग गया ?'

'कहीं डैडी को हमारी आज की इस हरकत का पता लग गया तो ?'

'तो वह परसों की बजाये, हमारी कल ही शादी कर देगें।' अलका हंस कर बोली।

'मैं उनकी नजरों से गिर भी सकता हूं।'

'नहीं तुमने उनकी बेटी से प्यार किया है। उसका तो उन्हें गर्व होगा।'

राजेश मुस्करा दिया। फिर बोला—'बातों में तुमसे कोई जीत नहीं सकता। अच्छा अब चलता हूं।'

राजेश ने उसके गाल थपथपाये और बाहर आ गया। अलका का रूख आज उसकी समझ में नहीं आया था। अलका ने आज तक ऐसा व्यवहार नहीं किया था। आज वह बिल्कुल बदली हुई थी। उसने अपना सब कुछ उसे सौंप दिया था।

उसके साथ बिताये गये समय को याद करके एक बार फिर उसकी नसे तन गई।

अलका के डैडी का नाम 'राय बहादुर ओम प्रकाश सिन्हा था। अंग्रेजों के विश्वास पात्र होने के कारण उन्हें राय बहादुर की उपाधी से सुशोभित किया गया था।

चन्दन नगर रियासत उन्हीं की थी। लेकिन जबसे सरकार ने रियासतें खत्म कर दी थीं, वह सिर्फ अपने खानदान के लिये राजा रह गये थे। अतः उसी समय से वह राजधानी में आकर बस गये थे।

राय बहादुर कल शाम ही कहीं बहार से आये थे। कहां से आये थे, कोई नहीं जानता था।

सबेरे नाश्ते के समय अलका से उनकी मुलाकात हुई।

'आओ बेटी बैठो। मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था।'

'क्यों डैडी, आज कुछ खास बात हैं ?'

'नाश्ता शुरु करो बताता हूं।'

अलका कुर्सी पर बैठ कर टोस्ट पर मक्खन लगाने लगी। फिर दो कपों में चाय बनाने के बाद एक कप डैडी की तरफ बढ़ा दिया।

नाश्ता करने के बाद अलका ने पूछा—'अब बताईये डैडी, मुझसे क्या खास काम है ?'

राय बहादुर कुछ क्षण अपनी बेटी को देखते रहे फिर बोले 'बेटी। तुम्हारी मां होती तो मुझे यह बात न करनी पड़ती। मैंने तुम्हें बाप के साथ-साथ मां का भी प्यार दिया है। इसलिये मुझसे किसी बात का संकोच न करना।'

अलका समझ गई कि डैडी उसी के बारे में कोई खास बात करना चाहते हैं। इसलिये वह सम्भल कर बैठ गई।

'बेटी अब तुम बड़ी हो गई हो। यह तो सभी जानते हैं कि बेटी पराया धन होती है। अतः अब मैं तुम्हारे हाथ पीले कर देना चाहता हूं। मैंने एक लड़का देखा है। तुम भी उसे दो तीन

बार देख चुकी हो। वह मेरा बिजनेस पार्टनर है मोहन कुमार भाटिया। अगर तुम्हें पसन्द आये तो हां कर देना।'

'लेकिन डैडी...' वह हिच किचाते हुये बोली 'मैंने अपने लिये लड़का पसन्द कर लिया है। आप तो जानते ही हैं। राजेश से मिल भी चुके हैं।'

'हां।' लेकिन मोहन को परख लेने में कोई हर्ज नहीं। हो सकता है कि वह राजेश से अच्छा जीवन साथी साबित हो। मैंने आज उसे डिनर पर बुलाया है। तुम्हें कोई एतराज हो तो कह दो।'

'जी···जी···मुझे कोई एतराज नहीं है।'

'तो आज शाम को यदि तुम्हारा कोई भी प्रोग्राम हो तो उसे कैन्सिल कर देना।'

'ठीक है डैडी, मैं राजेश को फोन कर दूंगी।'

इसके बाद वह उठ कर चली गई। राय बहादुर जानते थे कि अलका राजेश से प्रेम करती है। लेकिन वह राजेश को पसन्द नहीं करते थे। उनकी इच्छा थी कि अलका की शादी मोहन से हो, इसीलिये आज डिनर पर उन्होंने मोहन को बुलाया था।

मोहन समय से कुछ मिनट पहले ही आ गया था अलका ने प्याजी रंग की साड़ी व उसी रंग का ब्लाऊज पहना हुआ था और उसी रंग की लिपिस्टिक व बिंदियां भी लगाई थी। जूड़े ने उसके रूप को चार चांद लगा दिये थे।

मोहन ने उसे देखा तो देखता ही रह गया। अलका ने उसे एक नजर देखा, फिर नजरें झुका ली। उसकी आंखों में अलका ने एक अजीब सी एक चमक देखी थी।

'बेटे ! राय बहादुर बोले 'तुम दोनों एक दूसरे को देख चुके हो लेकिन मिले नहीं हो। यह है मेरी बेटी अलका। और

बेटी यह मोहन है, मेरा बिजनेस पार्टनर।'

दोनों ने एक दूसरे की तरफ हाथ बढ़ाये। मोहन ने उसका हाथ दबाते हुये कहा —'आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई।'

'मुझे भी।' अलका मुस्कराई।

राय बहादुर बोले—'तुम दोनों बातें करो मैं रात को देर से वापस लौटूगां आवश्यक काम है।'

'लेकिन डैडी जल्दी आ जाइयेगा।'

'अगर मैं न भी आया तो तुम अकेली नहीं रहोगी, मोहन आज यहीं रहेगा। क्यों मोहन ?'

'आपकी आज्ञा टालने की मुझमे हिम्मत नहीं है अंकल।'

राय बहादुर हंस पड़े, फिर बाहर निकल गये। दोनों की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या बातें करें। लेकिन अलका स्पष्ट देख रही थी कि मोहन की आंखों में वासना के डोरे तैर रहे हैं।

अलका को अपने सौन्दर्य का आभास था। वह जानती थी, उसे जो भी युवक देखेगा, उसके दिल में ऐसी ही भावनायें उत्पन्न होंगी।

'कुछ बात कीजिये न।' आखिर अलका ने ही खामोशी को तोड़ा।

'समझ में नहीं आ रहा कि क्या बात करूं, क्योंकि दो अजनबी आपस में पहली बार मिलें तो उनका बातों का सिलसिला आसानी से कायम नहीं हो पाता।'

'आप ठीक कहते हैं।'

'लेकिन शायद सवेरे तक हम अजनबी नहीं रहेंगे।'

'शायद।' अलका अपनी बड़ी २ आंखें उसकी आंखों में डालती हुई बोली। जिनमें वासना हिलोरे मार रही थी।

'जानती हो अंकल ने मुझे यहां क्यों बुलाया है ?'

'ताकि हम एक दूसरे को परख कर पसन्द कर सकें···।'

'तो आपको मालूम है।'

'डैडी ने मुझे बता दिया था। वैसे सच—सच बताइएगा, मैं

आपको कैसी लगी ?'

'बहुत सुन्दर व नम्र, ऐसी ही जीवन संगनि के मैं सपने देखता था।'

'धन्यवाद।'

'मेरे बारे में भी बता दीजिए।'

'आप···, मैं इतनी जल्दी फैसला नहीं करती, सारी रात पड़ी है। सवेरे जाते समय आपको उत्तर मिल जायेगा।'

'कोई बात नहीं, मैं सवेरे तक इन्तजार कर सकता हूं।'

तभी बाहर खटके की आवाज हुई, दोनों चौंक उठे। जब कोई भी अन्दर प्रविष्ट नहीं हुआ तो मोहन उठता हुआ बोला—

'शायद कोई बाहर है, मैं देखता हूं।'

मोहन ने बाहर आकर देखा—लेकिन उसे कोई भी दिखाई नहीं दिया।

'बाहर तो कोई भी नहीं है।' वह अन्दर आकर कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।

'शायद आपको भ्रम हुआ होगा।'

'नहीं! मेरे कान धोखा नहीं खा सकते। कोई हमारी बातें सुन रहा था। मुझे उठते देखकर ही वह भाग गया।'

अलका के चेहरे पर चिन्ताओं की रेखायें उभर आई।

कुछ ही क्षण बीते थे कि कालिया ट्राली खींचता हुआ अन्दर प्रविष्ट हुआ। मोहन को उसने एक नजर देखा, फिर डिनर लगाने लगा।

'काली!' अलका ने पूछा—'क्या कुछ मिनट पहले तुम यहां आये थे ?'

'नहीं। मैं तो अभी-२ आ रहा हूं।'

'ओह!'

'तभी 'खट' की आवाज हुई। कालिया झुका और जिस वस्तु को उसने उठाया वह रिवाल्वर था।

'आपका रिवाल्वर!' वह उसको मेज पर रखता हुआ बोला।

'ओह !' मोहन ने रिवाल्वर लेकर जेब में रख लिया।

डिनर लगाने के बाद काली एक तरफ को तनकर खड़ा हो गया।

'काली ! तुम जाओ, जब आवश्यकता होगी, मैं स्वयं बुला लूंगी।'

काली ने अपनी लाल-लाल आंखों से एक बार फिर मोहन को देखा और कमरे से बाहर निकल गया। फिर दोनों ने खाना शुरु किया।

'मोहन बाबू ! आप अपने पास रिवाल्वर क्यों रखते हैं ?'

'आत्म-रक्षा के लिये, भूखमरी व महंगाई इतनी फैल गई है कि लूट–मार बढ़ गई है। वैसे इसका मेरे पास लाईसेन्स मौजूद है।'

'वैसे रिवाल्वर से मुझे बहुत डर लगता है।'

'अब जब मुलाकात होगी तो आप मेरे पास रिवाल्वर नहीं पायेंगी।'

'धन्यवाद !'

कुछ क्षणों की खामोशी के बाद मोहन ने पूछा— 'कालिया के बारे में आपका क्या विचार है ?'

'हमारा नौकर है।'

'लेकिन मुझे खतरनाक व्यक्ति नजर आता है।'

'सिर्फ सूरत से, दिल का बहुत सुन्दर है।'

'हो सकता है, मुझसे ज्यादा आप उसे जानती हैं।'

डिनर की समाप्ति के बाद मोहन ने एक सिगरेट सुलगा ली।

'आपका बिस्तरा कहां लगवा दूं ?'

'जहां आप चाहें।'

अलका ने अनुभव किया उसकी नजर ब्लाऊज में से झांकते उसके उरोजों पर है। वह मुस्कराई, फिर शोख अदा से आंखें नचाकर बोली—'डैडी के कमरे में ठीक रहेगा।'

'आपका कमरा वहां से कितनी दूर है ?'

'कोई दस कदम।'

'अगर कोई ऐसा उपाय हो कि हम एक-दूसरे को देखकर बातें कर सकें तो अवश्य मेरा बिस्तरा वहीं लगवा दीजिये।'

वह हंस पड़ी फिर बोली–'ऐसा तो कोई उपाय नहीं है।'

'इस तरह आप मुझे परखकर फैसला नहीं कर सकेंगी।'

'तो ठीक है, आप मेरे कमरे में आ जाईयेगा।'

मोहन की आंखों में चमक आ गई।

'धन्यवाद !' उसने कहा।

'तो आईये, आपको अपने कमरे में ले चलती हूं।'

अलका ने उसके हाथ में हाथ डाल दिया। मोहन को ऐसा लगा जैसे उसके जिस्म में करेन्ट सा दौड़ गया हो। उसके जिस्म से यौवन की व लवेन्डर की उठती भीनी-२ सुगन्ध ने उसके खून की रफ्तार बढ़ा दी।

कमरे में आते ही मोहन ने अलका को बाहों में कस लिया और होठों पर होठ रख दिये।

एक भरपूर चुम्बन लेने के बाद वह अलग होता हुआ बोला—

'आपने बुरा तो नहीं माना ? दरअसल, आप इतनी सुन्दर हैं कि मैं स्वयं को रोक नहीं सका।'

'उत्तर देने की बजाये वह मुस्करा दी, फिर बोली—'आप इन कपड़ों में तो सो नहीं सकेंगे, डैडी का नाईट गाऊन ला देती हूं।'

'सचमुच आपको मेरा ख्याल है।'

'मैं अभी आती हूं।'

थोड़ी देर बाद वह नाईट गाऊन ले आई। जिसे लेकर वह बाथरूम में घुस गया।

जब वह बाहर निकला तो ठिठक कर रुक गया। अलका साड़ी व ब्लाऊज उतार चुकी थी। चोली और जांघिये में उसका सौन्दर्य और भी निखर उठा था।

जैसे ही वह नाईट गाऊन पहनने लगी, वह बोल उठा—

'ठहरो अलका।'

वह एकदम से घूमी। मोहन नाईट गाऊन पहने सामने खड़ा था।

"क्या बात है ?'

'तुम्हारी फिगर इतनी सुन्दर है कि इसे नाईट गाऊन में मत छुपाओ।'

अलका ने नाईट गाऊन एक तरफ फैंक दिया। स्पष्ट था यह खुला निमन्त्रण है। वह आगे बढ़ा और उसने अलका को बांहों में भींच लिया।

अलका ने कोई विरोध नहीं किया, वह भी उससे लिपट गई। एक भरपूर चुम्बन लेने के बाद वह अलग हो गया।

अलका पलंग पर जाकर लेट गई। माहन उस पर झुका और झुकता चला गया। अलका ने उसे अपने ऊपर खींच लिया। मोहन ने अपने होंठ उसके होठों पर रख ,दये। फिर चोली का हुक हटा दिया। उसके हाथ उसके जिस्म पर रेंगने लगे।

अलका कुछ और ज्यादा उत्तेजित होकर उससे लिपट गई और उसे बार-२ चूमने लगी।

मोहन ने उसका जांघिया हटा दिया···और फिर काली रात और ज्यादा काली होने लगी। अलका जो राजेश की प्रेमिका थी, कल तक उसके प्यार का दम भर रही थी, आज एक गैर मर्द की बाहों में कैद थी।

औरत के दिल को कभी कोई नहीं परख सका, जाने कब वह वासना की आग में अंधी होकर बदल जाये, कोई नहीं जानता।

दो खूंखार आंखें खिड़की के शीशे से सब कुछ देख रही थी। शायद कोई भयंकर घटना पेश आने वाली थी।

खूंखार आंखें फुर्ति के साथ हट गई और··· !

● ●

आकाश पर बादल छाये हुए थे। रह-रहकर बिजली गरज उठती थी। राय बहादुर थोड़ी देर पहले ही वापस लौटे थे। उस समय सारी कोठी अन्धकार में डूबी हुई थी। थोड़ी देर के लिये उनके कमरे में रोशनी हुई। कपड़े बदलने के बाद रोशनी बुझाकर वह पलंग पर लेट गये।

वह अलका के बारे में सोच रहे थे, जिसकी शादी वह मोहन से कर देना चाहते थे। उन्हें विश्वास था मोहन को जीवन-साथी के रूप में पाकर उनकी बेटी धन्य हो जायेगी।

तभी वह चौंक उठे। उन्हें खिड़की के शीशे में दो आंखें दिखाई दी थी। वह चौंककर उठ बैठे।

'कौन है ?' उन्होंने गुर्राकर पूछा।

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। दो आंखें खिड़की से हट गई। खतरा अनुभव करते ही उन्होंने सिरहाने के नीचे से रिवाल्वर निकाला और दरवाजा खोलकर बाहर निकल आये।

एक काले साये को उन्होंने चारदीवारी की तरफ भागते हुये देखा। उसके जिस्म पर काली पोशाक और सिर पर हैट था।

'रुक जाओ, अन्यथा गोली मार दूंगा।' राय बहादुर गरजे।

लेकिन वह साया झाड़ियों में ओझल हो गया। तभी बिजली की कड़क के साथ हल्की फब्बार पड़ने लगी। रायबहादुर झाड़ियों की तरफ लपके। लेकिन उन्हें काला साया कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था।

तभी झाड़ियों में से एक काला हाथ बाहर निकला, जिसमें रिवाल्वर पकड़ा हुआ था।

'धांय' की आवाज के साथ उसमें से शोला निकला और रायबहादुर कटे वृक्ष की भांति वहीं ढेर हो गये। उसी समय जोर की बिजली कड़की और पानी बरसने लगा, रफ्तार तेज हो गई। काला साया झाड़ियों में से बाहर निकला और दीवार पर चढ़ कर दूसरी तरफ कूद गया।

रायबहादुर के सिर पर गोली लगी थी। उस जगह से रक्त बह कर पानी में मिल रहा था।

दो···

पानी थम चुका था, आसमान साफ हो गया था। सूरज की किरणें चारों तरफ फैलने लगी थी। जब इन्सपैक्टर मधुप पूरे दल-बल के साथ कोठी में प्रविष्ट हुआ।

सवेरे लाश को देखते ही मोहन ने पुलिस थाने फोन कर दिया था।

अलका अभी तक रो रही थी। उसकी आंखें सूजी हुई थी। मोहन ने उसे सम्भाला हुआ था।

मधुप को देखते ही मोहन ने उससे हाथ मिलाया।

'तुम यहां कैसे ?' मधुप ने पूछा।

'रूई के व्यापार में रायबहादुर मेरे पार्टनर थे। रात मैं यहीं था।'

'और यह लड़की ?'

'मिस अलका, रायबहादुर की एकलौती बेटी।'

'इन्हें अन्दर ले जाओ, यहां के काम से निपटकर मैं थोड़ी देर में आता हूं, क्योंकि तुम लोगों के ब्यान लेने होंगे।'

मोहन अलका को अन्दर ले गया। वह अब भी सुबक रही थी।

'खुद को सम्भालो अलका।'

'कैसे सम्भालूं मोहन, अब इस दुनिया में मैं अकेली रह गई हूं। न जाने किस पापी ने डैडी की हत्या कर दी है।'

'वह जो कोई भी है, पुलिस उसे तलाश कर लेगी।'

कोई एक घन्टे बाद मधुप एक कान्सटेबिल के साथ अन्दर प्रविष्ट हुआ।

एक कुर्सी पर बैठते हुए मधुप ने पूछा—'रात को जब कत्ल हुआ कोठी पर कौन-२ मौजूद था ?

'कत्ल किस समय हुआ, यह हम नहीं जानते···। वैसे नौ बजे तक अंकल हमारे साथ थे। किसी काम का बहाना बनाकर वह हमें अकेला छोड़कर चले गये थे। वापस कब लौटे, हमें ज्ञान नहीं।' मोहन ने बताया।

'आप दोनों उस समय कहां थे ?'

'बैड रूम में।' अलका बोली।

'गोली की आवाज किसी ने सुनी ?'

'नहीं।' मोहन बोला—'रात को बारिश के साथ-साथ बिजली भी कड़कती रही थी, इसलिये हो सकता है कि गोली की आवाज बिजली की कड़क के साथ दब गई हो।'

'मिस अलका आपको किसी पर शक है ?'

'नहीं ! जहां तक मेरा ख्याल है डैडी का कोई दुश्मन नहीं था। हमारा बटलर कई साल से काम कर रहा है। उस पर शक नहीं किया जा सकता।'

'बटलर को बुलाईये।'

कुछ देर बाद ही बटलर कमरे में आ गया। दहशत के कारण उसका भयंकर चेहरा कुछ और भी ज्यादा भयंकर हो गया था।

'तुम्हारा नाम ?'

'कालिया, लेकिन सभी प्यार से मुझे काली कहते हैं।'

'रात को तुम कहां थे ?'

'सर्वेन्ट क्वाटर में।'

'राय बहादुर कब वापस लौटे, तुम्हें मालूम होगा ?'

'जी नहीं, शायद उन्होंने मुझे जगाना उचित नहीं समझा होगा।'

'गोली चलने की आवाज तुमने अवश्य सुनी होगी ?'

'नहीं !'

मधुप खामोश हो गया, कोई भी सूत्र उसके हाथ नहीं लगा था।

कुछ क्षणों बाद मधुप ने पूछा—'यहां किसी के पास रिवाल्वर अवश्य होगा ?'

'मोहन के पास है, कल मैंने उस समय देखा था, जब डिनर के समय रिवाल्वर उसकी जेब से गिर गया था।

'मोहन ! क्या तुम मुझको अपना रिवाल्वर दिखा सकते हो ?'

'क्यों नहीं !'

मोहन अन्दर चला गया। थोड़ी देर बाद उसने रिवाल्वर लाकर मधुप को थमा दिया।

मधुप ने उसे उलट-पुलट कर देखा। उसकी नाल को सूंघते ही वह चौंका।

'मोहन ! इसी रिवाल्वर से गोली चलाई गई है।'

'नहीं ! मैंने इसका प्रयोग नहीं किया।'

मधुप ने रिवाल्वर की मैगजीन खोली।

'देखो—इसमें एक गोली कम है।'

मोहन के चेहरे का रंग उड़ गया। जिसे मधुप ने भी नोट किया।

'मोहन ! मैं जानता हूं, तुम हत्यारे नहीं हो सकते, तब भी इसे जांच के लिये साथ ले जा रहा हूं।'

मोहन के मुख से बोल नहीं फूटा।

● ●

इन्सपेक्टर मधुप की जीप कोठी में आकर रुकी, दो कांसटेबिल भी उसके साथ थे। मोहन अलका के साथ ही गैलरी में खड़ा था।

अलका ने कपड़े बदल कर बाल संवार लिये थे, लेकिन उसका चेहरा अब भी बुझा हुआ था, आंखें सूजी हुई थीं।

'आईये इन्सपेक्टर, क्या डैडी के कातिल का कुछ पता चला ?'

'हां !'

'कौन है ? मैं उसका मुंह नोच लूंगी।' वह चिल्ला कर बोली।

'मिस्टर मोहन ! राय बहादुर के सिर में जो गोली निकली है, वह तुम्हारे रिवाल्वर से चली है। रिवाल्वर पर तुम्हारी उंगलियों के निशान मौजूद हैं।'

'नहीं इंस्पेक्टर ! मैंने किसी पर गोली नहीं चलाई।'

'अपनी सफाई तुम अदालत में दे सकते हो। चूंकि प्रमाण तुम्हारे विरुद्ध हैं, अतः मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूं।'

अलका की आंखों में खून उतर आया था। वह गुर्राई—

'तुम मेरे डैडी के हत्यारे हो। मैं तुमको जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।'

वह उस पर झपटी और उसका मुंह नोच लिया। मधुप ने बड़ी मुश्किल से उसे अलग किया। फिर बोला—'अपराधी को सजा देना कानून का काम है, आपका नहीं।'

'अगर मेरे बस में होता तो मैं इस कमीने हरामजादे का खून पी जाती।'

अलका ने कहा और फिर रो पड़ी।

मधुप ने आगे बढ़कर मोहन की कलाईयों में हथकड़ी पहना दीं। अलका ने उसके चेहरे पर कई लाल लकीरें बना दी थीं,

जिनसे खून रिसने लगा था।

जीप में बैठाकर मोहन को थाने की तरफ ले जाया जाने लगा।

'मधुप!' वह भर्राये स्वर में बोला—'मेरा विश्वास करो, मैंने कोई कत्ल नहीं किया।'

'मुझे विश्वास है, लेकिन दोस्त प्रमाण तुम्हारे विरुद्ध हैं। अगर हत्यारे तुम न हुये तो मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा कि मैं हत्यारे को खोज निकालूं।'

'धन की चिन्ता मत करना, जितना भी धन चाहियेगा मैं दूंगा।'

मधुप सिर्फ मुस्करा दिया। मोहन दौलत के बल पर खुद को बेगुनाह साबित करना चाहता था।

● ●

'सुषो डार्लिंग!' विनय बोला—'हम नाश्ता कर चुके हैं।'

'मैं जानती हूं।'

'फिर तुम यहां क्यों बैठी हो?'

'तुमको मेरा यहां बैठना बुरा लगता है?'

'नहीं···! बहुत अच्छा लगता है। मेरे सिर पर बैठ जाओ।'

'एक दिन कहोगे, मैं भी तुम्हें बुरी लगती हूं। निकाल देना मुझे घर से।'

'अरे भाग्यवान, तुम तो लड़ाकू बीबियों की तरह लड़ने लगी। मेरा मतलब है, मैं अब कसरत करूंगा।'

'नाश्ते के बाद कसरत करोगे? पागल तो नहीं हो गये हो।'

'शायद तुम्हें नहीं मालूम, नाश्ते के बाद कसरत करने से डबल सेहत बनती है।'

'तो करो, मैं तुम्हें नहीं रोकती।'

'लेकिन तुम्हें शर्म न आयेगी, क्योंकि मुझे सारे कपड़े उतारने हैं।'

'तुम मुझे अपने पास से किसी तरह भगाना चाहते हो, लेकिन मैं भी कमरे से बाहर नहीं जाऊंगी।'

'ठीक है, तो मुझे बेशर्म ही बनना पड़ेगा।' कहने के साथ ही वह कपड़े उतारने लगा।

जैसे ही उसने पैन्ट के बटन खोले सुषमा आंखें बन्द करती हुई चिल्लाई—'अरे······अरे···पागल हो गये हो·· यह क्या करते हो?'

'पैन्ट के बाद अभी जांघिया उतारूंगा।'

'अभी ठहरो, मैं जा रही हूं।' सुषमा ने अपनी आधी आंख खोल कर देखा—विनय के जिस्म पर अभी भी जांघिया मौजूद था।

सुषमा इस तरह दरवाजे की तरफ लपकी, जैसे कोई भूत उसका पीछा कर रहा हो।

विनय तो यही चाहता था, उसने जल्दी से दरवाजा बन्द किया। उसे ट्रांसमीटर पर असलम से बात करनी थी और वह जानता था सुषमा इतनी आसानी से टलने वाली नहीं।

वह साथ वाले कमरे में प्रविष्ट हो गया। दीवार में लगा एक गुप्त बटन दबा दिया। दीवार में एक रिक्त स्थान पैदा हो गया। जिसमें वायलिन रूपी एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर रखा हुआ था।

उसे सैट करने के बाद वह भर्राये स्वर में बोला—'ब्लेक जीरो स्पीकिंग ··हैल्लो···हैल्लो ब्लेक जीरो स्पीकिंग।'

'मैं असलम बोल रहा हूं सर।'

'रिपोर्ट दो।'

'एयरपोर्ट पर कोई संदिग्ध व्यक्ति दिखाई नहीं दिया सर, जिस पर शक किया जा सके। अदन से आने वाले हर एक व्यक्ति की अच्छी तरह से तलाशी ली गई है, लेकिन किसी के पास हीरे प्राप्त नहीं हुये।'

'कोशिश जारी रखो। ओवर एण्ड आल।'

विनय बटन दबाकर सम्बन्ध विच्छेद करना ही चाहता था कि तभी ट्रांसमीटर से एक भारी स्वर उभरा—'कोड काला पानी स्पीकिंग, तुम कौन हो ?'

'कोड सुनहरा पानी···।'

'ठीक है। आज रात दस बजे के विमान से एक करोड़ डालर के हीरे आ रहे हैं।'

'लाने वाला मर्द है या औरत ?'

'मर्द।'

'पहचान।'

'ब्राऊन रंग का सूट, कालर पर गुलाब का सफेद फूल, आंखों पर चमकते शीशे वाला चश्मा, लाल रंग के जूते, सिर से गंजा होगा।'

'ठीक है, हम इसे रिसीव कर लेंगे। लेकिन आदमी खतरनाक तो नहीं ?'

'नहीं ! चीनी दवाईयां देकर हमने उसे अपना गुलाम बना लिया है। वह वही करेगा, जो हम कहेंगे। विरोध करने की उसकी शक्ति समाप्त हो चुकी है।'

'ठीक है।'

'ओवर एण्ड आल।'

सम्बन्ध विच्छेद हो गया, लेकिन विनय पलथी मारे ट्रांसमीटर को पलके झपका-झपका कर इस तरह देख रहा था जैसे उसमें से अलादीन का जिन्न निकलते देखा हो।

तभी वह चौंका—वाहर जीप रुकने की आवाज सुनाई दी थी। वह समझ गया इन्स्पेक्टर मधुप के सिवा और कोई नहीं हो सकता।

ट्रांसमीटर को रिक्त स्थान में रख कर उसने बटन दबा दिया। दीवार बराबर हो गई। दरवाजा खोलते ही सामने मधुप खड़ा दिखाई दिया।

'आओ प्यारे गोबर गणेश, सवेरे-२ अपनी मनहूस सूरत

यहां कैसे ले आये ?'

'आफिस जा रहा था, सोचा-तुम्हारे दर्शन करता जाऊं।'

'दर्शन कर लिये अब जाओ।'

मधुप ने खिसियाकर विनय की तरफ देखा उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे।

'तुम कहते हो तो चला जाता हूं।'

'नेकी और पूछ-पूछ···।'

'आज हर तरफ हड़ताल का बोलबाला है। दो अलग-२ साम्प्रदाय वालों ने आपस में मार-काट मचा रखी है, कर्फ्यू लगे हुये हैं, राशन की कमी है। इसलिये तुम्हें चाय के लिये नहीं पूछ सकता।'

'तुम चिकने घड़े थे, चिकने घड़े ही रहोगे, लो जाता हूं। लेकिन कुछ कदम जाने के बाद वह फिर पलट पड़ा।

'अब क्या हुआ ?'

'तुम ने समाचार पत्र तो पढ़ा होगा। राय बहादुर ओम प्रकाश का कत्ल हो गया है। कातिल को मैंने गिरफ्तार कर लिया है।'

'अपनी बहादुरी की कहानी बीबी को जाकर सुनाओ, बाँहों में आकर एक चुम्बन तो देगी। मुझसे क्या मिलेगा ?'

'यार तुम समझते क्यों नहीं···। मोहन मेरा दोस्त है। चाहे वह लड़कियों का दीवाना है, लेकिन कत्ल कभी नहीं कर सकता। सारे प्रमाण उसके विरुद्ध हैं, लेकिन उसका कहना है, वह कातिल नहीं है।'

'तो कातिल को तलाश करो।'

'कहां ?'

'मेरी जेब में रखा है, उठाकर ले जाओ।' विनय बुरा सा मुंह बनाकर बोला—'अबे गोबर गणेश, कुछ अक्ल के घोड़े दौड़ाओ, तभी सफलता प्राप्त कर सकोगे···। अब जाओ अन्यथा मैं तुम्हारे सामने ही कसरत शुरु कर दूंगा।'

'लो करो।'

'किसी महात्मा ने कहा है--बेटे ! निर्वस्त्र कसरत करने से दिमाग, दिल व जिस्म स्वस्थ रहता है। इसलिये मुझे सारे कपड़े उतारने पड़ते हैं।'

विनय ने जैसे ही जांघिये की तरफ हाथ बढ़ाया, मधुप चिल्ला उठा--ठहरो···ठहरो···मैं जा रहा हूं···कुछ तो शर्म करो।'

मधुप ने जीप के पास रुककर ही दम लिया। विनय उसकी बौखलाहट पर खिलखिला कर हंस पड़ा। फिर तैयार होकर वह बाहर निकल गया। सारा दिन वह मटर-गश्ती करता रहा। रात को नौ बजे के लगभग एयर पोर्ट पहुंच गया।

एक सप्ताह पहले भारत सरकार को इण्टरपोल से सूचना मिली थी कि एक अज्ञात गिरोह लगभग एक करोड़ डालर के हीरे अदन से लेकर भारत की राजधानी आ रहा है।

सूचना मिलते ही कस्टम अधिकारियों को तो सतर्क कर ही दिया गया था, सीक्रेट सर्विस भी हरकत में आ गई थी, क्योंकि सूचना के अनुसार आने वाला किसी बहुत बड़े दल का एक एजेन्ट था।

आज पांच दिन बीत चुके थे, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली थी। मगर आज एकाएक ही विनय ने उस अज्ञात गिरोह की सारी बातें ट्रांसमीटर पर सुन ली थीं, जिसके अनुसार आज रात को दस बजे के विमान से एक करोड़ डालर के हीरे आने वाले थे।

असलम भी एयर पोर्ट पर मौजूद था। विनय को देखते ही वह उसके पास आ गया।

'प्यारे असलम उर्फ लम्बी मूंछ, उस काले चूहे के आदेश पर यहां क्या कर रहे हो ?'

'वही जो तुम करने आये हो। चीफ ने कहा है, तुम्हारे आदेश का पालन करूं।'

'तो मुर्गा बन जाओ।'

असलम बुरा सा मुंह बनाकर उसकी तरफ देखने लगा।

'यार कभी तो ढंग से बात कर लिया करो। यहां हम स्मगलरों की तलाश में आये हैं।'

'ऐसी बात है··मैं तो भूल ही गया था। कोई संदिग्ध व्यक्ति नजर आया।'

'नहीं !'

,कुछ व्यक्ति यहाँ अवश्य मौजूद हैं, जिनका कोड है—'सुनहरा पानी ! तुम उन्हें तलाश करो, मैं एक कप काफी पी कर आता हूं।'

असलम को वहीं छोड़कर विनय काफी हाऊस में प्रविष्ट हो गया। एक खाली सीट पर उसने कब्जा जमाया और एक कप काफी का आर्डर दे दिया, फिर चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखने लगा।

अन्तिम सीट पर बैठे व्यक्ति पर उसकी नजर ठहर गई। कोई भी होता, उसे एक बार तो अवश्य देखता।

उसने सलेटी रंग का सूट पहना हुआ था। काला रंग, चेहरे पर चेचक के दाग, बांये गाल पर चाकू का लम्बा निशान, सारा चेहरा उबड़-खाबड़। कोई बच्चा रात को देख ले तो चीख उठे।

विनय ने अनुभव किया—वह अगली सीट पर बैठे व्यक्ति को बार-बार निहार रहा है। विनय को उसकी आंखों में खूनी चमक जलती बुझती दिखाई दी।

वह व्यक्ति कुछ भारी व गौरे रंग का था। उसने चमड़े की जाकेट पहन रखी थी। शक्ल सूरत से वह भी कोई बदमाश ही नजर आता था। उसकी नजर भी चारों तरफ घूम रही थी।

विनय सोच रहा था—शायद वह उन व्यक्तियों तक पहुंच गया है, जिनकी उसे तलाश है।

तभी जेकेट वाला व्यक्ति उठा और बाथरूम की तरफ चल पड़ा। भंयकर सूरत वाले को भी उसने उठते हुये देखा। सिगरेट को उसने ऐशट्रे में बुझाया और तेजी से बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

अवश्य ही कोई खतरनाक घटना घटने वाली है। उसके दिल ने कहा, काफी की इन्तजार किये बिना वह भी उठा और आराम से बाथरूम की तरफ बढ़ने लगा। दरवाजा खोलकर वह अन्दर प्रविष्ट हुआ।

उसे कौने में दोनों गिरे हुये दिखाई दिये। भंयकर सूरत वाले के हाथों में चाकू पकड़ा हुआ था। वह उस पर वार करना चाहता, लेकिन जेकेट वाला उसे बार-बार बचा लेता।

विनय हस्तक्षेप करना ही चाहता था कि भंयकर सूरत वाले ने चाकू उसकी छाती में उतार दिया। चाकू खींचकर दोबारा-वार किया। इस बार मूठ तक उसकी छाती में घुस गया।

जेकेट वाले की आंखें फटी की फटी रह गई। वह लहरा कर फर्श पर ढेर हो गया।

भंयकर सूरत वाले ने उसे खींचकर एक कमरे में फैंक दिया और दरवाजा बन्द कर दिया। मुड़ते ही उसकी नजर विनय पर पड़ी।

विनय झट से हाथ जोड़ कर बोला—'नमस्ते जनाब' !

''नमस्ते···।' वह झटके से कह गया फिर चौंककर विनय को देखने लगा।

'तुमने कुछ नहीं देखा।' वह गुर्राया।

''आंखों से अन्धा नहीं हूं जनाब, मैंने सब कुछ देखा है।'

'यानी तुम मरना चाहते हो।'

'घर से तो दुखी हूं, इस देश की कमर तोड़ महंगाई ने भी दुखी कर रखा है। मार डालोगे तो बड़ा एहसान होगा।'

वह खून से सना हुआ चाकू लिये हुये विनय की तरफ बढ़ा। जैसे ही उसने वार किया, विनय ने उसकी कलाई थाम ली।

उसने विनय के पेट में जोर से ठोकर मारी, विनय लड़खड़ाता हुआ दीवार से जा टकराया। भंयकर सूरत वाले ने उसी क्षण चाकू उस पर खींच मारा।

विनय अगर फुर्ती से हट न जाता तो चाकू उसकी छाती में

समा गया होता। दिवार से टकरा कर चाकू झनाक की आवाज करता हुआ फर्श पर जा गिरा।

'बेटे ! तुमने एक व्यक्ति का कत्ल किया है, यहां से बचकर नहीं जाने दूंगा।' विनय गुर्राया। फिर वह अपनी जगह से उछला। उसके दोनों पैर उसकी छाती से टकराये। वह स्नान करने वाले खाने में जा गिरा।

विनय ने उसका गिरहबान पकड़कर उठाया और एक घूंसा उसके पेट में व दूसरा थूथन पर जड़ दिया।

लेकिन वह भयंकर सूरत वाला भी कम शक्तिशाली नहीं था। उसने अपना घुटना विनय की दोनों जांघों के बीच दे मारा। विनय बिलबिलाकर पीछे हटा। साथ ही उसने लात चला दी। विनय उछलकर फर्श पर गिरा।

उसका सिर फर्श से टकराया। उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छाने लगा। भंयकर सूरत वाला चाकू की तरफ बढ़ने लगा। उसका इरादा उसे खत्म कर देने का था। लेकिन तभी दरवाजा खुला और एक आदमी अन्दर प्रविष्ट हुआ। भंयकर सूरत वाला ठिठक कर रुक गया।

'इसे क्या हुआ ?' उसने विनय की तरफ इशारा करते हुये पूछा।

'शायद दौरा पड़ा है। आप इसे सम्भालिये, मुझे जरा जल्दी है।' कहने के साथ ही वह दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

वह व्यक्ति विनय के चेहरे पर पानी के छींटे डालने का विचार कर ही रहा था कि विनय को होश आ गया। वह उठकर खड़ा हो गया।

'आपको क्या हुआ था, मिस्टर ?'

विनय ने चारों तरफ नजरें दौड़ाई, उसे भंयकर सूरत वाला कहीं दिखाई न दिया।

'आपने यहां से किसी को जाते हुये नहीं देखा ?'

'एक भंयकर सूरत वाले व्यक्ति को देखा था।'

'मेरा दिल बहुत कमजोर है, भाई साहब। उसकी सूरत को देखकर डर गया और बेहोश होकर गिर पड़ा।'

'ओह।'

विनय ने मासूम सूरत बनाकर कहा था। फिर वह तेजी के साथ दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया। वह व्यक्ति उसे देखता ही रह गया।

विनय चाहता तो इस घटना की सूचना एयर पोर्ट पुलिस को दे देता। लेकिन वह अभी झमेले में नहीं फंसना चाहता था। क्योंकि अभी उसे हीरों के स्मगलरों से भी निपटना था।

बहार निकलते ही उसे भंयकर सूरत वाला दिखाई दिया। जो उससे कुछ ही दूरी पर खड़ा था। कत्ल करने के बाद भी उसका वहां मौजूद होना प्रगट करता था कि उसे किसी का इन्तजार है। कहीं यही तो सुनहरा पानी नहीं है।

यह विचार आते ही वह सतर्क हो गया। विनय इस रूप में उसके सामने नहीं जाना चाहता था। वह एक कोने की तरफ बढ़ गया। जेब में हाथ डालकर वह चेहरे तक ले गया। जब हाथ हटाया तो उसके होंठों पर मुछें चिपकी हुई थी। नाक में स्प्रिंग लग जाने के कारण होंठ ऊपर को उठ गये थे। जिससे दांत दिखाई देने लगे थे। कोट को उसने उलट कर पहन लिया।

उसे विश्वास था इस रेडीमेड मेकअप में भंयकर सूरत वाला उसे पहचान नहीं सकता।

असलम को सतर्क कर देना भी आवश्यक था। इसलिये वह घड़ी रूपी ट्रांसमीटर पर झुक गया।

● ●

असलम बार-बार चारों तरफ देख लेता था, लेकिन विनय उसे कहीं भी दिखाई नहीं दिया। तभी टिक-टिक की आवाज

सुनकर वह चौंका। ट्रांसमीटर संकेत दे रहा था।

आस-पास कुछ लोग खड़े थे, इसलिये वह एक कोने की तरफ बढ़ गया। घड़ी की सूई बाहर खींच कर वह बोला—'हैलो······असलम स्पीकिंग।'

'मैं विनय बोल रहा हूं।'

'लेकिन युरिनल से तुम कहां गायब हो गये थे?'

'एक खतरनाक अपराधी से टकरा गया था बस यह समझ लो जान बच गई। उससे खुद को बचाने के लिये इस समय मेकअप में हूं। तुम्हें भी सतर्क रहना होगा। यहां अपराधियों का जाल बिछा हुआ है। हीरे लाने वाले गंजे व्यक्ति पर तुम्हें नजर रखनी है।'

'मैं जानता हूं, और कुछ।'

'आंखें खुली रखना। ओवर एक आल।'

सम्बन्ध विच्छेद होते ही असलम ने सूई अन्दर दबाई और इधर-उधर देखने लगा। विनय उससे कुछ दूरी पर ही खड़ा था। उसने विनय को देखा, लेकिन पहचान नहीं सका।

भंयकर सूरत वाला उसे दिखाई दे रहा था। विनय टहलता हुआ उसके करीब से गुजरा। उसने विनय की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। विनय ने चैन की सांस ली। वह उसे मेकअप में पहचान नहीं सका था।

तभी प्रसारित किया गया 'अदन से आने वाला विमान कुछ ही मिनटों में राजधानी एयर पोर्ट पर उतरने वाला है।'

सभी दर्शक इधर-उधर से गैलरी की तरफ बढ़ने लगे। उनमें असलम भी था।

एकाएक असलम चौंक उठा। उसे अपनी कोख में कुछ चुभता हुआ अनुभव हुआ था।

वह पलट कर देखना ही चाहता था कि तभी उसे सरसता हुआ स्वर सुनाई दिया 'तुम्हारा साथी हमारी ताकत को देख चुका है। अगर तुमने भी हमसे टकराने कि कोशिश की तो लाश में बदल दिये जाओगे।'

असलम ने फिर घूमना चाहा, लेकिन कोख में नुकीली चीज का दबाव और भी ज्यादा बढ़ गया – 'पीछे देखने की कोशिश मत करना'''।'

तब भी असलम ने कनखियों से देख लिया वह वही भंयकर सूरत वाला था, जिसे उसने काफी बार में देखा था।

विनय ने सच कहा था–एयर पोर्ट पर अपराधियों का जाल बिछा हुआ है। एकाएक कोख पर चुभन खत्म हो गई थी।

असलम ने पलट कर देखा, लेकिन भंयकर सूरत वाला कहीं दिखाई नहीं दिया। वह एक गहरी सांस लेकर रह गया।

जेब में रखें रिवाल्वर को उसने टटोल कर देख लिया। चूंकि अब उसे पूर्णतया सतर्क रहना था।

तभी घरघराहट की आवाज से वह क्षेत्र गूंज उठा। विमान ने एयर पोर्ट पर एक चक्कर लगाया फिर हवाई पट्टी पर लैंड करने लगा।

एक जगह पहुंच कर वह रुक गया। सीढ़ी लगाते ही दरवाजा खोल दिया गया। परिचारिका यात्रियों को बिदाई देनेके लिये दरवाजे पर आ खड़ी हुई थी। एक-एक करके यात्री उतरने लगे। असलम उस व्यक्ति को खोज रहा था जो कि हीरे लेकर आने वाला था। सबसे अन्त में वह व्यक्ति उतरा। सिर से गंजा। बाकी हुलिया उसका वही था जो विनय ने बताया था। वह धीरे-धीरे चलता हुआ कस्टम की तरफ बढ़ रहा था। चाल में उसके एक अजीब सी लापरवाही थी।

असलम ने एक बार फिर चारों तरफ नजर दौड़ाई, लेकिन विनय उसे कहीं भी दिखाई नहीं दिया। लेकिन उसे विश्वास था कि वह एयर पोर्ट पर मौजूद है। और उसकी नजर इस समय अपराधियों पर ही होगी। भंयकर सूरत वाला भी उसे कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।

गंजा व्यक्ति कस्टम से निपट कर बाहर निकला। उसी समय उसने भंयकर सूरत वाले को तेजी के साथ उसकी तरफ

बढ़ते हुये देखा।

एक और व्यक्ति उसे दिखाई दिया, जो गंजे व्यक्ति के साथ चलता हुआ अपनी मूछों को ताव दे रहा था। वह विनय था।

भंयकर सूरत वाला गंजे व्यक्ति के बिल्कुल निकट पहुंच कर बोला—

'सुनहरा पानी।'

उसने भर्राये स्वर में उत्तर दिया—'काला पानी।'

'आओ मेरे साथ जल्दी करो—पुलिस का जाल यहां चारों तरफ फैला हुआ है।'

गंजा व्यक्ति उसके साथ चल पड़ा। इस तरह जैसे उसकी लगाम उसके हाथ में हो।

विनय ने उनके कोड वर्ड सुन लिये थे। उसे समझने देर नहीं लगी कि जिन लोगों की उसे तलाश है, वह सामने ही मौजूद हैं।

वह चाहता तो उन्हें गिरफ्तार करा सकता था। लेकिन इस तरह दल का मुखिया सावधान हो सकता था। विनय तेजी के साथ असलम की तरफ बढ़ा।

असलम सोच रहा था—आज कोई भंयकर घटना पेश आने वाली है। जिसके लिये उसे तैयार रहना होगा। जेब में रखे रिवालवर को उसने मजबूती से थाम लिया था।

तीन'''

जिस प्रकार कुत्ते की पूंछ को सालों टंकी में रख दिया जाये, वह सीधी नहीं हो सकती। उसी प्रकार भगत को जितना भी समझा दिया जाये, वह लड़कियों का चक्कर नहीं छोड़ सकता।

लोगों के मुंह में खट्टी चीज देखकर पानी भर आता है। यहां तक की लार टपकने लगती है। लेकिन भगत की लार उस समय

टपकती थी, जब कोई सुन्दर लड़की दिखाई दे जाये। जैसे वह कोई लड़की न हो कोई चाट भंडार हो।

भगत लन्दन से विमान में बैठा था, विमान भारत के लिये उड़ा था। जेम्स बाण्ड व मनी-पेनी उसे विदा करने के लिये आये थे। भगत लगे हाथ उन्हें भारत आने का निमन्त्रण दे आया था।

जेम्स बाण्ड ने कहा था–वह जल्दी ही भारत आयेगा।

'मिस मनी-पेनी आशा रखूं, तुम भी आओगी ?'

'अगर किसी केस के सिलसले में आना पड़ा तो अवश्य आऊंगी। अन्यथा अभी कोई विचार नहीं है।'

'हीरों की स्मलिंग का आजकल बहुत जोर है, मुझे विश्वास है तुम लोग अवश्य आओगे।

भगत विमान में आकर बैठ गया था। लेकिन उस समय उसने इस तरह बुरा सा मुंह बनाया जैसे नरक में आ फंसा हो। क्योंकि दो बूढ़ी औरतों के अलावा वहां कोई औरत या युवती नहीं थी। लेकिन परिचारिका सुन्दर तो थी। लेकिन कुछ कड़के मिजाज की थी।

विमान जब उड़ कर ब्रिटेन की सीमा पार करके बाहर आ गया तो भगत ने निकट से गुजरती परिचारिका को बुलाया —

'मिस लैला।'

उसने चौंक कर भगत की तरफ देखा—'आपने मुझको पुकारा ?'

'इस विमान में और लैला कौन हो सकती है ?'

'लेकिन मेरा नाम लिलि है।'

'लैला हो या लिलि, नाम की ऐसी की तैसी, वैसे तुम हो खूबसूरत।'

'आप क्या लेना पसन्द करेंगे ?'

'तुम दे नहीं सकोगी।'

'आपकी हर इच्छा को पूरा करना मेरा फर्ज है।'

'तो जल्दी से एक गर्मा गर्म चुम्बन दे दो।'

'लेकिन चुम्बन जैसी कोई वस्तु विमान में मौजूद नहीं।'

'तुम्हारे पास होंठ मौजूद हैं मिस लैला।'

'ओह...मैं अभी आती हूं।'

थोड़ी देर बाद वह भगत के निकट आकर खड़ी हो गई। उसके होंठों पर मुस्कान थी।

'यानि फंसी।' भगत बुदबुदाया।

'मैं आपकी बगल में बैठ सकती हूं।'

भगत एक तरफ को सरक गया और होंठों को जीभ फेर कर चुम्बन के लिये तैयार करने लगा।

सीट पर बैठकर उसने नकली रबड़ के होंठ भगत को थमा दिये।

'इन्हें जब तक चाहे आप चूम सकते हैं।' कहने के साथ ही वह हंसती हुई उठी और आगे बढ़ गई।

भगत बुरा सा मुंह बनाकर बुदबुदाया—'मेरा नाम भी भगत है, तुम्हें लिलि से बिल्ली न बनाया तो कहना।'

फिर उसने जल्दी से उन नकली होंठों को चूम कर जेब में रख लिया।

सफर चलता रहा। वह जब भी भगत के पास से गुजरती इस तरह मुस्करा देती जैसे उसे मूर्ख बनाकर उसने बहुत बड़ा काम किया हो।

उस समय अदन आने में लगभग बीस मिनट बाकी थे, जब लिलि ने आकर पूछा—'आप जूस लेना पसन्द करेंगे ?'

'तुम्हारे होंठों का चुम्बन लेना पसन्द करूंगा।'

'शराब ?'

'अब तो तुम्हारे होंठों की शराब पीऊंगा।'

'आप बड़े ढीठ हैं।'

'मेरा नाम भगत है, जिस वस्तु की इच्छा करता हूं, छीन लेता हूं।'

'मैं वह डाली नहीं, जिसे आप आसानी से झुका लेंगे।' उस ने कहा और बुरा सा मुंह बनाकर आगे बढ़ गई।

कुछ ही मिनट बाद भगत उसके पीछे स्टोर रूम की तरफ चल पड़ा। उस समय वह गिलास में जूस डाल रही थी, जब भगत अन्दर प्रविष्ट हुआ।

बिल्कुल उसकी पीठ के पीछे पहुंच कर वह बुदबुदाया—

'लिलि।'

लिलि झटके से पल्टी। यही समय था, भगत ने उसे बांहों में भरा और होंठों को चूम लिया।

वह छिटककर पीछे हट गई। भगत बुरा सा मुंह बनाकर बोला——मुझे मालूम होता कि तुम्हारे होंठों का रस खट्टा है तो मैं कभी चखने न आता।' कहने के साथ ही उसने जूस का गिलास उठाया और एक ही सांस में खाली कर दिया।

'इसमें कुछ ज्यादा ही मिठास थी।' भगत ने उसकी तरफ देखकर कहा और बाहर निकल गया।

लिलि ने हथेली से होंठों को पोंछा और सिर को झटका देकर रह गई।

थोड़ी देर बाद ही प्रसारित किया गया · हम अब अदन के एयरपोर्ट पर उतरने वाले हैं, कृपया यात्रियों से निवेदन है कि वे पेटियां बांध लें।

भगत ने जान-बूझ कर पेटी नहीं बांधी। परिचारिका जैसे ही यात्री कक्ष में प्रविष्ट हुई, भगत ने उसे बुलाया——

'फर्माइये।'

'पेटी में कुछ गड़बड़ है जरा देखना तो!'

वह झुक कर पेटी को देखने लगी, उसके जिस्म से निकलती हुई सुगन्ध भगत के नथूनों में घुसने लगी। भगत ने उसके गाल को हल्के से चूम लिया।

'मिस्टर आपने फिर बदतमीजी की?'

'शायद तुम बुरा मान गई?'

'यह तो समय बतायेगा।' उसने पेटी बांध दी और आगे बढ़ गई।

विमान अदन के एयर पोर्ट पर उतरा। कुछ समय का वहां

विश्राम था। अतः लम्बे सफर वाले व्यक्ति काफी हाउस में चले गये। जब भगत वापिस लौटा तो अपनी सीट की तरफ देखकर बार-२ पलकें झपकाने लगा। एक सुन्दर युवती उसकी सीट पर बैठी हुई थी।

भगत ने चैन की सांस ली, अब सफर आसानी से कट जायेगा। भगत उसकी बगल में बैठ गया।

विमान उड़ा। उसके जिस्म से उठती हुई भीनी-२ सुगन्ध भगत को पागल बना रही थी।

'मिस! क्या मैं जान सकता हूं आप कहां जा रही हैं?' भगत से रहा नहीं गया तो उसने पूछ ही लिया।

'भारत की राजधानी दिल्ली।'

'तब तो हमारा अन्त तक साथ रहेगा।' लन्दन से अदन तक आते-आते बोर हो गया था।

वह सिर्फ मुस्करा दी।

'आपका नाम जान सकता हूं?'

मिस शालिनी, लेकिन मिलने वाले प्यार से मुझे शालू कहते हैं।'

'क्या मैं भी प्यार से शालू कह सकता हूं?'

'क्यों नहीं।'

'आपको प्यार कर सकता हूं?'

'जी···।' वह चौंककर भगत की तरफ देखने लगी।

'मेरा मतलब है, आपका नाम इतना प्यारा है, इच्छा होनी है कि सलेट पर लिखकर चूम लूं।'

'ओह!' वह हंस पड़ी।

कुछ क्षणों की खामोशी के बाद शालू ने पूछा—'आपने अपना परिचय नहीं दिया?'

'बन्दे को भगत कुमार कहते हैं।'

'शायद बिजनेस के सिलसिले में भारत जा रहे हो?'

'भारत तो अपना घर है।'

'क्या बिजनेस करते हो?'

'दूसरों की जेब का माल अपनी जेब में डालने का [illegible] है।'

'क्या मतलब ?'

'कई कारखाने हैं। उनमें बनने वाली चीज को लोग खरीदते हैं और उनका माल अपनी जेब में चला जाता है।'

'मैं समझी थी आप जेब कतरी का धन्धा करते हैं।'

'आजकल हर धन्धे में जेब कतरनी पड़ती है मिस आलू।'

'आलू···मैंने तो आपको अपना नाम शालू बताया है।'

'दरअसल मैं नाम भूल जाया करता हूं, क्षमा कीजियेगा।'

'आप सचमुच दिलचस्प आदमी हैं।' वह हंस पड़ी।

'आप बहुत सुन्दर हैं। क्या आपकी सुन्दरता की तारीफ कर सकता हूं ?'

'लेकिन मैं खुद को इतनी सुन्दर नहीं समझती।'

'हीरा स्वयं नहीं जानता, उसका मूल्य क्या है ?'

'आपकी नजर में मैं हीरा हूं !'

'हां। कमल समान बड़ी–२ आंखें, उभरे हुए सुर्ख गाल, तीखी नाक, गुलाब की पंखुड़ियों जैसे सूर्ख होंठ।'

'बस तारीफ हो गई ?'

'अभी तो धीरे-२ नीचे उतर रहा हूं।'

भगत ने उसकी जांघ पर हाथ रख दिया और बोला—

'सुराहीदार गर्दन, उभरे हुये पुष्ट उरोज, पतली कमर, चौड़े कूल्हे, भरी हुई जांघें, माँसल बाँई···। कौन इस रूप पर न मर जायेगा।' भगत का हाथ उसकी जांघों पर रेंग रहा था।

उसकी नसों में सनसनाहट सी होने लगी। वह बुदबुदाई—

'क्या आप इस रूप पर मर चुके हैं ?'

'हां।' भगत ने कहा।

वह उसके कुछ और निकट खिसक आई थी। भगत ने उसके चेहरे को हाथों में पकड़ा और उसके होंठों पर अपने होंठ

रख दिये। शालू भी चुम्बन में उसका साथ देने लगी।

तभी दोनों चौंककर अलग हो गये। परिचारिका पूछ रही थी—'आप लोग कुछ लेना पसंद करेंगे ?'

'दो डबल पैग व्हिस्की।' भगत ने कहा और एक आंख दबा दी।

परिचारिका बुरा सा मुंह बनाकर आगे बढ़ गई।

भगत सारे रास्ते इसी तरह की ऊट-पटांग बातें और हरकत करता रहा।

एकाएक माईक से आवाज उभरी—अब हम भारत की सीमा में प्रविष्ट होने वाले हैं।

सभी उछल–उछलकर खिड़की से बाहर देखने लगे। भगत उठकर बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

रास्ते में उसे लिलि मिली। भगत को देखकर वह ठिठक गई।

'अपने होंठों व गालों से लिपस्टिक के निशान पोंछ लीजिये, बुरे लगते हैं।'

'क्या इसी तरह के दो–तीन निशान तुम नहीं बना सकती हो ?'

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। गहरी नजर से भगत को देखा और आगे बढ़ गई।

जब वह यूरिनल से वापिस आ रहा था तो एकाएक वह चौंक उठा। विमान बड़ी जोर से डगमगाया था, अगर वह पट्टा न पकड़ लेता तो बड़ी जोर से गिर पड़ता।

विमान को दो-तीन झटके और लगे। तभी उसे लिलि दिखाई दी।

'लिलि ! क्या हुआ ?'

'कुछ नहीं आप अपनी सीट पर बैठ जाइये।'

'कहीं इन्जन में खराबी तो नहीं आ गई ?'

'अभी मैं कुछ नहीं कह सकती।'

भगत गहरी साँस लेकर अपनी सीट की तरफ बढ़ गया।

लगभग सभी यात्रियों के चेहरे का रंग भय के कारण उड़ा हुआ था।

भगत के बैठते ही शालू ने घबराये स्वर में पूछा—'क्या हुआ ?'

'सबकी मौत आने वाली है। भगत ने सपाट स्वर में कहा।

'नहीं !'

'इन्जन में खराबी आ गई है। तुमने कई विमान दुर्घटनाओं के बारे में सुना होगा, आज देख लो विमान दुर्घटनाओं में आदमी जब आसमान से धरती पर गिरता है तो उसके किस प्रकार चिथड़े होते हैं।'

'मैं मरना नहीं चाहती भगत, मुझे बचा लो।' वह भगत से लिपट गई। भगत प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा।

'मिस्टर भगत !' लिलि बोली—'आप समझदार आदमी हैं, यात्रियों को इस तरह मत डराइये।'

'तो किस प्रकार डराऊं ?'

तभी विमान को फिर दो-तीन झटके लगे।

'अब तो कारण बता दो।'

'इन्जन में खराबी आ गई है।' कहने के साथ ही वह तेजी से पाईलेट कक्ष की तरफ बढ़ गई।

तभी प्रसारित किया गया—यात्रियों को बड़े दुःख के साथ यह बताना पड़ रहा है कि इन्जन में खरावी हो जाने के कारण पैट्रोल की टंकी लीक करने लगी है, जिसके फलस्वरूप इन्जन में आग लग गई है। हमें अपनी जान बचाने के लिये पैराशूट द्वारा नीचे कूदना होगा। प्रभू से प्रार्थना कीजिये कि हम सब सकुशल नीचे उतर जायें।'

सबके चेहरे और भी ज्यादा पीले पड़ गये, इस तरह जैसे वह समय से पहले ही मुर्दा हो गये हों।

लिलि यात्री कक्ष में प्रविष्ट हुई और सबको पैराशूट बांधने

लगी। कई यात्रियों ने उससे तरह-२ के प्रश्न किये।

उसने सबको एक ही उत्तर दिया—'हिम्मत से काम लिजिये, ऐसी मुसीबतें तो आती रहती हैं। अगर आप लोग हिम्मत से काम नहीं लेंगे तो बचना कठिन हो जायेगा।'

विमान बार-२ लड़खड़ा जाता था। भगत सोच रहा था—इतने सारे यात्रियों में न जाने किस-२ की मौत आने वाली है। हो सकता है उसका भी नम्बर हो !

शालू ने पैराशूट बांध लिया था। कुछ यात्री हिम्मत करके दरवाजे की तरफ बढ़े। लिलि उन्हें कूदने के लिये कह रही थी। परन्तु सैंकड़ों मीटर नीचे झांकते ही उनका दिल कांपने लगता।

'लेडीज एण्ड जेन्टिल मैन !' भगत बोला 'मौत तो एक दिन आनी ही है। फिर मौत से काहे को डरना। कूद जाइये और हवा में सैर करने का मजा लूटिये।'

लिलि न चाहते हुये भी मुस्करा दी। यात्री कूदने लगे, उनमें शालू भी थी।

मिस्टर भगत !' लिलि बोली—'आपने पैराशूट क्यों नहीं बांधा ?'

सभी लोग भयभीत थे—तुम भी······मैंने सोचा, क्यों न तुम्हारी सहायता कर दें।'

'·· मैं भयभीत नहीं हूं।'

'—तो जल्दी से पैराशूट बांध लो। हम सबसे अन्त में कूदेंगे।'

दोनों पैराशूट बांधने लगे। विमान ने एक बार कलाबाजी खाई और तेजी से नीचे की तरफ बढ़ने लगा।

'आप कूद जाइये। विमान की टंकी किसी भी समय फट सकती है।'

'डीयर लिलि ! दुनियां का नियम है 'लेडीज फस्ट।'

'लेकिन परिचारिका का फर्ज है, जब तक सारे यात्री कूद न जायें, वह विमान में ही रहती है।'

'फर्ज की ऐसी की तैसी, मैं तुम्हें इतनी आसानी से मरने नहीं दूंगा। चलो…कूदो।'

मजबूर होकर लिलि को कूदना पड़ा। उसके बाद भगत ने छलांग लगा दी। कुछ कलाबाजियां खाने के बाद उसका पैराशूट खुल गया। वह हवा में तैरता हुआ नीचे की तरफ बढ़ने लगा।

कुछ दूरी पर लिलि भी पैराशूट की सहायता से उड़ रही थी। नीचे पहाड़, घाटियां व पेड़ दिखाई दे रहे थे। विमान में आग लग चुकी थी। वह दूर कलाबाजियां खाता हुआ नीचे की तरफ बढ़ रहा था। पाईलेटों का क्या हुआ? उसे मालूम नहीं था।

कुछ ही क्षण बीते थे कि बड़ी जोर का धमाका हुआ। विमान एक चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो गया था। आस-पास आग लग गई थी।

भगत ने गहरी सांस ली और लिलि की तरफ देखने लगा, जो गहरी घाटी को पार करके पेड़ों के निकट पहुंच गई थी।

भगत उस समय चौंक उठा, जब उसने लिलि के पैराशूट को पेड़ में उलझते हुये देखा। लेकिन वह उसके बचाव के लिये अभी कुछ भी नहीं कर सकता था।

कुछ ही देर बाद उसके पैर जमीन से टकराये, हवा के कारण वह कुछ दूरी तक लुड़कता चला गया। फिर उसने जल्दी-जल्दी खुद को पैराशूट से मुक्त किया और उस तरफ दौड़ पड़ा जिधर लिलि पेड़ से उलझी हुई थी।

'लिलि!' भगत ने चिल्लाकर पूछा—'तुम कैसी हो?'

'मुझे बचा लीजिये।' वह कांपते स्वर में बोली 'मैं अभी मरना नहीं चाहती।'

'मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा लिलि।' भगत ने कहा और जल्दी-२ पेड़ पर चढ़ने लगा।

जिस डाल पर वह चिपकी हुई थी उस डाल पर पहुंचकर

[illegible] टहनियां काटने लगा। उसके जिस्म में कई जगह नुकीली टहनियां घुस गई थीं।

भगत ने उसे कन्धे पर लादा और एक हाथ से डाली पकड़ कर नीचे उतर गया और उसे उतारकर जमीन पर लिटा दिया। उसके कपड़े खून से भीगे हुये थे। वह तेज दर्द से कराह रही थी।

'लिलि, यह सब कैसे हो गया?' वह उस पर झुकता हुआ बुदबुदाया।

'होनी को कोई नहीं टाल सकता। मैं मरना नहीं चाहती, परन्तु मौत मुझे अपने निकट आती दिखाई दे रही है।'

'नहीं! तुम नहीं मरोगी।'

'मैं इतनी ज्यादा घायल हो चुकी हूं कि अब तुम मुझे किसी भी तरह नहीं बचा सकते। क्योंकि इस बीहड़ इलाके में कोई अस्पताल नहीं है।'

भगत भी इस बात को अनुभव कर रहा था। नुकीली डालियों व टहनियों ने उसकी छाती व पेट में कई छिद्र बना दिये थे।

'सुनो! तुम्हारी बहादुरी व स्पष्टवादिता से मैं बहुत प्रभावित हुई हूं। विमान में तुमने मेरा जबरदस्ती चुम्बन लिया था। कोई और होता तो मैं उसे पीटती, और एयर पोर्ट पुलीस के हवाले कर देती। परन्तु तुम्हारे चुम्बन से मुझे एक अजीब से आनन्द की अनुभूति हुई थी। दोबारा तुमने मेरे गाल को चूमा था, मुझे बहुत अच्छा लगा था। इच्छा हुई थी—मैं तुम्हारी बांहों में समां जाऊं और तुम मुझे हमेशा चूमते रहो। क्या इस समय तुम मुझे नहीं चूमोगे?'

भगत जैसे कठोर हृदय व्यक्ति की आंखों में भी आंसू आ गये। उसने पागलों की तरह उसके होंठों व चेहरे को कई बार चूम लिया।

वह मुस्करा उठी और बोली—'मुझे विश्वास है, तुम मेरा काम ईमानदारी से कर सकोगे।'

'कैसा काम ?'

'मेरी एक सगी बहन है–मिस ऐलिजा। मैं उससे बहुत प्यार करती हूं। न जाने क्यों वह अपराधी जीवन अपना बैठी है। मैं उसे सुधारना चाहती थी, लेकिन अब मैं यह काम नहीं कर सकती।'

"मगर मिस ऐलिजा रहती कहां है ?'

'अपराधी होने के कारण वह कभी एक देश में टिककर नहीं रही। मुझे मालूम हुआ था कि वह लंदन में है, लेकिन वहां खोज की तो मालूम हुआ वह लन्दन छोड़कर भारत जा चुकी है।'

'भारत में वह किस जगह रहती है ?'

"पता मुझे मालूम नहीं। तुम्हें अपराधियों की दुनिया में उसे खोजना होगा, वह अवश्य मिलेगी। अगर तुम्हारे पास कलम कागज हो तो मुझे दो, मैं उसके लिये कुछ लिखना चाहती हूं।'

भगत ने झट से डायरी व पेन उसकी तरफ बढ़ा दिया। वह कांपते हाथों से लिखने लगी। लिखने के बाद उसने डायरी भगत की तरफ बढ़ा दी।

भगत ने उसे अपनी जेब में रख ली तो वह भगत की कलाई थामकर बोली –'मेरी बहन को मेरा संदेश व पत्र अवश्य ही दे देना। वायदा करो तुम मेरी अंतिम इच्छा अवश्य ही पूरी करोगे।'

'लिलि ! मेरा अब मकसद ही ऐलिजा को ढूंढना होगा।'

'मेरे निकट आओ।' वह बुदबुदाई।

भगत ने अपना चेहरा उसके चेहरे के निकट कर दिया। उसने होंठों पर होंठ रखे, फिर उसकी गर्दन एक तरफ ढलक गई। वह हमेशा की नींद सो गई थी।

भगत उसे फटी-फटी आंखों से निहार रहा था। जैसे उसे विश्वास न आ रहा हो कि जो युवती कुछ क्षण पहले जिन्दा थी। जिससे मन-बहलाव के लिये उसने तरह-तरह के मजाक

किये थे, वह मर गई है।

उसकी मौत का उसे इतना ज्यादा धक्का लगा कि उसकी आंखों में आंसू आ गये।

'लिलि ! काश मैं तुम्हें बचा पाता।' वह बुदबुदाया।

दो आँसू उसके गालों पर गिरे। भगत झुका और उसके सुखे होठों को चूम लिया। फिर उसने खड़े होकर चारों तरफ देखा। आबादी का कहीं नामोनिशान नजर नहीं आ रहा था। वह इस समय किस शहर में, किस जगह मौजूद है, उसे मालूम नहीं था।

लिलि की लाश को भगत ने दोनों हाथों पर उठाया और अंदाजे से एक तरफ को चल पड़ा। लिलि की लाश को जानवरों के भोजन के लिये वह नहीं छोड़ सकता था। लिलि ईसाई थी, अतः वह उसे सही ढंग से दफनाना चाहता था, जिससे उसकी आत्मा भटकती न रहे।

लेकिन वह शहर तक बिना मुसीबतों के पहुंच जायेगा उसे मालूम नहीं था।

चार···

असलम इस तरह उछला जैसे एकाएक किसी ने उस पर गोली चला दी हो।

असलम, मेरे साथ आओ।' कोई उसके कान में बुदबुदाया।

असलम ने उस तरफ देखा–वह कोई अजनबी था। होठों पर घनी मूंछ, दांत बाहर को निकले हुये थे।

'इस तरह क्या देख रहे हो ? मैं चिड़िया घर का जानवर नहीं, जल्दी करो, अन्यथा अपराधी निकल जायेगा।'

'···तुम···मैं तुम्हें पहचान नहीं सका था।'

'अब तुमने देर की तो तुम्हारी लम्बी मूंछें कतर दूंगा।'

असलम तेजी से विनय के साथ बाहर की तरफ बढ़ा।

एक काली कार को उन्होंने बाहर निकलते हुये देखा, जिसमें भंयकर सूरत वाला, गंजा व दो और व्यक्ति बैठे हुये थे।

विनय, असलम के साथ जल्दी से कार में बैठा और इंजन चालू करके कार को गति दे दी। कुछ देर बाद वह काली कार का पीछा कर रहे थे।

'विनय, गंजे व्यक्ति के पास अवश्य हीरे मौजूद थे। इन सबको रंगे हाथों गिरफ्तार कर सकते थे।'

जितनी लम्बी तुम्हारी मूंछे हैं, अगर उतनी लम्बी अक्ल होती तो क्या बात थी। अबे मूर्ख राज, अगर हम उन्हें गिरफ्तार कर लेते तो उनका बास साफ बच जाता।'

'मेरे विचार से भंयकर सूरत वाला ही उनका बास लगता है।'

'मान लेते हैं, लेकिन इस समय हमारी टक्कर अन्तर्राष्ट्रीय अपराधियों से है। अगर हम उन्हें गिरफ्तार कर लेते तो उनके अड्डे की जानकारी हमें न मिल पाती।'

विनय सही कह रहा था, इसलिये असलम खामोश हो गया। कार इस समय एक सुनसान सड़क पर पर दौड़ रही थी।

भंयकर सूरत वाला बार-२ पलट कर देख लेता था। एका-एक वह बोला—-लगता है हमारा पीछा किया जा रहा है।

'मैं भी यही कहने वाला था।'

अगले मोड़ पर भंयकर सूरत वाले ने कार की गति कम कर दी। तब उसे पिछली कार में बैठे व्यक्ति दिखाई दिये।

'यह तो वही है, जिससे एयर पोर्ट पर मेरी टक्कर हुई थी। वह चौंक पड़ा, फिर गुर्राया 'फायर करो।'

दोनों खिड़कियों से रिवाल्वर बाहर झांकने लगी—-'धांय'''धांय' की आवाज के साथ उनकी नालों से शौले निकलने लगे।

शीशा झनझनाहट की आवाज के साथ टूटा और गोली इन दोनों के बीच से निकल गई।

विनय ने कार को फुर्ति से एक तरफ को मोड़ा और चीख

उठा—'असलम फायर करो।'

असलम का रिवाल्वर भी गरज उठा—-'धांय'''धांय''''''धांय।'

विनय ने मूछें व स्प्रिंग निकालकर जेब में रख लिया था इस समय वह अपनी असली सूरत में था।

सुनसान इलाके को गोलियों की आवाज भेदने लगी। विनय बड़ी सावधानी से कार चला रहा था। गोलियां उसके आस-पास से निकल जाती थी। दुश्मनों को पीछा किया जाने का पता लगते ही उसने फायरिंग का आदेश दिया था, लेकिन अभी तक दोनों तरफ से किसी का भी निशाना सही नहीं बैठा था—कारें दौड़ रही थीं।

● ●

'लगता है हम इस तरह उनसे पीछा नहीं छुड़ा सकते।' भयंकर सूरत वाला बोला।

'फिर अब क्या विचार है?' साथ वाले व्यक्ति ने उससे पूछा—-

'मार्ग रोकना होगा, जिससे वह आगे न बढ़ सकें और हम भाग निकलने में सफल हो जाये।'

'लेकिन मार्ग रोकने के लिये हमारे पास कोई वस्तु नहीं।

'हूं' भंयकर सूरत वाला बोला -'शायद काला पानी को तुम भूल गये होंगे।'

'मैं समझा नहीं।'

''खोपड़ी के सिवाय उसका सारा जिस्म हमारे लिये बेकार है—चाकू निकालो।'

गंजा व्यक्ति सब कुछ समझते हुये भी कुछ नहीं समझ रहा था। क्योंकि उसे इस तरह की दवाईयां खिला दी गई थीं कि उसमें विरोध शक्ति समाप्त हो गई थी।

चश्मा वह उतार चुका था—अतः इस समय खोई-खोई

नजरों से उसे देख रहा था।

साथ बैठे व्यक्ति ने चाकू निकालकर भयंकर सूरत वाले को थमा दिया उसने उसकी धार देखी, फिर गंजे व्यक्ति का सिर पकड़ कर अगली सीट पर झुका दिया।

उसने कोई विरोध नहीं किया भयंकर सूरत वाले ने उसकी गर्दन पर चाकू रखा और उसे रेतने लगा। कितना घृणाप्रद व भयंकर दृश्य था। एक आदमी दूसरे आदमी की गर्दन इस तरह काट रहा था-जैसे वह इन्सान न होकर कोई जानवर हो।

इस दृश्य को देखकर कार में बैठे दूसरे व्यक्ति कांप उठे। वह व्यक्ति दर्द के मारे चीख उठा, लेकिन उसने अपने बचाव की कोशिश नहीं की, क्योंकि उसकी विरोध शक्ति समाप्त हो चुकी थी।

गर्दन कटने के साथ ही खून के छींटें इधर-उधर छितरा गये। दर्द के मारे वह बुरी तरह तड़प रहा था, लेकिन दूसरे व्यक्ति ने उसके जिस्म को मजबूती से पकड़ रखा था।

आधी से ज्यादा गर्दन कटकर लटक गई—उसके जिस्म की तड़पन धीरे-२ कम होने लगी।

पूरी गर्दन कट कर अगली सीट पर गिर पड़ी तो भयंकर सूरत वाला गुर्राकर बोला—'इसके जिस्म को सड़क पर फैंक दो।'

खून से अगली व पिछली सीट लाल हो गई थीं। उस व्यक्ति ने दरवाजा खोला और उसके जिस्म को सड़क पर फैंक दिया।

● ●

गोलियां चलनी एकाएक बन्द हो गई थीं।

'विनय ! शायद उनके पास अब गोलियां खत्म हो गई हैं।'

'नहीं, वह हमें मूर्ख बनाने के लिये शायद कोई दूसरी योजना बना रहे हैं।'

दोनों कारें आगे–पीछे दौड़ रही थीं। एकाएक वह लोग चौंक उठे। अगली कार से इस तरह की चीख सुनाई दी, जैसे किसी मनुष्य को जिब्हा किया जा रहा हो।

'इस चीख के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?' असलम ने पूछा।

'गंजा व्यक्ति जिसके कारण हम उनके पीछे लगे हैं—मेरे विचार से उसे कत्ल कर दिया गया है।'

तभी अगली कार का पिछला दरवाजा खुला और एक जिस्म बाहर आकर गिरा। निकट पहुंचते ही विनय ने ब्रेक लगाकर कार रोक दी। दोनों नीचे उतर आये। सड़क पर सिर कटी लाश पड़ी थी।

'यह लाश उसी गंजे व्यक्ति की है जो हीरे लेकर आया था।' विनय बोला—'उन्होंने शायद इसे इसलिये काट कर फैंक दिया है कि हम इससे उलझकर रह जायें और वह भाग निकलने में सफल हो जायें—जल्दी कार में बैठो।'

"....लेकिन हीरे।"

"—मूर्खराज। हीरे उन्होंने इस लाश के पास नहीं छोड़े होंगे।'

दोनों कार में बैठ गये। कार सड़क पर दौड़ने लगी—लेकिन उनको देर हो चुकी थी। अपराधी अपनी चाल में कामयाब रहे थे। काली कार का दूर–दूर तक पता नहीं था।

'विनय। अब क्या होगा ?' असलम ने पूछा।

"अब हम कीर्तन करेंगे। तुम बाजा बजाना मैं गाऊंगा—'सनम हमें छोड़कर अकेले भाग गये।'

असलम बुरा सा मुंह बना कर रह गया। ● ●

राजेश कोठी में प्रविष्ट हुआ तो वहां मौत जैसा सन्नाटा छाया हुआ था। सारी कोठी अन्धकार में डूबी हुई थी, सिर्फ अलका के कमरे में रोशनी हो रही थी।

आकाश में बादल छाये हुए थे। एकाएक बिजली चमकी। सारी कोठी एक क्षण के लिये रोशन हो गई। उसने सर्वेन्ट क्वाटर के पास कालिया को खड़े देखा, जो उसी को देख रहा था।

'काली।' राजेश ने उससे पूछा 'क्या अलका अपने कमरे में है?'

'बेटी अपने कमरे में ही है, मालिक।' उसने भर्राये स्वर में कहा।

'बात क्या है?'

'मालिक! बेटी को दुखी देखकर मुझे रोना आ रहा है। जब से राय साहब की मौत हुई है, वह रो रही है।'

'ओह!' राजेश तेजी से अलका के कमरे की तरफ बढ़ गया। धक्का देते ही दरवाजा खुल गया।

अलका नाईट गाऊन पहने पलंग पर लेटी शून्य में निहार रही थी। राजेश को देखते ही वह उठ बैठी और दौड़कर उससे लिपट गई और फिर उसकी छाती पर सिर रख कर सुबकने लगी।

राजेश उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरने लगा। फिर पूछा- 'यह सब कैसे हो गया अलका?'

'आजकल किसी पर विश्वास नहीं रहा राजेश! डैडी जिस पर विश्वास करते थे, उसी ने डैडी को कत्ल कर दिया।'

'कौन?'

'मोहन! वह इस समय हिरासत में है और स्वयं को बेगुनाह कहता है।'

'तुम चिन्ता न करो। मैं उसे फांसी के तख्ते तक लेजाऊंगा। लेकिन अब रोना छोड़ो, जो होना था हो गया।'

अलका ने आंसूओं से भीगा चेहरा उठाकर राजेश की तरफ देखा। राजेश ने उसके आंसू पोंछे, उसके भोले चेहरे पर उसे इस समय इतना प्यार आया कि उसने झुक कर उसके अध खुले होंटों को चूम लिया। फिर उसे पलंग पर बैठाकर बोला—

'हिम्मत से काम लो, अलका। तुम तो पढ़ी–लिखी लड़की हो।'

'लेकिन अब मैं अकेली रह गई हूं। अपना किसे कह सकती हूं।'

'राजेश तुम्हारा है अलका, तुम्हारी हर प्रकार से सहायता करेगा।'

'ओह राजेश, तुम कितने अच्छे हो।' उसने भावावेश में कहा और राजेश के होंठों को कई बार चूम लिया।

कुछ देर बाद राजेश बोला—'अब मैं चलता हूं।'

नहीं! मुझे डर लगता है, आज तुम यहीं रह जाओ।'

राजेश इन्कार नहीं कर सका। दो पलंग साथ-२ बिछे हुए थे। कपड़े उतारकर वह पलंग पर लेट गया।

तभी बड़ी जोर से बिजली गरजी। अलका उछलकर राजेश के पलंग पर आ गई और उससे लिपटती हुई बोली—'मुझे डर लगता है राजेश, मुझे अपनी बांहों से अलग मत करना।'

राजेश ने उसे बांहों में भींच लिया। फूस, चिन्गारी जब एक साथ पड़े हों तो आग लगती ही है। उस कमरे में भी आग लग गई।

दो जवान दिल एक हो जाने के लिये मचलने लगे। राजेश ने उसके गाऊन की डोरी खींच दी और फिर दोनों एक दूसरे में समां जाने की कोशिश करने लगे।

• •

दो काली परछाईयाँ कोठी की तरफ बढ़ रही थीं। उनमें एक ठिगना व एक लम्बा व्यक्ति था। उन्होंने ओवरकोट व हैट पहन रखा था। ओवरकोट के कालर कान तक खड़े थे, हैट माथे तक झुका हुआ था। वह कौन है, पहचानना कठिन था।

दीवार फांद कर दोनों कोठी के अन्दर कूद गये। कोठी अन्धकार में डूबी हुई थी, चारों तरफ मौत जैसा सन्नाटा छाया हुआ था।

कुछ क्षण वह जमीन पर बैठे हुये आहट लेते रहे। फिर ठिगने कद का व्यक्ति बोला—'लगता है अलका अपने कमरे में सो रही है।'

'तुम्हें मालूम है उसका प्रेमी राजेश भी उसके साथ है।'

'मुझे मालूम है। इसीलिये तो ज्यादा डर नहीं है।'

'क्यों ?'

'प्यार करने के बाद दोनों थक कर गहरी नींद में सो रहे होंगे।'

'कालिया भी तो कोठी में मौजूद होगा।'

'वह शायद कोठी में मौजूद नहीं है। अगर होगा भी तो सो रहा होगा।'

'तब तो हम हीरों को बड़ी आसानी से तलाश कर सकते हैं।'

तभी पीछे आहट हुई, उसी के साथ बिजली चमकी। दोनों फुर्ति से पलटे और चौंककर एक कदम पीछे हट गये। सामने ही भयंकर सूरत वाला खड़ा था।

'डर गये ?'

'तुम···तुम यहां कैसे ?'

'मैं जानता था—तुम लोग यहां आओगे।' भयंकर सूरत वाला अपने दोनों हाथों में पकड़े चाकूओं को एक-दूसरे पर रगड़ते हुये बोला।

'हम हीरे लेने आये हैं।' ठिगना व्यक्ति बोला।

हीरे का एक भी टुकड़ा तुम लोगों को नहीं मिलेगा।'

लम्बे व्यक्ति ने जेब की तरफ हाथ बढ़ाया।

बेटे।' भयंकर सूरत वाला गुर्राकर बोला 'हाथ बाहर ही रखो। अन्यथा तुम जानते ही हो कि मेरा निशाना कितना सच्चा है।'

उसके हाथ जहां थे, वहीं रह गये।

'तुम हमारे साथ गद्दारी कर रहे हो।' वह गुर्राया।

"कैसी गद्दारी ?'

'हीरों में आधा हिस्सा हमारा भी है। हिस्सा देने की बजाये तुमने हमारे एक आदमी को एयर पोर्ट पर कत्ल कर दिया था।'

'हिस्सा तुम लोगों को नहीं मिलेगा। मैं पहले ही कह चुका हूं। तुम्हारे दल का एक व्यक्ति तो मारा गया है। तुम दोनों भी मरने के लिये तैयार हो जाओ।'

लम्बे व्यक्ति ने उस पर छलांग लगानी चाही, लेकिन उसी समय भयंकर सूरत वाले ने चाकू उस पर खींच मारा।

वह चीख उठा और जमीन पर गिरकर ढेर हो गया। चाकू का फल दिल को चीरता हुआ अन्दर समा गया था।

तभी बादल बड़ी जोर से गरजा और पानी बरसने लगा। दूसरा व्यक्ति भयभीत होकर भागा। लेकिन भयंकर सूरत वाले ने अपना एक कदम आगे बढ़ाया और उस पर भी चाकू खींच मारा।

उस व्यक्ति के कण्ठ से भी चीख की आवाज निकली और वह आगे को झुकता चला गया और मुंह के बल जमीन पर गिरा। चाकू उसकी पीठ में दिल के पास धंस गया था।

उसने दोनों लाशों पर एक नजर डाली और एक तरफ को बढ़ गया।

पानी बरस रहा था और दोनों के जिस्मों से रक्त बहकर पानी में मिल रहा था। लाशों के कारण वहां का वातावरण और भी ज्यादा भयंकर हो गया था।

विनय जब कोठी पर पहुंचा तो सुषमा जाग रही थी। भयंकर सूरत वाले के भाग जाने के कारण विनय का मूड बहुत खराब हो रहा था।

'इतनी रात को कहां से आ रहे हो?' सुषमा ने उससे पूछा।

'आवारा गर्दी करके आ रहा हूं। तुमसे मतलब?'

'क्या बात है इतना उखड़े हुये क्यों हो?'

'तुम जाकर सो जाओ, तंग मत करो।'

'खाना तो खा लो।'

'भूख नहीं है।' उसने कहा और तेजी से अपने कमरे की तरफ बढ़ गया।

सुषमा उसे आश्चर्य भरी निगाहों से देखती रह गई। आज उसका व्यवहार उसकी समझ में नहीं आया था।

उसने साड़ी का पल्लू ठीक करा और अपने कमरे की तरफ बढ़ गई।

विनय के चेहरे पर गहरी कठोरता छाई हुई थी। उसने रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाये।

दूसरी तरफ से दीपक की आवाज आते ही वह बोला—

'मैं विनय बोल रहा हूं। क्या सो रहे थे?'

'नहीं।'

'तो इसी समय सब सदस्यों को सूचित करो—भयंकर सूरत वाले की तलाश करें।'

'क्या वह भाग निकला?'

'हां।'

'हुलिया बताईये।'

विनय ने हुलिया बताया और फिर रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

पांच···

बाण्ड ने पेनी को बाँहों में भींच कर उसके होंठों पर होंठ रख दिये।

एक भरपूर चुम्बन लेने के बाद जब वह अलग हुआ तो पेनी ने पूछा - 'उन अपराधियों के बारे में कुछ मालूम हुआ, जिनको तुम खोज कर रहे थे?'

'हीरों के स्मगलर··· ?'

'हां।'

'अभी कोई सुराग हाथ नहीं लगा।'

'कल गिल्ट हाल में हीरों की प्रदर्शनी है। शायद वहां कोई सूत्र हाथ लग जाये।'

'मेरा वहाँ जाने का पहले से ही विचार है। तुम भी वहां चलना।'

'चलूंगी।'

बाण्ड ने फिर उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिये और चोली का हुक हटा दिया। उसके हाथ उभरे हुये अंगों की तरफ बढ़े, फिर जिस्म पर रेंगने लगे।

उसने जांघिये का हुक भी हटा दिया। पेनी उत्तेजित होकर उससे लिपट गई और फिर दीवारों ने भी शर्माकर आंखें बन्द कर लीं।

सवेरे जब बाण्ड की नींद खुली तो पेनी सो रही थी। लिहाफ एक तरफ को खिसक गया था और उसका नग्न जिस्म कुन्दन के समान चमक रहा था। अधखुले होंठों को उसने झुक कर चूम लिया।

पेनी की नींद उचट गई। उसने मुस्कराकर बाण्ड की तरफ देखा। थोड़ी देर बाद दोनों तैयार होकर दोनों बाहर निकल आये। एक रेस्तरां में उन्होंने नाश्ता किया, फिर आफिस की

ओर बज … ।

बाण्ड जब कमरे में पहुंचा तो मिस मेरी गुडनाईट मुस्करा कर बोली—'गुडमार्निंग बाण्ड ।'

'गुडमार्निंग ।'

'आज फिर तुम आधा घन्टा लेट हो ।'

'नींद देर से खुली ।'

'यह क्यों नहीं कहते, किसी लड़की के साथ रंगरेलियां मनाते रहे हो ।'

बाण्ड ने देखा अब वह बोर करेगी । इसलिये जल्दी से बोला—'मैं आधे घन्टे बाद आऊंगा ।'

'एम से मिलते जाओ । वह तुम्हें थोड़ी देर पहले याद कर चुका है ।'

बाण्ड तेजी से मुड़ा और एम के कक्ष की ओर चल पड़ा । पेनी अपना काम सम्भाल चुकी थी । दोनों ने एक-दूसरे की तरफ मुस्कराकर देखा । फिर बाण्ड दरवाजा खोलकर एम॰ के कमरे में प्रविष्ट हो गया ।

एम॰ किसी फाइल पर झुका हुआ था । नजरें उठा कर उसने बाण्ड की तरफ देखा, और फिर बाण्ड से बोला—'बैठ जाओ ।'

बाण्ड उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया ।

एम॰ ने फाईल बन्द की और सिगार होंठों से लगाते हुए पूछा—'कामन का कुछ पता लग सका ?'

'नहीं, लेकिन मेरी कोशिश जारी है ।'

'जानते हो इस सप्ताह लन्दन में पचास लाख पौंड के हीरे बिक चुके हैं । कामन व उसके दल का सफाया करना बहुत आवश्यक हो गया है ।'

'उसका काम करने का ढंग इतना अच्छा है कि अपने पीछे कोई सूत्र नहीं छोड़ता ।'

'आज गिल्ड हाल में हीरों की प्रदर्शनी है । तुम वहां चले

जाना । हीरों के स्मगलर ऐसे स्थानों पर अवश्य आते हैं । चाहो तो किसी को भी साथ ले जा सकते हो ।'

'मैं मनी-पेनी को साथ ले जाऊंगा ।'

'ठीक है, अब तुम जा सकते हो ।'

● ●

समय से कुछ पहले ही जेम्स बाण्ड, मनी-पेनी के साथ गिल्ड हाल पहुंच गया । वहां बहुत सख्त पहरा था । गुप्तचरों का जाल चारो तरफ फैला हुआ था । इसके अलावा हथियार बन्द पुलिस भी वहां मौजूद थी । हाल में जगह-जगह गुप्त रूप से कैमरे फिट थे ।

वहां भारी भीड़ थी, लोग आ-जा रहे थे । बाण्ड का विचार था कि वहां कामन अवश्य आयेगा । शीशे के शो केस में तरह तरह के हीरे, पन्ने, नीलम व जवाहरात रखे हुये थे । कई तो इतने बड़े व सुन्दर थे कि देखकर आंखें आश्चर्य से फैल जाती थी ।

'जेम्स !' पेनी ने फुसफुसा कर पूछा—'कामन कहीं नजर आया ?'

'नहीं, हो सकता है वह मेकअप में मौजूद हो ।'

कौने वाले शो केस के पास दो व्यक्ति खड़े थे । बाण्ड व पेनी भी उसी तरफ चल पड़े ।

एकाएक बाण्ड ने पेनी को हाथ पकड़कर रोक लिया । उसे दोनों की फुसफुसाहट सुनाई दी थी ।

'इस शो केस के अन्दर रखे हीरे बहुमूल्य नजर आते हैं ।' एक आवाज ।

'तुम्हें मुझसे ज्यादा परख है । वैसे तिकोने शो केस में रखा नीलम भी मूल्यवान है ।'

'हां । कामन का आदेश था कि प्रदर्शनी से बहुमूल्य पत्थर

ही उठाये जायें और उनकी जगह उसी शक्ल के दूसरे पत्थर रख दिये जायें।'

'ठीक है। यह काम हम परसों रात को उस समय करेंगे, जब प्रदर्शनी खत्म हो जायेगी।'

तभी पीछे से आहट की [illegible] सुनकर दोनों खामोश हो गये और आगे बढ़ गये।

वाण्ड पेनी के साथ उन [illegible] जो केस में पड़े हीरों को देखने लगा।

'जेम्स।' पेनी मुस्कराते हुये बोली—'दोनों ही कामन के एजेण्ट नजर आते हैं।'

'डार्लिंग! शत-प्रतिशत वह कामन के एजेन्ट हैं।'

वाण्ड ने कनखियों से देखा वह दोनों बाहर की तरफ जा [illegible] थे।

वह [illegible] पेनी [illegible] साथ दरवाजे की तरफ बढ़ने [illegible]।

एकाएक वह कामन के एजेन्टों से टकरा जायेगा, इसका कभी सोचा भी नहीं था। कामन के दोनों एजेण्ट उसके सामने से [illegible] से बाहर जा रहे थे। [illegible] बैठ गया।

इन्जन चालू करके उसने अपनी कार को गति दे दी। थोड़ी देर बाद वह अगली कार का पीछा कर रहा था।

अगली कार ने कई बाजारों के चक्कर लगाये, लेकिन वह किसी जगह रुकी नहीं।

'जेम्स।' पेनी बोली—'लगता है उनको हम पर शक हो गया है।'

'शायद।'

तभी वह अगली कार रुक गई। इस तरह कि वाण्ड की कार आगे न जा सके।

'उनके इरादे खतरनाक नजर आते हैं।'

'डार्लिंग। हमारे इरादे भी कम खतरनाक नहीं हैं।' वाण्ड ने कहा और कार उनके निकट पहुंचकर रोक दी और नीचे उतर

आये।

'क्या आप लोग कार बीच सड़क से हटा नहीं सकते?' वांड ने नम्र स्वर में कहा।

'क्या हम जान सकते हैं कि तुम हमारा पीछा क्यों कर रहे हो?' उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा।

'हम तुम्हारा पीछा क्यों करेंगे? तुम्हें गलतफहमी हो गई है।'

'यह कोई जासूस नजर आता है।' दूसरा व्यक्ति बोला—'इसे ऐसी हालत में पहुंचा दो कि फिर कभी पीछा न कर सके।'

कहने के साथ ही उसने हाथ चला दिया। वाण्ड के चेहरे पर घूंसा पड़ा।

जैसे ही उसने दोबारा वार किया। वाण्ड एक तरफ को हट गया और जोर से उसके पेट में लात जमा दी। वह दूर जा गिरा।

पहले व्यक्ति ने भी वाण्ड पर आक्रमण कर दिया था। वाण्ड ने झुक कर उसे दोनों हाथों पर उठाया और सड़क पर पटक दिया।

उसका सिर फट गया। दूसरे व्यक्ति ने उठते ही रिवाल्वर निकाल लिया था लेकिन पेनी पूर्णतया सतर्क थी। उसने उछल कर हवाई किक मारी।

वह व्यक्ति इस बार भी कलाबाजियां खाता हुआ दूर जा गिरा।

पहला व्यक्ति, जैसे ही उठकर खड़ा हुआ, वाण्ड ने उसे गर्दन से पकड़ा और उसके थूथन पर एक टक्कर जड़ दी। दो घूंसे लगातार उसके पेट में पड़े।

वह लहरा कर गिरा, फिर उठ नहीं सका। उसकी नाक की हड्डी टूट गई थी और रक्त बहने लगा था।

दूसरे व्यक्ति ने अपने साथी की हालत देखी तो ढलान पर पर भागता चला गया।

पेनी ने चोली से पिस्टल निकाल कर उस पर फायर किया—

'धांय-धांय।'

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वह अन्धेरे में लोप हो गया था।

'जाने दो, हमारे लिये एक ही आदमी काफी है।' बाण्ड ने कहा और उसे उठाकर अपनी कार की पिछली सीट पर डाल दिया।

इस बार पेनी ने ड्राईविंग सम्भाली। इन्जन चालू करके कार को गति दे दी।

कार जब कुछ दूर निकल गई तो दूसरा व्यक्ति ढलान पर चढ़ता दिखाई दिया।

बाण्ड की कार अभी दूर नहीं गई थी, जब वह व्यक्ति अपनी कार तक पहुंचा।'

अपना रिवाल्वर उसने उठा लिया था। उसका चेहरा [illegible] हो रहा था। आंखों में खून उतरा हुआ था।

● ●

कार को कम्पाउन्ड में खड़ी करके उसने बेहोश व्यक्ति को कन्धे पर उठाया और अन्दर की तरफ चल पड़ा।

कमरे में पहुंचकर बाण्ड ने उसे पलंग पर लिटा दिया, फिर बोला—'पेनी। ठन्डा पानी लाओ, इसे होश में लाना जरूरी है। कामन के बारे में इससे जानकारी मिल सकती है।'

पेनी ने फ्रिज से बोतल निकाली और ठन्डा पानी उसके चेहरे पर छिड़कने लगी। कुछ ही क्षणों में उसने आंखें खोल दीं। नाक पर हाथ फेरते हुये वह कराह उठा। फिर उसने दोनों की तरफ भयभीत निगाहों से देखा और पूछा—'तु[illegible] कहां आये हो ?'

'तुम इस समय मेरी कोठी पर हो।' बाण्ड नम्र स्वर [illegible]

बोला—'मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर दे दो। फिर तुम्हें छोड़ दिया जायेगा।'

"क्या पूछना चाहते हो ?"

"तुम्हारा नाम ?"

"जेम्स बाल्टर।"

"कामन के लिये काम करते हो ?"

'कामन कौन ? मैं किसी कामन को नहीं जानता।'

"झूठ बोलोगे तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।" बाण्ड का स्वर कठोर हो गया।

"मैं झूठ क्यों बोलूंगा ?"

"गिल्ड हाल से मैंने तुम दोनों को कामन के बारे में बात करते सुना था। तुम लोग वहां से बहु मूल्य हीरे चुराना चाहते थे।'

"तुम्हें गलत फहमी हुई है।"

बाण्ड का चेहरा कठोर हो गया। उसने जोर से उसके चेहरे पर थप्पड़ जड़ दिया।

वह बाण्ड पर टूट पड़ा। बाण्ड उसके साथ ही फर्श पर गिर पड़ा, लेकिन वह तुरन्त ही उठा और उसके सिर पर एक ठोकर जमा दी। फिर झुककर उसे बालों से पकड़ा और उसके पेट में कई घूंसे जमा कर पलंग पर उछाल दिया।

पलंग पर गिर कर बाल्टर लम्बी-२ साँसे लेने लगा।

"बाल्टर।" बाण्ड गुर्राया—'अब भी अगर तुमने मुख नहीं खोला तो तुम्हारी एक टांग व बांह तोड़ दूंगा।'

उसने बाण्ड की तरफ खूनी निगाहों से देखा, लेकिन बोला कुछ नहीं।

बाण्ड ने उसकी एक बाजू पकड़ी और उमेठने लगा।

पेनी एक तरफ खड़ी खामोशी के साथ व्हिस्की पीते हुये तमाशा देख रही थी।

बाल्टर दर्द से कराहने लगा, लेकिन बाण्ड उसकी बाजू उमेठता चला गया।

'फिर' की आवाज हुई और उसके कन्धे का जोड़ उखड़ गया। वह दर्द के कारण चीख उठा।

बाण्ड की आंखों में इस समय खून उतर आया था। वह [illegible] एक टांग पकड़ता हुआ गुर्राया—'अब भी बता दो, [illegible] इस बार तुम्हारी टांग की बारी है।'

"ठहरो मैं बताता हूं।" वह एकाएक चिल्ला उठा।

बाण्ड ने उसकी टांग छोड़ दी वह अपने कन्धे को थामे हुये कराहने लगा।

"पेनी व्हिस्की की बोतल देना।"

पेनी ने बोतल बाण्ड को थमा दी। बाण्ड ने कार्क हटाकर बोतल वाल्टर के होंठों से लगा दी। थोड़ी व्हिस्की पेट में जाने के बाद वाल्टर ने अपने हाथ से बोतल हटा दी।

'अब पूछो क्या पूछना चाहते हो ?' वह मरी आवाज में बोला।

'तुम कामन के एजेन्ट हो ?'

'हां।'

'कामन इस समय कहां है ?'

'भारत में।'

'क्यों ?'

हीरों के चक्कर में उसे वहां जाना पड़ा, क्योंकि उसे ऐसा आभास मिला था कि दूसरा दल उसके साथ गद्दरी कर रहा है।'

'दूसरा दल कौन सा है ?'

'इस समय वह भी भारत में ही मौजूद है। लेकिन उनके नाम क्या हैं मैं नहीं जानता।'

'लन्दन में कामन का अड्डा कहा है ?'

'बैरन रोड···कोठी नम्बर पांच।'

"धांय··· ।'

तभी एक फायर हुआ और गोली वल्टर की छाती में समा गई।

'धांय···धांय !' दो और फायर हुये और साथ ही पेनी की चीख कमरे में गूंज उठी। बाण्ड फुर्ति के साथ फर्श पर लेट गया था।

फिर कोई फायर नही हुआ। बाण्ड उठ खड़ा हुआ। पेनी अपने कन्धे को दबाये फर्श पर बैठी हुई थी।

बाण्ड पेनी के निटक पहुच गया। पेनी उत्तेजित [illegible] बोली—

'जेम्स।' मैं खतरे से बाहर हूं। तुम हत्यारे को पकड़ो।

बाण्ड रिवाल्वर निकालकर तेजी से बाहर की तरफ लपका। उसे एक मानव आकृति दीवार पर [illegible] कूदती हुई दिखाई दी थी।

बाण्ड और भी तेजी से उस तरफ दौड़ पड़ा। दीवार फांद-कर वह दूसरी तरफ पहुंचा। उसे एक कार उसी समय गति पकड़ती हुई दिखाई दी।

"धांय ! धांय !" बाण्ड ने फायर झोंक दिये। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। कार मोड़ पर मुड़कर आँखों से ओझल हो गई।

उसने गहरी सांस ली और कोठी में वापस लौट आया। हत्यारे ने खिड़की से फायरिंग की थी।

वाल्टर की छाती में सुराख बन गया था। जिससे बहकर रक्त ने उसके कपड़े लाल कर दिये थे।

"पेनी तुम ठीक तो हो ?'

'गोली कन्धे पर लगी है।'

बाण्ड बोला—'तुम्हें अस्पताल पहूंचाना जरूरी है। आओ मेरे साथ, रास्ते में मैं एम० से बात कर लूंगा।'

बाण्ड ने पेनी को सहारा दिया और कार तक ले गया। अपने साथ अगली सीट पर उसे बैठाकर बाण्ड ने कार को गति दे दी। फिर कार में फिट ट्रांसमीटर को सैट करने लगा।

दूसरी तरफ से एम० की आवाज आते ही वह बोला- 'मैं जेम्स बाण्ड बोल रहा हूं सर।'

'क्या रिपोर्ट है ?'

'मेरी कोठी के कमरे में एक लाश पड़ी है।'

'क्या मतलब ?'

'वह कामन का एजेन्ट था। कामन के एजेन्ट ने ही उस पर उस समय गोली चलाई, जब वह मुझे सब कुछ बता रहा था। हम दोनों पर भी गोली चलाई गई। कामन का एजेन्ट मारा गया पेनी के कन्धे पर गोली लगी और मैं बच गया।

'ओह !'

'कामन के अड्डे का पता लग गया है। बैरन रोड, कोठी नम्बर पांच। आप फोर्स लेकर वहां पहुंचिये, मैं पेनी को अस्पताल छोड़कर आ रहा हूं।'

'मेरी कोठी पर भी कुछ व्यक्ति भेज दीजिये, जो कामन के एजेन्ट की लाश को कब्जे में कर लें।'

'ठीक है।'

'ओवर एण्ड आल।'

● ●

खून अधिक निकल जाने के कारण पेनी पर कमजोरी छाने लगी थी। उसने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं।

अस्पताल में पेनी को दाखिल कराकर वाण्ड बैरन रोड की तरफ चल पड़ा। पेनी को दाखिल कराने में उसे लगभग पन्द्रह मिनट लग गये थे।

पेनी खतरे से बाहर थी, लेकिन वाण्ड को तब भी चिन्ता लगी हुई थी। शायद ऐसा इसलिये था कि वह पेनी को बहुत प्यार करता था।

उसने निश्चय किया था अगर उसे हत्यारा मिल गया तो वह उसका जबड़ा अवश्य तोड़ देगा।

बैरन रोड की कोठी नम्बर पांच के निकट जब वाण्ड पहुंचा

ना वहां फोर्स पहुंच चुकी थी। एम० भी साथ में था।

कोठी अन्धकार में डूबी हुई थी। वहां मौत जैसा सन्नाटा छाया हुआ था। एम० के आदेश पर अड्डे को चारों तरफ से घेर लिया गया था।

फिर एन० ने माईक सम्भाला और बोला—'कोठी नम्बर पांच में रहने वालों को आदेश दिया जाता है कि वह बाहर निकल कर आत्मसमर्पण कर दें। कोठी को चारों तरफ से घेर लिया गया है।'

लेकिन कोठी के अन्दर से कोई उत्तर नहीं आया वहां पहले जैसा सन्नाटा छाया हुआ था।

'भागने या कोई भी चालाकी करने का अंजाम अच्छा नहीं होगा। हम केवल पांच मिनट का समय देते हैं। आत्मसमर्पण कर दो।'

अगल-बगल की कोठियों से लोग बाहर झांक-२ कर देख रहे थे। कुछ लोग बाहर निकल आये थे। जिन्हें मिलिटरी के आफिसरों ने अन्दर भेज दिया था।

इस बार भी कोई उत्तर नहीं मिला तो वाण्ड बोला—

'सर लगता है कोठी खाली है।'

एम० ने एक स्टेनगन सम्भाली और यूंही अन्दर फायर करने लगा।

'धांय···धांय ··धांय···।'

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एम० ने फोर्स को अन्दर प्रविष्ट होने का आदेश दे दिया।

कोठी सचमुच ही खाली थी। वहां कोई भी व्यक्ति नहीं था। एक कमरे में चार निनाम आत्रे भरे हुये रखे थे। जिसका मतलब था कि वह लोग बोखलाहट में जल्द से जल्द भाग निकले हैं।

वाण्ड ने अन्दाजा लगाया—यह सब उसी हत्यारे के कारण हुआ है, जिसने उसकी कोठी पर गोलियां चलाई थीं।

वह लोग शायद कुछ मिनट देर से पहुंचे थे। अगर पहले पहुंचते तो शायद कामन के एजेन्ट को गिरफ्तार करने में सफल हो जाते।

● ●

एम० ने बाण्ड को भारत जाने के लिये इजाजत दे दी थी। बाण्ड पूरी तैयारी के साथ एयर पोर्ट पर पहुंच गया। पेनी उसे छोड़ने आई थी।

तभी प्रसारित किया गया–भारत की राजधानी के लिये रवाना होने वाला विमान आधे घन्टे बाद उड़ेगा। यात्रियों को चाहिये अभी से अपनी सीट ग्रहण कर लें।

'जेम्स ! पेनी बोली—'अभी विमान उड़ने में देर है, क्यों न एक-एक कप काफी हो जाये ?'

'अवश्य।'

'दोनों काफी हाऊस में आ गये। बाण्ड ने दो कप काफी का आर्डर दे दिया।

'डियर।' पेनी उठती हुई बोली—'मैं अभी बाथरूम से निपट कर आई।'

पेनी चली गई। और बाण्ड हाल में नजरें दौड़ाने लगा। लेकिन उसे कोई संदिग्ध व्यक्ति नजर नहीं आया। लेकिन कोने वाली सीट पर बैठे व्यक्ति को वह नहीं देख सका। क्योंकि उस के चेहरे के आगे अखबार थी।

पेनी बाथरूम से बाहर निकली। गोली सिर्फ खाल में ही धंस कर रह गई थी। इसलिये पेनी की स्थिति अधिक खराब नहीं हुई थी। गले से पट्टी बांध कर उसने बाजू को लटकाया हुआ था।

तभी वह चौंक उठी। एक व्यक्ति के हाथ में उसने रिवाल्वर देखा था। जिसे वह मेज के नीचे इधर-उधर घुमा रहा था। रिवाल्वर में साइलेन्सर फिट था।

पेनी ने उसे पहचान लिया। वह वही व्यक्ति था, जो कि भाग निकला था, शायद उसी ने बाण्ड की कोठी पर फायरिंग की थी।

अगर वह इस समय फायर कर देता तो गोली बाण्ड की छाती में समां जाती। पेनी कांप उठी।

वह तेजी से उसकी तरफ बढ़ी और ठोकर मारकर मेज उलट दी। वह अभी सम्भलता, इससे पहले ही पेनी ने सैण्डिल की ठोकर उसकी कमर में जमा दी।

वह कुर्सी सहित फर्श पर ढेर हो गया। रिवाल्वर उसके हाथ से छिटक गया।

खतरे का अनुभव करते ही वह व्यक्ति फुर्ती से उठा और पेनी को धक्का देकर दरवाजे की तरफ लपका।

पेनी फर्श पर लुढ़क गई।

'जेम्स !' वह जोर से चिल्लाई—'उसे पकड़ो, वह तुम्हें गोली मारना चाहता था।

बाण्ड ने उस व्यक्ति को पहचान लिया था। वह तेजी के साथ उसकी तरफ लपका। काफी हाऊस में भगदड़ सी मच गई थी।

बाण्ड ने रिवाल्वर निकाल लिया था। उसे भागते देखकर लोग भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे थे।

'रुक जाओ, अन्यथा गोली मार दूंगा।'

वह और भी तेजी से भागने लगा।

'धाँय ··· धाँय !'

दो गोलियां चली और वह लड़खड़ा कर वहीं ढेर हो गया। उस व्यक्ति की दोनों टांगों में एक-एक गोली समां गई थी।

निकट पहुंचकर बाण्ड ने उसके सिर पर एक ठोकर मारी। बाण्ड को याद आया उसने उसका जबाड़ा तोड़ने का निश्चय किया था।

बाण्ड ने उसे बालों से पकड़कर उठाया और पूरी ताकत से

उसके जबड़े पर एक घूंसा रसीद कर दिया।

वह उलट कर दूर जा गिरा। दो-तीन दांत टूटकर गिर पड़े थे। फिर बाण्ड ने लगातार दो भरपूर ठोकरें उसके चेहरे पर रसीद कर दीं। कुछ और दांत गिरे।

तभी एयरपोर्ट पुलिस भागती हुई वहाँ पहुंच गई। पेनी रूमाल में हत्यारे का रिवाल्वर पकड़कर वहाँ पहुंच गई।

डी० आई० जी भी वहां मौजूद थे। बाण्ड ने उसे अपना परिचय पत्र दिखाया और बोला 'भारत जाने के लिये विमान तैयार खड़ा है, मुझे जाना होगा। मनी-पेनी मेरी तरफ से ब्यान दे देगी। इसके अलावा थोड़ी ही देर मेरे चीफ भी यहां पहुंच जायेंगे।'

'पेनी !' बाण्ड बोला—'इसी समय मिस्टर एम० मो कॉल करो।'

पेनी डी० आई० जी० के साथ अन्दर चली गई। थोड़ी देर बाद वह वापस लौट आये।

तभी प्रसारित किया गया—'भारत जाने वाला विमान उड़ने के लिये हवाई पट्टी पर तैयार खड़ा है। मिस्टर जेम्स बाण्ड जहां कहीं भी हों, वह अपनी सीट ग्रहण कर लें।'

'मिस्टर बाण्ड।' डी० आई० जी० बोले—'मिस्टर एम० से मैंने बात कर ली है, आप भारत जा सकते हैं।'

'धन्यवाद !'

पेनी ने बाण्ड को विदाई चुम्बन दिया। फिर बाण्ड तेजी से सीढ़ियां उतरकर हवाई पट्टी पर खड़े विमान की तरफ बढ़ने लगा।

पेनी तब तक हाथ हिलाती रही, जब तक बाण्ड सीढ़ियाँ चढ़कर विमान में प्रविष्ट न हो गया। थोड़ी देर बाद विमान हवाई पट्टी पर दौड़ा और ऊपर को उठने लगा।

बाण्ड खिड़की से बाहर देखता हुआ सोच रहा था—भगत भारत पहुंच गया होगा। विनय व भगत की सहायता से वह

कामन तक पहुंचने में अवश्य सफल हो जायेगा। उसने दोनों को टेलिग्राम दे दिया था।

छः•••

भगत, लिलि को उठाये हुये सबसे पहले निकट के गांव में पहुंचा। रात काफी हो चुकी थी, लेकिन गांव वालों को जब विमान दुर्घटना के बारे में मालूम हुआ तो उन्होंने उसकी सहायता की।

रात भर लाश को उसने झोंपड़ी में रखा, वह सोया नहीं। सवेरे उसने पुलिस थाने रिपोर्ट दर्ज कराई। जांच के बाद शाम को उसे लाश मिल गई।

गाँव वालों की सहायता से भगत ने ईसाई विधि से लिलि की लाश को दफना दिया।

'लिलि !' वह बुदबुदाया—'मैं तुम्हारी अन्तिम इच्छा अवश्य ही पूरी करूंगा। तुम्हारी बहन को तलाश करके ही दम लूंगा।'

कोई दो घन्टे बाद वह विमान द्वारा राजधानी के लिये रवाना हो गया।

सवेरे वह अपने अड्डे पर पहुंच गया।

'उस्ताद !' गंजू बोला 'इस बार आप काफी दिन बाद स्वदेश लौटे हैं।'

'हां। धन्धा कैसा चल रहा है ?'

'स्ट्राइक का जमाना है, तोड़-फोड़ हो रही है, दंगे भड़क रहे हैं, महंगाई इतनी है कि लोगों की जेबें खाली पड़ी रहती हैं। हां, प्रेम की मांग बढ़ रही है। अधिकतर जिनकी जेबों से पर्स उड़ाया है, प्रेम पत्र ही मिले हैं।'

भगत हंस पड़ा, फिर बोला—'एक बोतल लाओ।'

गंजू बोतल ले आया तो भगत बोला 'अब जाओ। मैं

बहुत थका हुआ हूं, मुझे डिस्टर्ब न किया जाये ।'

गंजू बाहर निकल गया । शाम को भगत फ्रेश होकर बाहर निकला और विनय की कोठी की तरफ चल पड़ा । सुषमा से मुलाकात हुई ।

'गुड ईवनिंग मिस भाभी ।'

'गुड ईवनिंग । बड़े दिनों बाद दिखाई दिये हो ?'

'अब तो यहीं हूं, दिखाई देता रहूंगा ।'

'विदेशों के क्या समाचार हैं ?'

'सारी दुनिया में तेज युद्ध चल रहा है । सरकारें उलट रही हैं, किसी देश में भी शान्ति नहीं है ।'

'न जाने दुनिया का क्या होने वाला है ?' सुषमा ने गहरी सांस लेते हुये कहा ।

'दुनिया का चाहे कुछ भी हो, लेकिन हम सही सलामत ही रहेंगे । विनय कहाँ है ?'

'अपने कमरे में ।'

'उससे भी मिल लूं ।' भगत ने कहा और विनय के कमरे की तरफ गया ।

विनय पलंग पर पलथी मारे बैठा था ।

'किसके लिये मातम मना रहे हो ?' भगत ने अन्दर प्रविष्ट होते हुये पूछा ।

'इस दुनिया के उन दुखी लोगों के लिये, जो अपने लिये दुखी हैं ।'

'मसलन ?'

'अपराधी वर्ग, साले अपराध तो करते हैं, लेकिन अपने लिये हमेशा दुखी रहते हैं ।'

'यह फिलासफी की बातें छोड़ों । मैं तुम्हारे पास एक खास काम से आया हूं ।'

'चुटकी सुनने से ज्यादा भी क्या खास काम हो सकता है ?'

'चुटकी बाद में सुनूंगा, पहले मुझे एक ऐसी अपराधी के

बारे में बताओ, जिसका नाम मिस ऐलिजा है ।'

'वह तो अन्तर्राष्ट्रीय अपराधी है ।'

'हाँ, मुझे उसी की तलाश है ।'

'सुना है, वह बहुत सुन्दर है । क्या इश्क करने का इरादा है ?'

'हाँ । लन्दन से यहाँ, उससे इश्क करने ही आया हूं ।'

'तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है, वह इन दिनों भारत में ही है ।'

'हां ।'

'तब तो बहुत बड़ा हंगामा मचने वाला है ।'

'क्या वह इतनी खतरनाक है ?'

'हाँ । सारी दुनिया की पुलिस को उसने नचाकर रख दिया है ।'

'इसलिये मैं उसे नचाना चाहता हूं ।'

'उसका कोई सूत्र मुझे मिलते ही मैं तुमको तुरन्त सूचित करूंगा ।'

'मैं खुद भी उसे तलाश करता रहूंगा । उसकी खोज बहुत आवश्यक है । अब मैं चलता हूं ।'

भगत दरवाजे की तरफ बढ़ा तो विनय जल्दी से बोला —

'अबे ठगराज, थोड़ी देर और ठहर जा । एक रोने वाली चुटकी सुनाता हूं, सब दुःख दूर हो जायेंगे ।'

'जब मुझ पर दुःख टूटेंगे तो तुमसे आकर चुटकी सुन जाउंगा ।' भगत ने उससे कहा और तेजी के साथ बाहर निकल गया ।

और विनय बुरा सा मुंह बना कर दीवारों को ताकता रह गया ।

आज विनय कुछ बोरियत सी अनुभव कर रहा था । ... वह मधुप से मिलने उसके आफिस पहुंच गया । मधुप ... के साथ जाने के लिये तैयार था ।

'प्यारे गोबर गणेश । किसकी पूजा करने जा रहे ...' विनय ने उसके निकट जा कर पूछा ।

'राय बहादुर के कत्ल के बाद उनकी कोठी में कल ... दो कत्ल और हो गये हैं ।'

यानि कि लाशों की पूजा करने जा रहे हो । चलो हम भी चलते हैं ।'

मधुप के चेहरे पर हर्ष की रेखायें स्पष्ट दिखाई देने लगी । वह जल्दी से बोला —'तो बाहर क्यों खड़े हुये हो ? जीप में बैठो ।'

विनय के जीप में बैठते ही काफिला चल पड़ा ।

रास्ते में विनय ने पूछा 'क्या राय बहादुर का कातिल पकड़ा गया ?'

'हां । मोहन जो उनका पार्टनर था ।'

'अबे, जिस मस्तिष्क में गोबर भरा था, उसमें अक्ल कैसे आ गई ?'

'कातिल को तो मैंने गिरफ्तार कर लिया है, उसी के रिवाल्वर से गोली भी चली थी । रिवाल्वर पर भी उसी की उंगलियों के निशान मौजूद हैं । लेकिन मेरा दिल कहता है कि वह कातिल नहीं ।'

'जब प्रमाण उसके विरुद्ध हैं तो तुम्हारा नाजुक दिल क्यों नहीं मानता ?'

'वह मेरा बचपन का दोस्त है । मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं । मैंने उसे सहायता का वचन दिया है । इसके अलावा ... चाहता है कि कोई प्राईवेट तौर पर उसका केस हल करें । ...

आठ-दस हजार तक देने के लिये तैयार है । अगर वह कातिल होता तो कभी ऐसा न कहता ।'

'बच्चे । कभी-२ कातिल स्वयं को बचाने के लिये ऐसे नाटक रचते हैं ।'

'कुछ भी हो विनय, मैं चाहता हूं, इस केस को तुम हैण्डिल करो ।

और तुम छोले बेचोगे ।'

नहीं ! मैं भी कोशिश जारी रखूंगा ।

'तो निकालो दस हजार ।

'वापसी पर मुझसे ले लेना । चैक काट दूंगा ।

'कंगाल बैंक का ?'

'नहीं पंजाब नेशनल बैंक का है । चालिस हजार रुपया जमा है ।'

'सब रिश्वत का माल होगा ।

मधुप ने विनय को घूर कर देखा तो वह एकदम से चुप हो गया । जीप कोठी के कम्पाउण्ड में जाकर रुकी ।

पुलिस ने वहां पहुंचते ही दोनों लाशों को कब्जे में कर लिया । गैलरी में अलका व राजेश खड़े थे, नाईट गाऊन पहने हुये । अलका कुछ भयभीत नजर आ रही थी ।

'गुडमार्निंग मिस अलका ।'

'गुडमार्निंग इंस्पेक्टर ।'

'इनसे मिलो 'मिस्टर विनय ।' जासूसी का शौक रखते हैं ।

'और यह है स्वर्गीय राय बहादुर जी की बेटी'' अलका ।'

'नमस्ते ।' विनय ने झट से दोनों हाथ जोड़ दिये ।

'नमस्ते ।'

'मिस अलका ।' मधुप ने पूछा क्या आप दोनों मृतकों को पहचानती हैं ?'

'नहीं । मैंने अब तक के जीवन में इन्हें कभी नहीं देखा ।

... ।' विनय झट से बोला ।

'जी ··?' उसने बौखलाकर विनय की तरफ देखा।

'मरने के बाद आपने इन्हें देखा है।'

'ओह।' उसके साथ-२ बाकी सब भी हंस पड़े।

'विनय इस तरह मुंह चलाने लगा, जैसे उनके हंसने का स्वाद ले रहा हो।

लाशें बताती हैं, उनका कत्ल रात को हुआ है, आपका क्या विचार है ?'

'कह नहीं सकती सवेरे जब मार्निंग वाक के लिये निकली तो इन लोगों को देखा। उसी समय मैंने फोन द्वारा पुलिस को सूचित कर दिया था।

'आपके साथ और कौन था ?'

'मैं अकेली थी। मिस्टर राजेश सो रहे थे।'

'इनकी तारीफ।'

'मेरे दोस्त हैं।'

'जल्द ही पति बनने वाले हैं।' विनय धीरे से बोला।

'जी हम दोनों का विचार शादी करने का है।' राजेश ने कहा।

'रात को और कौन कोठी पर मौजूद था ?'

'कालिया।'

'उसे बुलाइये।'

'कालिया को बुलाया गया, विनय ने उसे गौर से देखा तो चौंक उठा। उसकी सूरत भंयकर थी, सिर गंजा था। सूरत को छोड़कर उसका सारा ढांचा भंयकर सूरत वाले से मिलता था।'

कहीं वही तो भंयकर सूरत वाले का रोल अदा नहीं कर रहा है। विनय ने सोचा।

'मधुप, मैं इससे कुछ प्रश्न पूछता हूं। तब तक तुम खामोश रहोगे।'

'पूछ लो।'

'कालिया, रात को जब दो कत्ल हुये तो तुम कहां थे ?'

'कत्ल कब हुये साहब मुझे नहीं मालूम। वैसे मैं रात को एक डेढ़ के लगभग वापस लौटा था।'

'कहां से ?'

'फिल्म 'बाबी' देखकर। अगर आपको विश्वास न हो तो टिकट देख लीजिये।'

कालिया ने अपनी जेब से टिकट निकाल विनय को दिखा दिया।

टिकट नाईट शो की, उसी हाल की थी, जिसमें 'बाबी' फिल्म लगी थी।

'तुमने उस समय कम्पाउन्ड में किसी को देखा था।'

'नहीं उस समय बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी और पानी बरस रहा था।'

'दोनों लाशों में से किसी को पहचानते हो ?'

'सवेरे पहली बार इनकी सूरतें देखी थीं।, जब मालूम हुआ कम्पाउन्ड में दो लाशें पड़ी हैं।'

वह बहुत साफ सुथरे उत्तर दे रहा था। विनय ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। चेहरा बिल्कुल सपाट था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। लेकिन आँखों में बैचनी व थोड़ा सा भय अवश्य झांक रहा था।

'राय साहब के यहां कब से नौकर हो ?'

'मेरा बाप भी यहां बटलर था साहब। उनके स्वर्गवास के बाद मालिक ने उनकी जगह मुझे दे दी।'

'क्यों मिस अलका, यह ठीक कह रहा है ?'

'जी हां।'

'मधुप अब तुम जो चाहो पूछ सकते हो।'

'इतनी देर में फिंगरप्रिंट व एम्बूलैंस वाले आ गये थे।

मधुप ने विनय को अलग ले जाकर पूछा--'कोई सूत्र हाथ लगा ?'

'नहीं। समझ में नहीं आ रहा कि दो अनजान व्यक्ति राय बहादुर की कोठी में क्यों कत्ल किये गये ?'

'यही मैं भी सोच रहा हूं।'

'यह हो ही नही सकता कि कोठी में मौजूद कोई व्यक्ति उन्हें न जानता हो। कुछ घपला नजर आ रहा है।'

'क्या?'

इस कोठी में कोई भयंकर खूनी नाटक खेला जा रहा है। जिसका पर्दाफाश मुझे करना होगा।'

'मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।'

'समझने की कोशिश करोगे प्यारे, तो अवश्य समझ में आ जायेगा, मैं चलता हूं वॉय बॉय।'

मधुर देखता रह गया और विनय तेजी के साथ बाहर निकल गया। उसे विश्वास था कि वह विनय से कुछ सहायता प्राप्त कर सकेगा, लेकिन वह तो उसे और भी उलझा कर चला गया था।

उसने एक गहरी सांस ली और उस तरफ बढ़ गया, जिधर राजेश व अलका खड़े थे।

● ●

भगत दरवाजा खोलकर शबीना में प्रविष्ट हुआ। टिकट लेकर जब वह मेन हाल में पहुंचा तो उस समय आर्केस्ट्रा की धुन पर कैब्रे हो रहा था। नर्तकी सीटों के बीच में थिरक रही थी।

हाल की अधिकतर सीटें भरी हुई थीं। एक खाली सीट पर जाकर वह बैठ गया। बैरे को उसने काफी का आर्डर दे दिया था।

भगत ने नजर दौड़ाकर देखा उसके सामने वाली सीट पर एक सुन्दर युवती बैठी हुई थी। उससे अगली सीट पर एक भयंकर सूरत वाला व दो और व्यक्ति बैठे थे।

उससे अगली सीट पर भी तीन व्यक्ति विराजमान थे। उसने अनुभव किया दोनों सीटों पर बैठे व्यक्ति एक दूसरे को

घूर रहे हैं।

घूमती हुई उसकी नजर नर्तकी पर ठहर गई। जो अपनी छातियां व कूल्हे हिलाती हुई नाच रही थी। उसके अधिकतर कपड़े उतर चुके थे।

भगत के निकट आकर वह ठहर गई।

'कृपया चोली को उतार दीजिये।' वह मधुर आवाज में बोली।

भगत ने मुस्कराकर चोली खींच दी। जिसे उसने एक बूढ़े पर उछाल दिया।

'क्या आज की रात फ्री हो?' भगत ने पूछा।

'नहीं! आज की रात अंगेज हो चुकी हूं।'

'कल?'

'कल किसने देखा है मिस्टर।' उसने कहा और आगे बढ़ गई।

उसके उरोजों पर सिर्फ कपड़े के सिर्फ दो टुकड़े रह गये थे। गोलाकार में उरोजों के बाहरी हिस्से स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

भगत ने सामने की सीट पर बैठी युवती को देखा—वह भी कनखियों से उसे ही देख रही थी।

भगत मुस्करा दिया। युवती का जिस्म गठा हुआ व सुन्दर था। ऐसी युवती को बांहों में भर लेने के लिये वह बेताब हो उठा।

बैरा काफी रख गया था। काफी सिप करते हुये भगत ने देखा नर्तकी ने एक युवक से जांघियां भी उतरवा लिया है। उसके जिस्म पर कुछ टुकड़े ही रह गये थे, जिन्होंने उसके अंगों को ढका हुआ था।

सबकी नजर नर्तकी पर थी। उनकी आंखें उसके अंगों को टटोल रही थीं। एक पूरा चक्कर लगाने के बाद उसने सिर झुकाकर सबका अभिवादन किया और पिछले दरवाजे में प्रविष्ट होकर लोप हो गई।

तूफ़ान सा मच गया।

एक गोली शीशा तोड़ती हुई अलका के कान के पास से गुज़र गई।

दोनों नीचे उतारकर कार के पीछे आड़ में हो गये।

दायें व बायें तरफ से गोलियां चल रही थीं।

● ●

सुषमा के आग्रह पर विनय उसे बाजार में घुमाने लाया था। गोलियों की आवाज सुनकर उसने भी कार रोक दी।

'तुम बैठो, मैं देखता हूं।'

'मैं भी चलती हूं।'

दोनों बाहर निकल आये। तभी दो गोलियां उनके दायें-बायें से गुजर गई। वह सड़क पर ही लेट गये।

'मुझे आश्चर्य हो रहा है विनय !'

'किस बात का ?'

'इस प्रकार इतने बड़े बाजार में सरे आम गोलियां चल रही हैं।'

'आजकल बदमाशी बहुत बढ़ गई है। मेरा विचार है दो दल आपस में टकरा गये हैं।'

विनय ने एक व्यक्ति को थोड़ी दूर पर खड़ी कार की तरफ को भागते हुये देखा। एक ही नज़र में उसने उस व्यक्ति को पहचान लिया था। वह भयंकर सूरत वाला था।

विनय को समझते देर नहीं लगी कि उसका दल किसी दूसरे स्मगलिंग गैंग से टकरा गया है। खुली सड़क पर थोड़ी-२ दूर पर दो लाशें पड़ी दिखाई दे रही थीं।

'सुषमा तुम टैक्सी द्वारा घर चली जाना, मुझे उस भयंकर सूरत वाले का पीछा करना है।,

'अगर मैं भी साथ में चलूं तो क्या तुम पीछा नहीं कर

सकोगे ?'

'तुम्हारी जुल्फें इतनी घनी हैं कि न चाहते हुये भी उलझ जाता हूं।'

'उलझ कर चाहे तुम गिर पड़ो लेकिन मैं अवश्य साथ चलूंगी।'

'यानि तुम मेरा बेड़ा गर्क कराना ही चाहती हो। ओके… आओ मेरे साथ।'

गोलियां चलनी बन्द हो गई थी। सड़क के दोनों तरफ का ट्रैफिक जाम हो गया था। विनय ने बड़ी सफाई से अपनी कार उनके बीच से निकाली और उसे पूरी गति दे दी। कार हवा से बातें करने लगी।

अगले चौक पर पहुंचते ही उन्हें काली कार दिखाई दे गई। उस कार में भयंकर सूरत वाला व्यक्ति व उसका साथी बैठे हुये थे।

विनय सावधानी से उसका पीछा करने लगा। रात काफी हो गई थी। बाजार बन्द था, इसलिये उस सड़क पर ट्रैफिक भी न के बराबर ही था।

एका एक ही काली कार से उनके ऊपर गोलियां बरसने लगी।

'देखा—तुम्हारी सुगन्ध उन तक पहुंच गई। अन्यथा उन्हें कभी मालूम न होता कि हम उनका पीछा कर रहे हैं।' विनय ने कहा।

'बकवास मत करो मैं अभी उन्हें रोकती हूं।'

कहने के साथ ही उसने चोली में हाथ डाल कर पिस्टल निकली और अगली कार पर फायर करने लगी।

'धांय…धांय…धांय…।'

'जरा ध्यान से डार्लिंग, कहीं तुम्हारे जिस्म से उठती हुई भीनी-२ सुगन्ध किसी गोली को इस तरफ न खींच ले।'

सुषमा बोली—

'तुम सिर्फ ड्राईव करते रहो।'

'तुम तो लड़ाकू बीवियों की तरह आदेश दे रही हो।'

'तभी एक धमाका हुआ। और कार एक तरफ को झुकती चली गई। विनय अगर ब्रेक न लगा देता तो कार अवश्य उलट जाती।

'कर दिया न कबाड़ा, अगर तुम कार में न बैठी होती तो उनकी गोली कभी भी हमारी कार के टायर को नहीं फाड़ सकती।'

सुषमा ने पिस्टल को चोली में रखा और विनय को घूरती हुई बोली 'इसमें मेरा क्या दोष है ? मैंने तो पूरी कोशिश की थी।'

'दोष तो सारा किस्मत का ही है सनम, जिसने हमको पैदा किया। अपराधी तो निकल गये, अब हम यहां बैठ कर कीर्तन करेंगे।'

सुषमा ने साड़ी पल्लू का ठीक किया और उस तरफ को घूरने लगी, जिधर काली कार जाकर आंखों से ओझल हो गई थी।

वह विनय के सामने खुद को शर्मिंदा अनुभव कर रही थी। क्योंकि इस बार उसका निशाना नाकामयाब हो गया था।

● ●

गोलियां चलनी बन्द हो गई थी। अपराधी भाग निकले थे। किसी की हिम्मत नहीं हुई थी कि उन्हें रोक सके। ट्रैफिक जाम हो गई थी।

गोलियां बन्द होने के थोड़ी देर बाद ही पुलिस आ गई थी। सड़क पर पड़ी दोनों लाशों को उन्होंने कब्जे में कर लिया था। ट्रैफिक धीरे-धीरे कम होने लगा था।

अलका ड्राईविंग कर रही थी।

'क्या सोच रही हो ?' भगत ने पूछा।

'सोच रही हूं, अगर कोई गोली हमें लग जाती तो क्या होता ?'

'जिस्म में लाल छिद्र हो जाता और लोग हमारी लाश को कन्धों पर उठाये नारे लगा रहे होते—'रामनाम सत्य है, बाकी सब असत्य है।'

'तुम तो मजाक कर रहे हो। मुझे तो अब भी डर लग रहा है।'

'एक बात गिरह में बांध लो, गिरह न हो तो जुल्फों में बांध सकती हो—'जो डरता है, वही मरता है।'

'वह लोग कौन हो सकते हैं ?'

'आजकल बदमाशी बहुत बढ़ गई है, दो दल आपस में टकरा गये होंगे।'

अलका फिर कुछ नहीं बोली। थोड़ी देर बाद भगत ने कार रोक दी।

'मेरा ठिकाना आ गया, क्या अन्दर नहीं चलोगी ?'

'आज नहीं, फिर कभी।'

'तो अपने होठों का रस चुराने की इजाजत दो यहां एकान्त है।'

अलका खिसककर उसके पास आ गई और भगत को अपनी बाँहों में भर लिया। भगत ने उसके होठों पर अपने होंठ रख दिये।'

एक भरपूर चुम्बन लेने के बाद भगत ने पूछा—'अब कब मुलाकात होगी ?'

'तुम्हारा ठिकाना तो देख ही लिया है, जल्द ही मुलाकात होगी। मेरा पता तो तुम्हें मालूम ही होगा ?'

'राय बहादुर ओम प्रकाश की बेटी की कोठी को कौन नहीं जानता ?'

'तो फिर मिलेंगे, गुडनाईट।'

अलका चली गई।

भगत ने अपने होंठों पर हाथ फेरा, उसके होंठों की मिठास वह अभी तक अनुभव कर रहा था।

तभी उसे याद आया। आज रात बाण्ड आने वाला है। अभी विमान आने में लगभग बीस मिनट बाकी थे।

उसने अपनी नई कार निकाली और एयर पोर्ट की तरफ चल पड़ा। पुरानी खटारा कार पिछले केस में तबाह हो गई थी।

यह नई कार उसने खास तौर से अपने लिये बनवाई थी। जिसमें कई तरह की नई मेकेनिज्म फिट थीं। जिसकी सहायता से वह अपने आपको अपराधियों से बचा लेता था।

तभी वह चौंका, उसे दूर सड़क के बीच एक कार खड़ी दिखाई दी थी।

• •

सुषमा ने नजर घुमाकर देखा फिर जल्दी से बोली—'विनय शायद कोई कार इधर आ रही है। हम उससे सहायता माँगते है।'

विनय भी उठकर खड़ा हो गया। कार उसके निकट आकर रुक गई।

'भगत तुम ?'

'हाँ। लेकिन प्यारे जासूस हुआ क्या ?'

भंयकर सूरत वाला एक अपराधी है उसका पीछा कर रहे थे। उसकी गोली ने कार का बन्टा धार कर दिया। लेकिन तुम कहा जा रहे हो ?'

'जेम्स बाण्ड को रिसीव करने।'

'ओह, याद आया। उसका टेलीग्राम तो मुझे भी आया था।

'समय कम है, मेरी कार में चलो।'

'सुषो डार्लिंग तुम कार की रक्षा करो मैं चलता हूं।'

विनय ने कहा और कार में बैठ गया।

सुषमा ने कमर पर दोनों हाथों को रखकर विनय को घूरा। फिर दरवाजा खोलकर विनय की बगल में बैठती हुई बोली—'मैं चौकीदार नहीं हूं, समझे। तुम्हारी कार जाये भाड़ में, मेरी बला से।'

'— तो मैं चौकीदार बन जाता हूं।'

'नहीं।' सुषमा ने विनय की बाजू पकड़ कर कहा—'तुम भी साथ चलोगे। भगत तुम कार चलाओ।'

'प्यारे गिरहकट चलाओ कार। औरतों का जमाना है, आदेश तो मानना ही पड़ेगा। अन्यथा कोर्ट मार्शल कर दिया जायेगा।'

भगत ने मुस्कराकर कार को गति दे दी। जब वह एयर पोर्ट पर पहुंचे तो प्रसारित किया जा रहा था—लन्दन से आने वाला विमान अगले कुछ मिनटों में राजधानी के एयर पोर्ट पर उतरेगा।

कार को पार्किंग में खड़ा करके उन्होंने टिकटें लीं और गैलरी में पहुंच गये।

उसी समय विमान ने एयर पोर्ट का चक्कर लगाया और फिर हवाई पट्टी पर उतरने लगा। एक निश्चित जगह पर पहुंच कर वह रुक गया। सीढ़ियाँ लगाते ही दरवाजा खुल गया। परिचारिका दरवाजे पर आकर यात्रियों को मुस्कराकर विदाई देने लगी।

उन्होंने जेम्स बाण्ड को भी उतरते हुये देखा, जो कि बैग हिलाता हुआ कस्टम की तरफ बढ़ा चला आ रहा था। कस्टम से निपट कर जब वह बाहर आया तो भगत ने उसे गले से लगा लिया।

'बाण्ड प्यारे, कैसे हो ?'

'ठीक हूं। तुम ने वायदा किया था -भारत आऊंगा, देख लो

आ गया हूं।'

'इसका उत्तर तो मैं बाद में दूंगा, पहले यात्रियों से मिल लो।'

बाण्ड ने आगे बढ़कर विनय को गले लगा लिया।

'किसका बेड़ा गर्क करने यहां आये हो ?' विनय ने बाण्ड से पूछा।

'बाद में बताऊंगा, पहले सुषमा भाभी से तो मिल लूं।'

बाण्ड बांहें फैलाकर सुषमा की तरफ बढ़ा।

सुषमा ने झट से हाथ जोड़कर कहा—'नमस्ते'

'ओह…।' बाण्ड हंसकर बोला—'मैं इस जगह को भी लन्दन समझा था, नमस्ते।' बाण्ड ने भी बाकायदा हाथ जोड़े।

उसका भारतीय लहजा कुछ इस तरह का था कि भगत व विनय को हंसी आ गई। फिर वह सब बाहर आ गये।

भगत की कार मौजूद थी सब उसमें बैठ गये। इन्जन चालू करके भगत ने कार को गति दे दी।

रास्ते मे बाण्ड ने पूछा—'मुझे कहां ले जा रहे हो ?'

'जहां कहो, विनय की कोठी, मेरे ठिकाने पर या…।'

'तुम मुझे किसी अच्छे से होटल में ले चलो।'

'नहीं।' विनय बोला—'तुम गैस्ट हाऊस में ठहरोगे।'

'ठीक है।'

'लेकिन यह तो बताओ, तुम यहां आये किस सिलसिले में हो ?'

'अन्तर्राष्ट्रीय अपराधी कामन का नाम तो सुना होगा ?'

'वह तो हीरों का बहुत बड़ा स्मगलर है।'

'हां। वह इन दिनों भारत में ही है, और मुझे उसकी तलाश है।'

'लगता है हम दोनों को एक ही अपराधी की तलाश है। हीरों के स्मगलरों ने इन दिनों भारत में हंगामा मचाया हुआ है। पिछले दिनों ही एक करोड़ डालर के हीरे भारत में आये है।'

'यह कामन का ही काम होगा।'

'लेकिन मेरा विचार है, एक और दल भी यहां काम कर रहा है। जो कामन का दुश्मन है। कुछ घन्टे पहले दोनों दलों में टकराव हो चुका है। मैंने एक दल के व्यक्तियों का पीछा किया था, लेकिन वह हमारी कार का टायर फाड़कर निकल गये।

'इसका मतलब है, हम दोनों का केस एक ही है, तब तो हमें अपराधियों को तलाश करने में आसानी रहेगी।'

'प्यारे जासूसों, मुझे भी एक अपराधिन की तलाश है, नाम है मिस ऐलिजा।'

'वह भी हीरों की स्मगलर है।' बाण्ड बोला—'लन्दन में एक बार मैं उससे टकरा चुका हूं, बड़ी जालिम औरत है, किसी को कत्ल कर देना तो खेल समझती है।'

'—तब तो दूसरा दल ऐलिजा का ही होगा।' बाण्ड ने कहा।

'मेरा भी यही विचार है।' भगत ने कहा और कार बांयी तरफ मोड़ दी। उसे मालूम था—गेस्ट हाऊस कहां है।

कार में खामोशी छा गई थी, जैसे उनके पास बातों का मसाला खत्म हो गया हो।

एकाएक भगत चौंक उठा। उसे पीछे से एक कार आती हुई दिखाई दी थी। जिसकी खिड़की में उसने स्टेनगन की नाल को झांकते हुये देखा था।

'सब नीचे झुक जाओ।' भगत चीख उठा और उसने कार को ढलान की ओर मोड़ दिया।

तभी तड़…तड़…तड़ की आवाज से वह क्षेत्र गूंज उठा। शीशा तोड़ती हुई 'सांय' की आवाज के साथ कई गोलियां उनके सिरों पर से निकल गई।

ब्रेक मारकर भगत ने कार रोक दी थी। सब हतप्रद से उस कार को देख रहे थे, जिस पर से गोलियां बरसाई गयी थीं।

'भगत ... कार का पीछा करो।' बाण्ड चिल्लाया।

'भगत ने कार को गति दे दी। कार फिर सड़क पर दौड़ने लगी।

वह क्रोध में दांत किटकिटा रहा था।

'मैं इनको जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।'

'नहीं।' विनय बोला—'हम उन्हें जिन्दा पकड़ेंगे।'

'वह जिन्दा हमारे हाथ नहीं आयेंगे। कुछ दूरी पर ही चौक है, वह किसी तरफ भी मुड़कर गुम हो सकते हैं।'

कहने के साथ ही भगत ने डैसबोर्ड पर लगा एक बटन दबा दिया। कार के अगले हिस्से से गोलियां निकलकर बरसने लगी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि बदमाशों की कार बहुत दूर थी।

'मुझे मिनी राकेट प्रयोग करना पड़ेगा।' भगत बुदबुदाया और फिर उसने दूसरा बटन दबा दिया।

अगले हिस्से से एक मिनी राकेट निकला और सीधा उस कार के पिछले हिस्से से टकराया।

एक तेज धमाका हुआ और कार का पिछला हिस्सा उड़ गया। जब उनकी कार कुछ ही दूरी पर थी तो दूसरा धमाका हुआ। पैट्रोल की टंकी फट गई।

कुछ गज की दूरी पर भगत ने कार रोक दी। बदमाशों की कार टुकड़े-टुकड़े होकर जल रही थी। लाशें आस-पास ही बिखरी हुई थीं, एक व्यक्ति के कपड़ों में आग लग गई थी। उस के मांस के जलने की गन्ध आने लगी थी।

'भगत !' इस बार बाण्ड बोला—'अगर हम इन्हें जिन्दा गिरफ्तार कर लेते तो शायद कामन के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त हो जाती।'

'मुझे विश्वास था—हम इन्हें जिन्दा गिरफ्तार नहीं कर सकेंगे। मैंने यह भी सोचा था—शायद इनमें से कोई जिन्दा बच जाये, लेकिन लगता है,इनकी मौत आ चुकी थी।'

कोई कुछ नहीं बोला। तभी एक कार उनके ... आकर

रुकी। उसमें से एक जोड़ा उतरा।

'क्या हुआ भाई साहब ?' मर्द ने पूछा।

'आकाश से एक जलता हुआ तारा गिरा था। बेचारे मारे गये। भगत ने एक गहरी सांस लेकर कहा।

तारा आप लोगों ने देखा था ?' औरत ने आश्चर्य चकित स्वर में पूछा।

'मैंने नहीं, इन्होंने देखा था।' भगत ने सुषमा की तरफ इशारा कर दिया।

'क्यों बहनजी ?'

'ठीक बात है, वह तारा ही था।' सुषमा ने भगत की हां में हां मिलाई।

'तारा कैसा था ?'

'मेरी उस समय आंखें बन्द थीं, इनसे पूछिये।' सुषमा ने अपनी जान को छुड़ाने के लिये विनय की तरफ इशारा कर दिया।

'क्यों भाई साहब ?'

'बहनजी ! वह तारा क्या था, पूरा दैत्य था। काला चेहरा, दो दांत बाहर निकले हुये, सर पर सींग, माथे पर एक आंख, बाकी सारा जिस्म गायब।'

'अच्छा, तारा ऐसा होता है !'

वह दोनों भयभीत से लाशों को देखने लगे।

तीनों ने उस जोड़े को मूर्ख बनाया है। बाण्ड जानता था। इसलिये वह मुंह फेरकर मुस्करा उठा।

● ●

वह नकाब पोश बार-बार कमरे के चक्कर लगा रहा था। स्पष्ट दिखाई दे रहा था वह बहुत बेचैन है।

तभी एक व्यक्ति अन्दर प्रविष्ट हुआ।

'क्या रिपोर्ट लाये हो ?' नकाबपोश ने उससे उत्सुक स्वर में पूछा ।

'जेम्स बाण्ड बच गया । उसके साथ विनय, भगत व सुषमा भी थे । अगर हमारा निशाना सही बैठता तो वह भी मारे जाते ।'

'लेकिन वह दोनों वापस क्यों नहीं आये ?'

'उन्होंने न जाने किस विस्फोटक पदार्थ से हमारी कार को उड़ा दिया, वह दोनों मारे गये । मैं दूर से ही कार को वापस मोड़ कर आ गया ।

'नकाबपोश ने नकाब के अन्दर ही दाँत किटकिटाये और गुर्राया—'तुम जा सकते हो ।'

उसके जाने के बाद नकाबपोश ने रिसीवर उठाकर नम्बर घुमाये ।

'हैल्लो । कौन बोल रहा है ?'

'ऐलिजा । तुम कौन हो ?'

'कामन ।'

'कामन डीयर, तुम कैसे हो ?'

'ऐलिजा, तुम्हारी गद्दारी ने बहुत परेशान कर रखा है । क्या समझौता नहीं हो सकता ?'

'कैसी गद्दारी, कैसा समझौता ?'

''तुम मुझे मूर्ख बना रही हो, ऐलिजा । यह बहुत बुरी बात है ।'

'जो पहले से मूर्ख हो, उसे मूर्ख नहीं बताया जा सकता ।'

'ऐलिजा ।' कामन चीख उठा—'तुम हद से आगे बढ़ती जा रही हो ।'

'चीखो मत । चीखना मुझे भी आता है ।

'तुम अब तक मेरे चार आदमियों को कत्ल कर चुकी हो । एक एयर पोर्ट पर उस समय, जब हीरे आ रहे थे । दो राय बहादुर की कोठी पर, व एक राजधानी के सबसे बड़े बाजार में थोड़ी देर पहले ।'

'मेरा भी एक आदमी मारा गया है ।'

'अगर हम आपस में ही लड़ेंगे तो एक-एक करके अपने सभी साथियों को खो बैठेंगे ।'

'तुम मेरे रास्ते से हट जाओ तो ऐसा नहीं होगा ।'

'एक करोड़ डालर के हीरों में मुझे हिस्सा दे दो, मैं भारत से चला जाऊंगा ।'

'भूल जाओ कभी एक करोड़ डालर के हीरे भारत आये थे । उनमें से तुम्हें एक हीरा भी नहीं मिल सकता ।'

'ऐलिजा, मैं अगर बदले पर उतर आया तो तुम्हें तबाह कर दूंगा ।'

'मुझे तबाह करने वाला कोई पैदा नहीं हुआ, परन्तु मुझे लगता है डीयर कामन—तुम्हारी तबाही करीब आ गई है । अगर अपना बेड़ा गर्क नहीं कराना चाहते तो खामोश बैठे रहो या भारत से चले जाओ ।'

'तुम किसी भी रूप में मुझे हिस्सा देने के लिये तैयार नहीं हो ?'

'नहीं ।'

'तुम जहरीली नागिन हो ऐलिजा, तुम्हारा फन मुझे कुचलना होगा ।'

शीशे के घर में रहने वाले, दूसरों के घर पर पत्थर नहीं मारा करते माई डीयर कामन । मेरा इशारा समझ गये होंगे, गुडनाइट ।'

दूसरी तरफ से सम्बन्ध काट दिया गया । कामन ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।

'ऐलिजा मैं तुम्हें आसानी से एक करोड़ डालर के हीरे नहीं हड़पने दूंगा ।'

वह बुदबुदाया और बेसब्री से कमरे में इधर उधर टहलने लगा ।

कुछ क्षणों बाद वह पुनः बुदबुदाया—'ऐलिजा के अलावा

मुझे जासूसों से भी निपटना है। खास तौर से जेम्स बाण्ड से, जो मेरे लिये लन्दन से भारत आया है।'

● ●

कमरे में बहुत हल्की रोशनी हो रही थी। फोन के पास एक नकाब पोश औरत खड़ी थी। जो रिसीवर मुंह से लगाये किसी के साथ बातें कर रही थी। उससे दो कदम हटकर भयंकर सूरत वाला खड़ा था।

वह ऐलिजा थी, अन्तर्राष्ट्रीय अपराधी। एकाएक उसने क्रोध के साथ रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।

'जानते हो किसका फोन था ?' वह भयंकर सूरत वाले की तरफ घूमकर गुर्राई।

'कामन का।'

'हां। हीरों में हिस्सा मांग रहा है।'

'लगता है उसकी मौत आ गई है।'

'हां कामन का प्रबन्ध करना ही होगा।'

'अगर आप आदेश दे दें तो फिर उसे आज ही ठिकाने लगा दूं।'

'इतनी जल्दी नहीं, हमारा टकराव कामन से है जल्दबाजी से काम बिगड़ सकता है। तुम जानते हो कामन बड़ा काईयां आदमी है। उसके साथ चतुराई से निपटना होगा।'

'जैसी आपकी आज्ञा।'

'अब तुम खोपड़ी लाओ। मैं उन हीरों को देखना चाहती हूं।'

भयंकर सूरत वाला बाहर निकल गया। कुछ मिनटों बाद जब वह अन्दर प्रविष्ट हुआ तो उसके हाथ में एक मानी खोपड़ी थी। उस व्यक्ति की जो हीरे लाया था, जिसका सिर भयंकर सूरत वाले ने काट लिया था।

भयंकर सूरत वाले ने खोपड़ी को लाकर मेज पर रख

दिया।

'इसे काटो।'

उसने जेब से चाकू निकाला और उस खोपड़ी को काटने लगा। बीच से कटते ही उसने उसे दो भागों में बांट दिया। छोटे-२ चमकते हीरे मेज पर बिखर गये।

ऐलिजा ने उन्हें मुट्ठी में भर कर उठा लिया और किलकारी मारती हुई बोली 'सुन्दर, अति सुन्दर, अब इन हीरों के मालिक हम हैं। क्यों डीयर…?'

'आप ठीक कहती हैं मैडम।'

'इस समय मुझे मैडम नहीं, 'डार्लिंग' कहो डीयर, डीयर। मैं बहुत खुश हूं।'

उसने पागलों की तरह हीरे उस पर उछाल दिये और उससे लिपट गई।

शायद वह इसका आदि था। उसने भी उसे बांहों में भींच लिया।

'डीयर मुझे इतना प्यार करो कि मेरी सारी प्यास बुझ जाये। मुझे इतनी जोर से भींचो कि मेरा अंग-अंग कराह उठे।

भयंकर सूरत वाले ने उसकी नकाब खींच दी और अपने भयंकर होंठ उसके सुन्दर होंठों पर रख दिये। साथ ही उसने हाथ बढ़ाकर ब्लाऊज व स्कर्ट भी खींच दीं।

एक भरपूर चुम्बन लेने के बाद उसने उसे बांहों में उठाया और पलंग पर लिटा दिया। ऐलिजा ने उसे अपने ऊपर खींच लिया।

उसने होंठों पर होंठ रख दिये। भरपूर चुम्बन लेने के बाद जब उसने होंठ हटाये तो ऐलिजा ने पूछा— 'हमारे दोनों मेहमान कैसे हैं ?'

'ठीक हैं, जब तक हम अपना काम पूर्ण नहीं कर लेते वह हमारी कैद में ही रहेंगे।'

'यह न हो वह भाग निकले।'

'नहीं। दो पहरेदार वहाँ हर समय रहते हैं।'

'शाबाश।' ऐलिजा ने उसे बांहों में कस लिया। उसके हाथ ऐलिजा के जिस्म पर रेंगने लगे। चोली व जाँघिया के हुक उग ने हटा दिये और फिर दोनों एक-दूसरे में समां जाने की कोशिश करने लगे।

होंठों से होंठ मिल गये। दो अपराधी प्यार की गहराईयो में डूबते ही चले गये ··· । उस हद तक जहां कोई सीमा ही नहीं रहती।

सात···

भगत तहमद बांधे मनसद पर बैठा था। बोतल खुली हुई थी और वह मजे से पैग पर पैग पिये जा रहा था।

तभी गंजू अन्दर प्रविष्ट हुआ।

'गंजू बेटे, क्या बात है ?'

'उस्ताद !' कहने के साथ ही उसके मुख से ढेर सारी लार टपक पड़ी। जिसे उसने फुर्ति के साथ साँस खींच कर अन्दर किया।

'मैं समझ गया, कोई युवती आई है।'

'हां उस्ताद। आपसे मिलना चाहती है। अपना नाम अलका बताती है।'

'उसे भेज दो।'

गंजू अपनी गंजी चांद पर हाथ फेरता हुआ बाहर निकल गया।

कुछ ही देर बाद मिस अलका अन्दर प्रविष्ट हुई।

आज उसने कत्थई रंग की साड़ी व सफेद ब्लाऊज पहना हुआ था। बालों को जूड़े के रूप में बांधा हुआ था।

भगत उसे देखता ही रह गया। फिर होंठों पर जीभ फेरते

हुये बोला—'वहीं रुक जाओ। पहले मैं जरा तुम्हारा स्वागत कर लूं।'

'क्या मतलब ?'

'आज तो तुम्हारी सुन्दरता कहर ढा रही है। मैं तो कत्ल हो ही चुका हूं, साथ—२ मेरा चेला भी पहले ही कत्ल हो चुका है।'

कहने के साथ ही भगत ने उसे बाँहों में भरा और उसके रसीले होंठों का एक भरपूर चुम्बन ले लिया।

जब वह अलग हुआ तो अलका हंसकर बोली 'तो यह तुम्हारा स्वागत करने का ढंग है।'

'हाँ।'

'मैंने कोई एतराज नहीं किया, अगर कोई युवती एतराज करे तो··· वह सैंडिल भी उतार सकती है।'

'आज तक ऐसी नौबत नहीं आई डार्लिंग, अगर आई भी तो वह जूती उतारकर फिर पहन लेगी।'

अलका खिलखिला कर हंस पड़ी। वह उसके उठते-बैठते उरोजों को देखने लगा।

'क्या देख रहे हो ?'

'तुम्हारी सुन्दरता को, खुदा ने तुम्हें इतना सुन्दर कैसे बना दिया ?'

'जब ऊपर जाओ तो पूछ कर देख लेना।'

'अवश्य, अब बैठ जाओ।'

वह साड़ी का पल्लू समेट कर भगत के पास ही मनसद पर गई।

'मुझे विश्वास नहीं था, तुम इस समय घर पर मिलोगे ?' अलका बोली।

'हां। आज बाहर जाने का मूड था।'

'लेकिन मैं तुम्हें लेने आई हूं।'

'इस सुन्दरता की देवी को इन्कार नहीं करेंगे। विहस्की तो पीती हो ?'

'तुम्हारा कहना नहीं टाल सकती। अपने हाथों से एक पैग बना दो।'

भगत ने एक डबल पैग बनाकर उसकी तरफ बढ़ा दिया। फिर बोला—'मैं अभी कपड़े बदल कर आता हूं।'

भगत जब वापिस आया तो अलका के हाथ में भरा हुआ था। व्हिस्की की बोतल कुछ ज्यादा ही खाली नजर आ रही थी।

'तुम तो सिर्फ एक पैग पीना चाहती थी।'

सोचा तुम्हारे आने तक इसी से मन बहला लूं।'

भगत ने देखा—उसकी आँखों के डोरे और भी ज्यादा लाल हो गये हैं। गोरे गाल तमतमा उठे हैं।

उसने एक ही साँस में पैग खाली किया और भगत के निकट आते हुये बोली 'बड़े स्मार्ट नजर आ रहे हो।'

'तुमसे ज्यादा नहीं।'

वह हंस पड़ी। उसने भगत को बाँहों में भरा और होंठों पर होंठ रख दिये।

भरपूर चुम्बन लेने के बाद बोली—'अब चलो।'

दोनों बाहर आकर कार में बैठ गये। इन्जन चालू करके कार को गति देते हुये अलका ने उससे पूछा 'भगत कहाँ चलोगे?'

'जहां चाहो ले चलो।'

'चलो पहले डिनर लेते हैं, फिर तुम्हें अपनी कोठी पर ले चलूंगी।'

'ओके।'

अशोका होटल पर उन्होंने डिनर लिया, फिर अलका उसे अपनी कोठी पर ले गई।

जैसे ही वह कार से उतरे एक भयंकर सूरत वाला व्यक्ति उनके सामने आ खड़ा हुआ।

'कौन हो भाई, क्या चाहिये?' भगत ने पूछा।

हमारा नौकर है—'कालिया।'

'बहुत अनोखी चीज है।'

वह खीं-खीं करके हंस पड़ा। उसकी हंसी बड़ी डरावनी थी।

'कालिया, यह हमारे मेहमान हैं।' अलका ने डांटा।

'माफी बेबी, [illegible] खाना [illegible] हूं।'

'बड़े कमरे में व्हिस्की, सोडा रख दो।'

उसने सिर झुकाया और चला गया।

अलका भगत को अपने कमरे में ले गई। कालिया सोडा, व्हिस्की व दो गिलास रखकर चला गया।

'तुम्हारा नौकर तो बड़ा भयंकर है। क्या तुमको डर नहीं लगता?'

'उसकी सिर्फ सूरत भयंकर है दिल नहीं।'

'ओह!'

अलका साड़ी उतारने लगी। भगत को विश्वास नहीं था, वह इतनी जल्दी खुल जायेगी। साड़ी के बाद उसने ब्लाउज व पेटीकोट भी उतार दिया। उसके जिस्म पर सिर्फ कांचिया व चोली रह गई।

'अभी तो जिस्म पर कुछ कपड़े शेष हैं।' भगत मुस्कराकर बोला।

'अभी इनके उतारने का समय नहीं आया है।'

'वह समय कब आयेगा?'

'थोड़ी देर बाद मालूम हो जायेगा, लेकिन तुम...।'

'मैं समझ गया।' उसने कहा और जूते उतारने लगा। फिर उसके कपड़े भी एक-२ करके उतरने लगे। जिस्म पर केवल जांघिया रह गया।

'अभी तो कुछ कपड़े जिस्म पर हैं।'

'इनके उतारने का समय अभी नहीं हुआ।'

अलका हंस पड़ी और पैग बनाती हुई बोली—'बात को पलटना खूब जानते हो।'

उसे हर सूरत में लिलिका का संदेश [illegible] था।

तूफान धीरे-२ शान्त होता जा रहा था, उधर [illegible] गई थी। दोनों के जिस्म ढीले पड़ते जा रहे थे।

⊙ ⊙

बाण्ड ने पैग खाली करके मेज पर रख दिया और एक सिगरेट होंठों से लगाकर सुलगा ली।

तभी वह चौंक उठा। उसे खिड़की पर एक चेहरा दिखाई दिया था, जो दूसरे ही क्षण लोप हो गया था।

बाण्ड ने रिवाल्वर निकाल कर हाथ में पकड़ लिया और खिड़की की तरफ बढ़ने लगे।

एक ही झटके में खिड़की खोलकर वह [illegible], लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया।

'मिस्टर बाण्ड, हम अन्दर हैं। [illegible] इस तरफ पलटोगे तो गोली भेजे में उतर जायेगी। पहले रिवाल्वर खिड़की से बाहर फेंक दो।'

बाण्ड खिड़की के शीशे में से स्पष्ट देख रहा था—दो व्यक्ति दरवाजे के पास खड़े हैं, एक व्यक्ति के हाथ में रिवाल्वर पकड़ा हुआ है, जिसका रुख उसी की तरफ है।

अगर उसने उसके आदेश का पालन न किया तो वह निश्चय गोली उसके भेजे में उतार देगा। सोच कर उसने रिवाल्वर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

फिर पलटकर पूछा - 'कौन हो तुम लोग, और क्या चाहते हो?'

'थोड़ी देर बाद मालूम हो जायेगा। पार्टनर, जरा प्यार से इसके हाथ-पैर बांध दो।'

दूसरा व्यक्ति जेब से डोरी निकालकर बाण्ड की तरफ बढ़ने लगा। [illegible] 'हाथ आगे करो [illegible]।'

बाण्ड ने दोनों हाथ आगे बढ़ा दिया, जैसे ही वह डोरी बांधने लगा, बाण्ड ने फुर्ती के साथ उसे कमर से पकड़कर उठाया और उसके साथी पर फेंक दिया।

दोनों फर्श पर लुढ़क गये। रिवाल्वर उसके हाथ से छिटक गया। बाण्ड फुर्ती से बढ़ा और रिवाल्वर वाले के सिर पर एक भरपूर ठोकर मारी, वह कराह उठा।

दूसरे व्यक्ति ने उठकर बाण्ड पर हमला कर दिया। एक घूंसा बाण्ड के चेहरे व दूसरा उसके पेट पर पड़ा। बाण्ड झुक गया।

रिवाल्वर वाले की तरफ से बाण्ड का ध्यान हट गया था। वह उठ खड़ा हुआ था। शराब की बोतल उठाकर उसने बाण्ड के सिर पर दे मारी।

वह कराहा उठा, उसकी आंखों के सामने लाल-पीले तारे नाच उठे। वह लहराकर गिर पड़ा और उठ न सका। वह बेहोश हो चुका था।

'अब इसे उठाओ और ले चलो। अगर इसके साथी आ गये तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी।'

उसने बाण्ड को कन्धे पर लादा और फिर बाहर की तरफ चल पड़े। गेस्ट हाउस के बाहर पेड़ की आड़ में एक कार खड़ी थी। बाण्ड को पिछली सीट पर डाल दिया गया।

थोड़ी देर बाद कार सड़क पर दौड़ रही थी।

⊙ ⊙

'क्या अभी दिल नहीं भरा?' अलका ने मुस्कराकर उससे पूछा।

'तुम इतनी सुन्दर हो कि तुम्हें सारी उम्र प्यार करता रहूं; तब भी दिल न भरे।' भगत ने कहा। कुछ देर बाद दोनों सो गये।

सुबह [illegible] के बाद भगत [illegible]

हुआ। बोला—'मुझे मिस ऐलिजा की तलाश है।'

'लेकिन ऐलिजा नाम की तो दुनिया में बहुत सी लड़कियाँ होंगी।'

'वह अन्तर्राष्ट्रीय अपराधी है, उसे डायमंड क्वीन भी कहते हैं। क्योंकि वह हीरों की बहुत बड़ी स्मगलर है। उसकी एक बहन थी—मिस लिलि, एयर होस्टेज।'

'थी से तुम्हारा क्या मतलब ?'

'वह अब इस दुनिया में नहीं है, पिछले दिनों तुमने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा—लन्दन से भारत आने वाला विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया था। मैं भी उसी विमान में था। हम दोनों एक पैराशूट बांधकर कूदे थे। वह एक पेड़ से उलझ गई। नुकीली डालियाँ उसके जिस्म में घुस गईं। वह बच न सकी। मैंने उसे अपने हाथों से दफनाया था। उसका एक सन्देश है, जो मुझे मिस ऐलिजा तक पहुंचाना है। उसी से मुझे मालूम हुआ था कि वह इन दिनों भारत में हैं।

अलका गम्भीर हो गई थी।

कुछ क्षण वह भगत के चेहरे को देखती रही, फिर पूछा—

'संदेश क्या है?'

'सिर्फ उसी को बता सकता हूं।'

भगत ने देखा—अलका की आंखें भीग आई हैं। वह भर्राये स्वर में बोली—'लिलि व ऐलिजा को मैं अच्छी तरह जानती हूं। हम तीनों लन्दन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में एक साथ पढ़ती थीं। पढ़ाई खत्म करने के बाद मैं भारत आ गई। लिलि मेरी बहुत प्यारी सहेली थी। उसका करैक्टर बिल्कुल स्वच्छ था, जबकि ऐलिजा चाहती थी कि उसके चारों तरफ हीरे ही हीरे हों। वह डायमंड क्वीन बनना चाहती थी। उसके साथ मैं भी ऐय्याशी की जिन्दगी बिताने लगी थी, लेकिन मैं रायबहादुर की बेटी थी। धन की कमी न थी। इसलिये अपराधी दुनिया की तरफ नहीं झुक सकी। ऐलिजा हीरों की स्मगलर और लिलि

एयर होस्टेस बन गई।'

'यानि तुम ऐलिजा को अच्छी तरह जानती हो ?'

'हाँ, मुझे यह भी मालूम है कि इन दिनों वह भारत में ही है।'

'मुझे उससे मिलवा सकती हो ?'

'ठिकाने के बारे में मुझे मालूम नहीं, लेकिन कल कोशिश करके बताऊंगी।'

'अगर तुमने मेरा यह काम कर दिया तो मैं तुम्हारा एहसान जिन्दगी भर नहीं भूलूंगा।'

'एहसान कैसा ? यह तो मेरा फ़र्ज है। आखिर लिलि मेरी बहुत प्यारी सहेली थी।'

'तो अब कल मुलाकात होगी।'

'हां, मैं खुद तुमसे मिल लूंगी या तुम स्वयं मुझसे मिल लेना।'

'ठीक है।' कहकर वह चल दिया।

● ●

जैसे ही कार कम्पाऊन्ड में पहुंची बाण्ड को होश आ गया था। कार रुकते ही दोनों नीचे उतर आये। दरवाजा खोलकर एक व्यक्ति ने बाण्ड को कन्धे पर लाद लिया।

बाण्ड चाहता तो इस समय दोनों को ठिकाने लगा सकता था। लेकिन वह जानना चाहता था—उसका अपहरण करने वाले कौन लोग हैं।

उसे एक कमरे में ले जाया गया। सामने ही एक नकाबपोश खड़ा था।

'कामन ! चाहो तो नकाब उतार दो, क्योंकि मैंने तुम्हें पहचान लिया है।' बाण्ड गुर्राया।

तभी दो आदमियों की चीखें वहां गूंज उठीं और वे नहीं रहे।

एक व्यक्ति अन्दर प्रविष्ट होते हुये बोला—'बॉस ! एलिजा के दो आदमी आये थे। चाकू से उनका पेट फाड़कर खत्म कर दिया हमने।'

'शाबाश ! अब तुम लाशों को उठाओ और बाहर किसी चौक पर फैंक आओ।'

उस कुतिया को इसकी सूचना दे देनी चाहिये। वह बुद-बुदाया और रिसीवर उठाकर डायल घुमाया तथा यह शुभ सन्देश उसे सुना दिया।

उसने बाण्ड को दूसरे कमरे में भेज दिया। जिसमें एक ही दरवाजा था, खिड़की कोई नहीं थी, रोशनदान था, जो इतनी ऊंचाई पर था कि उसका हाथ नहीं पहुंच सकता था।

अतः भागने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। बाण्ड ने एक सिगरेट होठों से लगाकर सुलगाई और हल्के—२ कश लगाने लगा।

आह...

'हैल्लो असका !'

'हैल्लो !'

वह उठा और असका को बांहों में भरकर उसके होंठों को चूम लिया।

'मुझे विश्वास था तुम अवश्य आओगी।'

'वायदा किया था, इसलिये आना पड़ा।'

'एलिजा का कुछ पता लगा ?'

'हां। अगर उससे मिलना चाहते हो तो आज रात ग्यारह बजे पुराने खंडहर पहुंच जाना।'

इतना कह कर वह तेजी से बाहर हो गई और मगठ उसे अवाक् देख रह गया।

● ●

कार कुछ दूर खड़ी करके भंयकर सूरत वाले ने चारों तरफ का निरीक्षण करा। जब कोई नजर नहीं आया तो वह दीवार फांदकर अन्दर प्रविष्ट हो गया।

अन्दर की खिड़की बन्द थी। धीरे से धक्का देकर उसने खिड़की को खोल दिया। अन्दर कामन मौजूद था, जो बड़ी बेसब्री से इधर-उधर टहल रहा था, शायद उसे किसी का इन्तजार था।

इस समय कामन की पीठ उसकी तरफ थी। जैसे ही वह मुड़ा, भंयकर सूरत वाले ने भरपूर शक्ति लगाकर चाकू उस पर खींच मारा। जो मूठ तक उसकी छाती में धंस गया। उसकी दर्दनाक चीख सन्नाटे को चीरती हुई दूर तक चली गई।

और बदला ! बदला !! यह शब्द हथौड़े की भांति उसके मस्तिष्क में गूंजने लगा।

उसे ऐलिजा से बदला लेना ही होगा। वह बुदबुदाया—

तभी गोल्डी दौड़ता हुआ वहां आया।

'गोल्डी !' कामन बोला—'जेम्स बाण्ड को यहां ले आओ, जाओ जल्दी करो !' उसे अपनी मौत नजदीक आती दिखाई दे रही थी।

गोल्डी तेजी से बाहर की ओर लपका। उसके जाते ही दो व्यक्ति और आ गये थे।

'सुनो ! मेरा अन्तिम समय आ गया है, जो कुछ यहां पड़ा है, लेकर भाग जाओ। क्योंकि अब सारे रहस्य खुलने वाले हैं। मैं नहीं चाहता तुम लोग पुलिस के हाथ लगो।'

'लेकिन बॉस ! आपको इस हालत में छोड़कर कैसे जा सकते हैं ?'

'जाना होगा। क्योंकि यह मेरा आदेश है।' कामन ने कुछ कठोर स्वर में कहा।

सुषमा चली गई। तभी एक कार आकर कम्पाऊन्ड में रुकी, विनय चौंक उठा। उसमें से जेम्स बाण्ड बाहर निकल रहा था। बाण्ड तेजी से चलता हुआ उसके निकट पहुंच गया।

"बाण्ड प्यारे तुम इस समय यहां ?"

"हां, तुम से बहुत आवश्यक काम है।"

"लेकिन तुम थे कहां ?"

"कामन की कैद में ?"

'यानि इस समय भाग कर आ रहे हो ?"

'नहीं।',

'राम कहानी बाद में सुनेंगे, पहले बताओ भूख लगी है कि नहीं।'

"भूख तो लगी है।"

"तो आओ, सुषमा डीनर लगा रही है। खाना खाने के बाद बातें होंगी।' दोनों डीनर रूम में आ गये। सुषमा प्लेटें सजा चुकी थी।

'भाई जेम्स, कैसे हो ?' सुषमा ने पूछा।

"ठीक हूं।"

"बैठो खाना ठन्डा हो जायेगा।"

सब मेज के इर्द-गिर्द बैठ गये।

खाना खाने के बाद सुषमा ने पूछा—'तुम्हारी शेव बढ़ी हुई है, अवश्य कोई खास बात है।'

"एक दिन कामन की कैद में रहना पड़ा। इस समय वहीं से आ रहा हूं।'

'अब जल्दी से आगे की राम कहानी सुना दो। विनय ने कहा।'

एलिजा को तुम जानते हो, जो हीरों की बहुत बड़ी स्मगलर है। वह इन दिनों भारत में ही मौजूद है।'

'हां उसे कौन नहीं जानता ?'

उसके आदमी ने कामन को मौत के घाट उतार दिया है कुछ दिन पहले एक करोड़ डालर के हीरे हाथ आये थे, उसमें

कामन का भी हिस्सा था, लेकिन ऐलिजा ने उससे गद्दारी की, जिसके कारण दोनों में ठन गई। कामन को लन्दन से भारत आना पड़ा। मैं भी उसी का पीछा करता हुआ यहां आ पहुंचा हूं। दोनों दलों में कई बार टकराव हुआ, जिसके कारण दोनों तरफ के कई व्यक्ति मारे गये। दोनों ही एक दूसरे को तबाह कर देना चाहते थे। एक दूसरे पर खूनी हमले हो रहे थे। इसमें ऐलिजा को सफलता मिली। उसके एक आदमी ने आज कामन को छूरे से खत्म कर दिया।'

"उसके मरने के बाद तुम यहां भाग आये ?"

'नहीं जब उसे चाकू मारा गया, मैं उसकी कैद में था। उस ने मुझे बुलाया। जब मैं उसके कमरे में पहुंचा तो वह खून से लथपथ पड़ा हुआ था। वह ऐलिजा से बदला लेना चाहता था। अतः उसका रहस्य मुझे बताना चाहता था।'

"कुछ बताया ?"

'हां, उस समय उसके प्राण शायद कहीं अटके हुये थे। बड़ी कठिनाई से उसके मुख से कुछ शब्द निकले।

"पुराना खंडहर दो कैदी।' इसके बाद उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

पुलिस से मैं उलझना नहीं चाहता था, अतः फोन द्वारा मैंने पुलिस को सूचित किया। और यहां आ गया।

"बहुत अच्छा किया।' विनय की आंखें चमकने लगी। पुराना खण्डहर... दो कैदी, इसमें बहुत बड़ा रहस्य छिपा हुआ है। यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐलिया का सम्बन्ध पुराने खंडहर से है, लेकिन दो कैदी इसका रहस्य समझ में नहीं आ रहा था।

सुषमा बोली 'स्पष्ट है, ऐलिजा के यहां दो व्यक्ति कैद में हैं।'

"कौन हो सकते हैं ?"

"इसका तो पता लगाना होगा।"

[illegible]

ऐलिजा मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूं। जो ग
कह सकता हूं। उसने मुझे एक पत्र भी दिया है।'

भगत ने अन्दर की जेब में हाथ डाला और एक पत्र निकाल कर उसकी तरफ बढ़ा दिया।'

उसने पत्र की तहों को खोला और पढ़ने लगी।

मेरे प्यारी ऐलिजा,

'मुझे विश्वास है-तुम जहां कहीं भी होंगी, सही-सलामत व प्रसन्न होंगी। मैं प्रभु से दुआ करती हूं, तुम सदा सुखी रहो। लेकिन मेरी प्यारी बहन, मैं चाहती हूं-तुम सुधर जाओ। अपराध की दुनियां को छोड़ दो। इस दुनियां में कोई सुख नहीं है।' धन की चका-चौंध अवश्य है। जो क्षण भर के लिये ही सुख पहुंचाती है। क्योंकि इस काम को पूर्ण करने के लिए तुम्हें दुनियां के कानूनी रक्षकों से टक्कर लेनी पड़ती है। कहीं पुलिस के हाथ न पड़ जाऊं। पुलिस से टकराव में तुम्हें गोली भी लग सकती है। कोई दुश्मन तुम्हें लूट भी सकता है।'

मेरी बहन, थोड़े से सुख के लिये अपना जीवन बर्बाद मत करो। अभी तो समय है, सुधर जाओ, अन्यथा ढेर सारी दौलत होते हुये भी तुम्हारे मन को कभी शान्ति नहीं मिलेगी। मन की शान्ति के सिवा दुनिया में कोई बड़ा खजाना नहीं। जिसे मन की शान्ति मिल जाये, समझ लो उसे इसी धरती पर स्वर्ग मिल गया। मन की शान्ति तभी मिल सकती है, जब तुम अच्छे काम करोगी। दूसरों की भलाई के लिये खुद को समर्पण कर दो।

मैं अपने जीवन में तो तुम्हें सुधार नहीं सकी शायद मेरे मरने के बाद तुम्हें समझ आ जाये और तुम सुधर जाओ। मैं कामना करती हूं- प्रभु तुम्हें सदा बुद्धि

बस मुझमें अब ताकत नहीं है, खून बहुत निकल चुका है। मैं इस दुनिया को छोड़ कर जा रही हूं।'

—तुम्हारी बहन
लिलि,

पत्र पढ़ने के बाद उसने भगत की तरफ देखा। भगत ने अनुभव किया—उसकी आंखें भीग आई है। उसने जल्दी से मुख फेर लिया और आंसू पोंछे।

'मेरी बहन!' वह बुदबुदाई-'मुझे माफ कर देना, मैं तुम्हारी अन्तिम इच्छा को पूर्ण नहीं कर सकती। मैं प्रभु से कामना करूंगी, तुम्हारी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।'

• •

भगत ने अपना फर्ज पूर्ण कर दिया था। अतः उसके दिल को अब शान्ति मिल गई थी। वह तेजी से कार ड्राइव कर रहा था।

एकाएक वह चौंक उठा। उसे एक कार अपनी ओर आती दिखाई दी। कुछ सोचकर भगत ने अपनी कार को वहीं पर रोक दिया।

कुछ क्षण बाद ही एक कार उसके निकट आकर रुक गई। उसमें से विनय, बाण्ड व सुषमा नीचे उतरे।

'अबे गिरहकट, तुम यहां क्या कर रहे हो?' विनय ने पूछा।

'तुम लोग यहां क्या करने आये हो?'

'हम पुराने खण्डहर की तरफ जा रहे हैं। सुषमा ने बताया।

'मैं पुराने खण्डहर से आ रहा हूं।'

''क्यों?'

भगत ने उन्हें लिलि व अलका तथा ऐलिजा की सारी कहानी संक्षेप में सुना दी।

"अब तुम वापस जा रहे हो या हमारे साथ ही खण्डहर पर चल रहे हो' विनय ने पूछा।

"जैसा तुम कहो।'

"हमारे साथ ही चलो, तुम्हें वहां के रास्ते की जानकारी होगी।'

भगत तैयार हो गया।

कुछ देर बाद ही दोनों कारें आगे पीछे दौड़ रही थीं।

नौ···

खण्डहर के निचले हिस्से में ही दोनों कारें रुक गईं। सभी बाहर निकल आये।

भगत के हां करने पर सब चढ़ाई चढ़ने लगे।

कुछ देर बाद ही वे सब खण्डहर के निकट पहुंच गये। वहां एक व्यक्ति स्टेनगन लिये खड़ा पहरा दे रहा था। सब सब पास की झाड़ियों में छिप गये।

बाण्ड खुद को छिपाता हुआ उसकी तरफ बढ़ने लगा। अभी वह निकट पहुंचा ही था कि तभी एक व्यक्ति बाहर आ गया। बाण्ड दीवार से चिपक गया और उन दोनों की बातें सुनने लगा।

'मैडम तो चली गई होंगी?' आने वाले ने पूछा।

"हां। तुमने कैदियों को खाना दे दिया?'

'दिया तो था, परन्तु उन्होंने खाया ही नहीं।'

'शायद, भूख हड़ताल करना चाहते हैं।' वह हंसकर बोला।

दूसरा व्यक्ति भी हंसता हुआ अन्दर चला गया।

बाण्ड दबे पांव उसकी तरफ बढ़ने लगा। बिल्कुल उसके पीछे पहुंच कर बाण्ड ने उसकी गर्दन पर पूरी शक्ति से एक कैरेट चाप लगाई और वह बिना चीखे लहरा कर वहीं ढेर हो गया।

तब बाण्ड ने हाथ हिला कर सबको लाईन क्लीयर होने का

संकेत दिया। वह तीनों भी वहां आ गये।

"विनय।' बाण्ड बोला—'मैंने इन दोनों की बातों को सुन लिया है। जिससे मालूम होता है कि मैडम अब यहां नहीं हैं। वह कैदियों के बारे में भी बातें कर रहे थे कैदी खण्डहर में ही मौजूद हैं।'

"तो ठीक है हम कैदियों से ही काम चला लेंगे।'

वह सब अन्दर की तरफ चल पड़े। भगत उन्हें उसी जगह ले गया जहां वह ऐन्जिला से मिला था। लेकिन उस कमरे में कोई भी नहीं था।

अभी वह बाहर निकलने का ख्याल कर ही रहे थे कि उन्हें एक व्यक्ति हाथ में पैट्रोमैक्स लिये नजर आया। जो कि एक गुप्त तैखाने का द्वार खोल रहा था।

विनय फुर्ति के साथ आगे बढ़ा और उसकी गर्दन पर एक भरपूर हाथ जड़ दिया। वह बिना चीखे लहराकर वहीं ढेर हो गया। विनय ने उसके हाथ से पैट्रोमैक्स ले लिया।

"आओ।' वह सीढ़ियां उतरता हुआ बोला।

सब उसके पीछे ही चलने लगे। पुराने जमाने की लगभग तीस सीढ़ियां उतरकर सब नीचे तैखाने में आ गये।

सामने ही सीखचों का बना एक कमरा दिखाई दिया। जिसके अन्दर दो मनुष्य आकृतियां बैठी दिखाई दे रही थीं।

शायद हम कैदियों तक पहुंच गये हैं।' बाण्ड बोला।

'हां, लेकिन कैदी हैं कौन, हमें अभी देखना है।'

वे सीखचों के निकट पहुंच गये। पैट्रोमैक्स की रोशनी जब उन पर पड़ी तो विनय व भगत बुरी तरह चौंक उठे।

उनमें एक बुढ़ा व्यक्ति था, जिसका चेहरा काफी भयंकर था। दूसरी एक सुन्दर युवती थी, जिसके बाल उलझे हुये थे।

उन्हें देखकर दोनों के मुख आश्चर्य से खुले रह गये।

● ●

विनय व भगत बड़े ध्यान से उन्हें देख रहे थे। युवती की शक्ल हू ब हू अलका से मिलती थी और बूढ़ा व्यक्ति ऐसा लगता था जैसे कालिया सामने खड़ा हो।

'क्या तुम्हारी कोई जुड़वा बहन अलका भी है?' भगत ने पूछा।

'नहीं! मैं स्वयं अलका हूं। यह मेरा नौकर कालिया है।'

'लेकिन यह कैसे हो सकता है? कोठी में अलका व कालिया मौजूद हैं।'

'वह फ्राड है।' युवती चीखी——'हमारी कोठी में वह कोई भयंकर षड़यंत्र रच रहे हैं। अगर वह हरामजादी मुझे मिल जाये तो मैं उसकी आंखें निकाल लूं।'

'वह कौन?'

'ऐलिजा।'

'तुम उसे जानती हो?' भगत ने पूछा।

'नहीं, लेकिन वह शायद मुझे जानती है।'

'क्या तुम लन्दन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में उसके साथ पढ़ी हो?'

'वहां मेरी ऐलिजा नाम की किसी लड़की से मुलाकात नहीं हुई।'

'लेकिन तुम व तुम्हारा नौकर यहां कैसे पहुंच गये।'

'शायद वह किसी कारणवश हमारी कोठी में रहना चाहती थी। एक दिन की बात है, मैं अपनी सहेली की शादी में जा रही थी, कार मेरे पास थी। रास्ते में एक एंग्लो इण्डियन लड़की ने मेरी कार रुकवाई और मुझसे लिफ्ट मांगी। मैंने उसे लिफ्ट दे दी। अभी मैं थोड़ी दूर तक ही गई थी कि मुझे ऐसा लगा जैसे मुझपर नशा छाता जा रहा हो। मेरी आंखें बन्द हो गई, मैं बेहोश हो गई थी। जब मेरी आंखें खुली तो मैंने स्वयं को इन सीखचों के पीछे पाया। कालिया यहां पहले से ही मौजूद था।'

उसके चुप होते ही विनय ने पूछा——'कालिया तुम यहां कैसे पहुंचे?'

'मैं सब्जी लेने बाजार गया था। जब मैं वापस लौट रहा था तो कोठी से कुछ दूरी पर ही किसी ने मुझ पर हमला कर दिया। सर पर भरपूर चोट पड़ी थी, मैं वहीं ढेर हो गया। जब आंख खुली तो मैंने अपने को इन सीखचों के पीछे पाया।'

'थोड़ी देर बाद ही ऐलिजा एक व्यक्ति के साथ आई। उस व्यक्ति ने बेबी को कन्धे पर लादा हुआ था। उसे अन्दर फेंककर वह चले गये।' कालिया ने बताया।

'इसका मतलब है, ऐलिजा ने पहले से ही यह योजना बना रखी थी। उसने उसी योजनानुसार काम किया है।' विनय बोला।

'पर उसने इतना बड़ा षड़यंत्र रचा क्यों?' बाण्ड ने आश्चर्य से कहा।

'यह तो उससे मिलने के बाद ही मालूम होगा।'

'लेकिन मेरा ख्याल है, वह मेरे डैडी की जायदाद हड़पना चाहती है।' युवती ने कहा।

'इसका पता तो लगा लिया जायेगा।' सुषमा बोली——'पहले इन्हें बाहर तो निकालो।'

बाण्ड ने देखा सलाखों में ताला लगा हुआ है।

'तुम्हें मालूम है, यहां कितने व्यक्ति हैं?'

'केवल दो।'

'तब ठीक है, उन्हें ठिकाने लगा दिया गया है। [illegible] कोई खतरा नहीं होगा।'

बाण्ड ने कहा और सबको पीछे हटाकर ताले पर फायर कर दिया। ताला टूटते ही सलाखों का दरवाजा खोल दिया गया। दोनों बाहर निकल आये।

अलका ने कहा—'आप लोगों ने तो मुझसे सारी जानकारी

ले ली, पर अपना परिचय अभी तक नहीं दिया ।

'मैं परिचय देता हूं ।' भगत बोला—'मिस्टर विनय, मिस्टर जेम्स बाण्ड, और ये हैं मिस भाभी···यानि सुषमा··· । मुझको लोग भगत यानि गिरहकट भगत कह लेते हैं ।'

शायद तुम्हें मालूम होगा, तुम्हारे पिता राय बहादुर अब नहीं रहे ?' विनय ने कहा ।

'मैं जानती हूं, उन्हें कत्ल कर दिया गया है ।'

इसके बाद उनमें कोई बात नहीं हुई और उनका काफिला आगे बढ़ गया । दोनों कारें आगे-पीछे दौड़ने लगी ।

विनय ने अपनी कार एक प्राईवेट टेलीफोन बूथ के आगे रोक दी ।

'क्या हुआ ?' बाण्ड ने पूछा ।

'कोठी पर जाने से पहले मैं इंस्पेक्टर मधुप को बुला लेना चाहता हूं । वहां उसकी आवश्यकता पड़ सकती है ।'

'ठीक है ।'

और वह बूथ में प्रविष्ट हो गया । रिसीवर उठाकर उसने नम्बर डायल किये । दूसरी तरफ से आवाज आते ही विनय ने दस-दस के तीन सिक्के छिद्र में डाल दिये ।

'हैल्लो···हैल्लो । कौन बोल रहा है ?'

'इंस्पेक्टर मधुप ।'

'प्यारे गोबर गणेश, मैं विनय बोल रहा हूं ।'

'इस समय क्या कोई खास काम है ?'

'राय बहादुर की कोठी में दो कत्ल हुए थे, तुम्हें याद होगा ।'

'हां ।'

'और रायबहादुर का कत्ल भी वहीं हुआ था ।'

'हां ।'

'अगर इन लोगों के कातिल को गिरफ्तार करना चाहते हो तो राय बहादुर की कोठी पर पहुंच जाओ ।'

'क्या तुम्हें मालूम हो गया है, कातिल कौन है ?'

'तुम्हें भी मालूम हो जायेगा ।'

'लेकिन तुम बोल कहां से रहे हो ?'

'प्राईवेट बूथ से, मेरे साथ जेम्स बाण्ड, सुषमा व भगत के दो कैदी भी हैं ।'

'कैदी ?'

'सारे रहस्य कोठी पर आकर मालूम हो जायेंगे । तुम पूरी तैयारी के साथ आओगे, टेप रिकार्ड साथ होना चाहिये । जब तक मैं तुम्हें इशारा न करूं तुम अन्दर नहीं आओगे, समझ गये ना ।'

'हां ।'

इसके बाद विनय ने रिसिवर क्रेडिल पर रख दिया और काफिला फिर चल पड़ा । इस बार दोनों कारें कोठी में जाकर रुकी ।

सभी बाहर निकल आये । विनय ने कालिया को खिड़की से बाहर झांकते हुये देखा ।

विनय फुसफुसाया—'अलका, तुम कालिया के साथ यहीं दीवार के पास खड़ी रहो, जब मैं बुलाऊं तब आना ।'

उसने हामी में सिर हिला दिया । वह लोग अलका के कमरे की तरफ बढ़ गये, जिसमें इस समय भी रोशनी हो रही थी ।

विनय काल बैल बजाने ही वाला था कि कालिया वहां आ गया ।

'आप लोगों को किससे मिलना है ?' उसने पूछा ।

विनय ने उसके चेहरे को गौर से देखा, फिर बोला—

'अलका से ।'

'लेकिन देवी तो सो रही हैं, सुबह मिल लीजियेगा ।'

'नहीं हमें इसी समय मिलना है, आवश्यक काम है ।' कहने के साथ ही विनय ने कालबैल का बटन दबा दिया ।

'उसी क्षण दरवाजा खुला और अलका दिखाई दी, जिसमें [illegible] हुआ था ।

'आप लोग इस समय... !'

'हाँ।' विनय बोला---'तुमसे मिलने आये हैं। क्या अन्दर नहीं आने दोगी ?'

'आ जाओ।' और वे सब अन्दर प्रविष्ट हो गये।

'कालिया तुम भी आ जाओ, शायद किसी वस्तु की आवश्यकता पड़े।' विनय ने कहा और कालिया को अन्दर खींच लिया।

अन्दर राजेश मौजूद था, जो सोफे पर बैठा सिगरेट के हल्के हल्के कश लगा रहा था। उसने मुस्कराकर सबका स्वागत किया।

'आप लोग क्या पियेंगे ?' अलका ने पूछा।

'कुछ नहीं।'

'तो आप लोगों के आने कारण जान सकती हूं।'

'क्यों नहीं ! हमें ऐलिजा का पता चाहिये, तुम उसके बारे में जानती हो।'

अलका के चेहरे का रंग एक क्षण के लिये उड़ गया। उसने भगत की तरफ देखा---जिसका चेहरा एकदम से सपाट था। उसने इस तरह मुख मोड़ लिया---जैसे अलका को पहचाना तक न हो।

'आप लोगों को गलत फहमी हुई है, मैं ऐलिजा नाम की किसी लड़की को नहीं जानती।' उसने मुस्कराने की चेष्टा करते हुये कहा।

'तुम कौन हो ?' विनय ने पूछा।

'अलका ! राय बहादुर की बेटी।

'लेकिन एक और लड़की अलका होने का दावा कर रही है।'

'कौन ?'

'अलका ! अन्दर चली आओ।' विनय ने जोर से पुकारते हुये कहा।

अलका कालिया के साथ अन्दर आ गई। उन्हें देखते ही दोनों के जैसे होश उड़ गये।

लेकिन उसने खुद को सम्भाला और चीखकर बोली---'यह अलका नहीं, कोई फ्राड है, मेरे डैडी की जायदाद पर कब्जा करना चाहती है।'

'कमीनी, कुतिया, फ्राड तू है। तू इस कोठी में कोई भयंकर षडयंत्र रच रही है।'

'अभी मालूम हो जाता है।' उसने कहा---फिर राजेश की ओर मुखातिब होकर बोली---'राजेश ! तुम तो मुझे अच्छी तरह जानते हो, हम जल्द ही शादी करने वाले हैं, तुम बताओ असली अलका कौन है।'

'यही असली अलका है, आप लोगों के साथ जो अलका आई है वह फ्राड है।'

'राजेश ! भगत बोला---'तुम्हारी आंखों पर वासना का पर्दा पड़ चुका है। मूर्ख इन्सान, आंखें खोल और फिर पहचान, असली अलका कौन है।'

राजेश बारी-बारी से दोनों को देखने लगा, लेकिन उसकी अक्ल में कुछ नहीं आ रहा था।

'राजेश। मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो।' भगत ने कहा।

"पूछिये।'

"जिस अलका से तुमने प्रथम बार प्रेम प्रदर्शित किया था क्या वह वासना की पुतली थी ? उसने कभी तुम्हें अपना जिस्म सौंपा था ?'

इस बार उसने उस अलका की तरफ देखा जिसके बाल उलझे हुये थे। चेहरे पर मासूमियत व आंखों में उसके लिये ढेर सारा प्यार उमड़ रहा था।

"राजेश।' वह भर्राए स्वर में बोली---'अगर तुम असली अलका को नहीं पहचान सकते तो मैं समझूंगी तुम्हारा प्यार, प्यार नहीं, सिर्फ वासना बनकर रह गया है।'

'जिस अलका से मैं प्यार करता था---उसने मुझे अपना जिस्म कभी छूने तक नहीं दिया। जब भी मैं कोई ऐसी हरकत करता था तो वह कहती थी---शादी के बाद। क्योंकि अब तुम्हारा

मुझ पर पूर्ण अधिकार होगा।

'उस अलका ने मुझे रातों को अपनी कोठी में कभी नहीं बुलाया था। जब इस अलका ने खुद को मुझे सौंपा तो मुझे शक हुआ था। लेकिन वासना की रौ में बहकर मैं उस शक को भूल गया। अब मुझे अपनी गलती अनुभव हो रही है। आपके साथ जो लड़की आई है, वही असली अलका है।'

'राजेश।' अलका ने अपनी बाँहें फैला दीं।

राजेश ने भी अपनी बांहें फैला दीं। दोनों प्रेमी एक दूसरे की बाँहों में समा गये।

'अलका। मैं तुम्हारा गुनाहगार हूं। क्या तुम मुझे माफ नहीं करोगी?'

इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है राजेश। जो तुम्हें वासना की रौ में बहाकर ले गई थी, वह अलका के रूप में ही थी। इस लिये तुम डगमगा गये, लेकिन जिसने तुमको मुझसे छीनने की कोशिश की, मैं उसे छोड़ूंगी नहीं।'

वह राजेश से अलग हुई और सामने खड़ी दूसरी अलका पर झपट पड़ी। उसे नीचे गिरा कर खुद उसकी छाती पर चढ़ गई। और उसके चेहरे पर थप्पड़ रसीद करती हुई बोली—

'कमीनी कुतियां, तुमने मेरे डैडी को कत्ल किया है। तमने हमें खण्डरों में कैद किया। मेरे प्यार को छीनने की कोशिश की। मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।'

वह उसके बाल भी नोचने लगी। एक ही शक्ल की दो युवतियां इस समय आपस में लड़ रही थीं।

नीचे वाली अलका ने उसे एकाएक जोर से धक्का दिया। वह दूर जा गिरी।

फिर वह फुर्ति से उठी और चोली में से पिस्टल निकाल कर गुर्राई—'कोई भी अपनी जगह से नहीं हिलेगा, अन्यथा गोली मार दुंगी।

कालियां ने भी अपना रिवाल्वर निकाल लिया था। सब वैसे खड़े थे, वैसे ही खड़े रहे।

'तुम्हारी इस हरकत से प्रमाणित होता है, तुम असली अलका नहीं हो।' विनय बोला।

'अब भेद खुल ही चुका है तो मैं खुद को छिपाऊंगी नहीं। मैं अलका नहीं बल्कि ऐलिजा हूं।'

'हीरों की स्मगलर यानि डायमंड क्वीन।'

''हां।'

'तब तो जेल के दरवाजे तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। तुम जेल जाना पसन्द करोगी?'

'मुझे किसी भी देश की पुलिस जेल में बन्द नहीं कर सकी।'

'परन्तु तुम जानती हो, हम भारतीय लोग मेहमान पसन्द होते हैं। जब तक तुम्हारा स्वागत नहीं करेंगे, हमें चैन नहीं मिलेगा। जेल तो तुम्हें जाना ही होगा। क्योंकि तुम खुद कबूल कर चुकी हो कि तुम अलका नहीं बल्कि ऐलिजा हो।

'इससे कोई असर नहीं पड़ता, तुम अदालत में मेरे विरुद्ध प्रमाण नहीं जुटा सकते। मैं तुम सब को गोली मार कर यहां से निकल जाऊंगी।'

''हां, तुम ऐसा कर सकती हो, परन्तु फिर तुम्हारा अलका बनना बेकार चला जायेगा।'

'अलका मैं दो कारणों से बनी थी। एक तो सुरक्षा चाहिये थी और मैं इस कोठी में सुरक्षित रह कर काम कर सकती थी। अतः मैंने अलका का व मेरे साथी एलबर्ट ने कालियां का रूप धारण किया। हम लोग हीरों की स्मगलिंग के लिये भारत आये हैं। एक करोड़ डालर के हीरे पिछले दिनों ही यहां आये हैं, परन्तु समझ में नहीं आया कि इन कैदियों के बारे में तुम्हें कैसे मालूम हुआ?'

बाण्ड ने बताया—'जिस समय तुम्हारे आदमी ने कामन को छुरा मारा, उस समय मैं उसकी कैद में था। उसको तो तुमने तबाह कर दिया था, परन्तु वह तुम्हें भी नहीं छोड़ना चाहता

था । मरने से पहले वह सिर्फ इन कैदियों के बारे में ही बता सका ।'

'इसका मतलब हुआ--अगर कामन से तुम लोगों को मालूम न होता तो तुम लोग मेरा रहस्य कभी नहीं जान सकते थे । हम लोग यहां पूर्ण रुप से सुरक्षित थे । शायद राय बहादुर की करोड़ों की जायदाद पर भी मैं कब्जा कर लेती । परन्तु अब मुझे जायदाद का लालच छोड़ना होगा । तुम लोगों को समाप्त करने के बाद मैं भारत छोड़ दूंगी । शायद तुम लोग मेरा असली चेहरा देखना चाहोगे ।'

'क्यों नहीं ।' विनय झट से बोला--'अगर सुन्दर हुआ तो, हो सकता है, मैं इश्क ही शुरू कर दूं ।'

ऐलिजा हंस पड़ी, फिर उसने कान के पास उंगलियां गड़ा--कर झिल्ली खींच दी । अब उनके सामने ऐलिजा खड़ी थी । जो काफी सुन्दर थी ।

कालिया ने भी अपने चेहरे से झिल्ली उदार दी । नीचे से भंयकर सूरत वाले का चेहरा निकल आया । जिसे तलाश करने के लिये विनय ने जमीन आसमान एक कर दिया था ।

'जितनी सुन्दर तुम हो, उतना ही बदसूरत तुम्हारा साथी है । साथ कैसे निभता होगा ?' विनय ने व्यंग कसा ।

'वासना की तृप्ति के लिये सूरत नहीं ताकत देखी जाती है । एलबर्ट किसी भी औरत की वासना शान्त करने के लिये पूर्ण है । इसके अलावा, जब तक रात को कोई मर्द मेरा हमबिस्तर न बने, मुझे नींद नहीं आती । इसीलिये मैंने राजेश से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किये थे । भगत से दोस्ती बढ़ाई थी । मोहन को अपने हुस्न के जाल में फंसाया था ।

'एक बात और पूछना चाहता हूं ।' विनय बोला ।

'पूछो ।'

"राय बहादुर का कत्ल कैसे हुआ ?'

'इनका कत्ल मैंने स्वयं किया था । क्योंकि मुझे भय था--

न ले । यूं तो हमने कहीं साथ रहते हुये वह हमें पहचान कालिया व अलका की हर बात जानने के बाद ही इस कोठी में कदम रखा था । राय बहादुर का रूप इसलिये धारण नहीं किया जा सका कि उनके व्यापार के सिलसिले में हमें बिल्कुल जानकारी नहीं थी । किसी समय भी भेद खुल सकता था ।'

कोठी में रहने के लिये हमें राय बहादुर को रास्ते से हटाना आवश्यक था । मैं उनका कत्ल इस प्रकार करना चाहती थी कि कातिल उसी समय गिरफ्तार हो जाये, और पुलिस को छान-बीन करने की आवश्यकता ही न पड़े ।

जब मोहन अलका के रूप में मुझको देखने आया तो उसकी जेब से उसका रिवाल्वर गिर पड़ा । मेरे मस्तिष्क में एक योजना पनप उठी । योजनानुसार मैंने उसे उस रात वहीं रुक जाने का निमन्त्रण दिया । क्योंकि वह मुझे कुछ ऐय्यास किस्म का व्यक्ति नजर आया था । ऐसे आदमी को फंसाना कुछ कठिन नहीं था । उसे मैंने अपने रूप के जाल में फंसा लिया ।

उस रात वह मेरा हमबिस्तर बना । जब वह थककर सो गया तो मैंने उसे क्लोरोफार्म सुंघाकर बेहोश कर दिया । फिर सूट पहनने के बाद हैट व दस्ताने पहने, सारी पोशाक काली रंग की थी, कोई भी मुझे देख लेता तो पुरुष ही समझता ।

मैंने मोहन के कपड़ों में से रिवाल्वर निकाला और बाहर आ गई । आसमान पर बादल छाये हुये थे । बिजली चमक रही थी बादल गरज रहे थे । मैं राय बहादुर के कमरे की तरफ बढ़ी और खिड़की से झांककर देखा--वह जाग रहे थे । शायद उन्होंने मुझे देख लिया था । इसलिये जोर से चिल्ला उठे-'कौन है ?'

मैं घबराकर कम्पाउन्ड की तरफ भागी ।' वह दरवाजा खोलकर बाहर की तरफ भागे । रिवाल्वर उनके हाथ में था । झाड़ियों में छिपे हुये शायद उन्होंने मुझे देख लिया था ।

मेरी तरफ बढ़ते हुये वह फिर गुर्राये—'रुक जाओ, वरना गोली मार दूंगा ।'

'मैंने उसी समय झाड़ियों में से अपना हाथ बाहर निकाला और उन पर फायर कर दिया ।'

गोली उसके सिर पर लगी, वह वहीं गिरकर ढेर हो गये । उसी समय जोर से बिजली गरजी और पानी बरसने लगा ।

मैं खुद को पूरी तरह सुरक्षित रखना चाहती थी, इसलिये रिवाल्वर जेब में रखकर चारदीवारी की तरफ भागी ।

जिससे कोई मुझे देख भी रहा हो तो यही समझे कि किसी पुरुष ने राय बहादुर की हत्या कर दी । और भाग गया ।

दीवार फाँदकर मैं बाहर आ गई । फिर दूसरी तरफ से अन्दर प्रविष्ट हो गई । रिवाल्वर मैंने उसी तरह मोहन की जेब में रख दिया और कपड़ों को उतारकर सन्दूक में रखने के बाद उसी अवस्था में मोहन की बगल में लेट गई, जिस अवस्था में पहले थी ।

मेरी योजना कामयाब हुई और मोहन को गिरफ्तार कर लिया गया ।

उसके खामोश होते ही विनय बोला——'सचमुच तुम बहुत खतरनाक हो ।'

'हां । पर अब तुम सब लोग मरने के लिये तैयार हो जाओ ।'

'ठहरो ! अभी नाटक का अन्तिम दृष्य बाकी है । प्यारे गोबर गणेश जरा अन्दर तशरीफ ले आओ ।' विनय ने ऊंची आवाज में कहा ।

मधुप जो सशस्त्र सिपाहियों के साथ बाहर खड़ा था, अन्दर आ गया । उसने अपना रिवाल्वर उन दोनों की तरफ तान दिया ।

ऐलिजा व एलबर्ट हतप्रभ से उन्हें देख रहे थे ।

विनय व बाण्ड ने इसका फायदा उठाया और लपककर उन की रिवाल्वरें छीन लीं ।

'इंस्पेक्टर ! तुम्हारे अपराधी सामने मौजूद हैं, गिरफ्तार कर लो ।'

'कोई फायदा नहीं होगा, तुम लोग अदालत में हमारे विरुद्ध प्रमाण नहीं जुटा सकते ।'

'डार्लिंग !' विनय बड़े नाटकीय ढंग से बोला—'तुम्हारी एक-एक बात टेप कर ली गई है । गोबर गणेश, जरा इन्हें टेप तो सुना दो ।'

विनय ने टेप का स्वीच आन कर दिया । सारा टेप सुनने के बाद ऐलिजा व एलबर्ट का चेहरा पीला पड़ गया । मधुप ने उन्हें हथकड़ियां पहना दी ।

—•: (समाप्त) :•—

(यह सब काल्पनिक हैं ।)
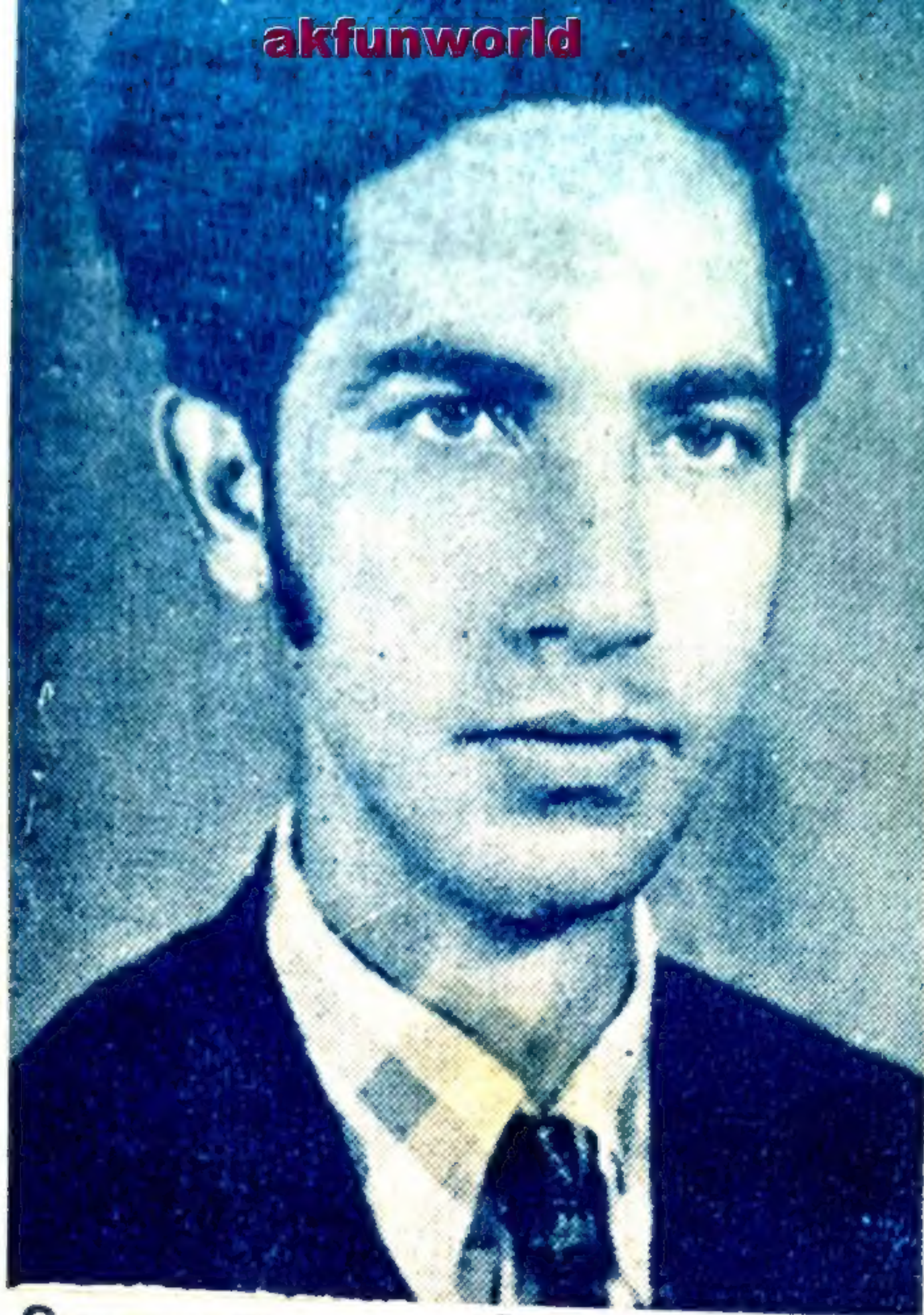
आपने विनय-भगत तथा जेम्सबांड सीरिज के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एस० सी० बेदी जिनके पाठक उपन्यासों का इन्तजार बेताबी से करते हैं। डायमण्ड क्वीन इनका नया उपन्यास है, उपन्यास पढ़ने के बाद अपनी राय लिखना मत भूलियेगा।

यंग लेडी पब्लिकेशन
पदम सदन ईश्वरपुरी मेरठ-२